www.thearyasamaj.org

।। ओ३म् ।।

वैदिक संसार

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या एम.पी. एच.आई. एन. २०१२/४५०६६, डाक पंजीयन - एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७

वर्ष - ६ | अंक-४ | मासिक-हिन्दी | फरवरी-२०१७ | इन्दौर(म.प्र.) | मूल्य-२५/- | कुल पृष्ठ-४८

साधना, स्वाध्याय, सेवा तथा वैदिक विद्वान, वानप्रस्थियों, संन्यासियों के निर्माण एवं वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार का अंतरराष्ट्रीय आध्यात्मिक शोध संस्थान

वानप्रस्थ साधक आश्रम

योगादेव तु कैवल्यम्

विदेश में 26वीं वैदिक धर्म प्रचार यात्रा 21/1/2017

विश्व कल्याण धर्मार्थ न्यास के द्वारा संगच्छध्वं

मानव निर्माण के द्वारा विश्व शान्ति व बन्धुत्व हेतु कार्यरत्

हिन्दी, गुजराती व आंग्ल भाषा में करोड़ों रुपयों के वैदिक साहित्य का प्रकाशन व वितरण

आर्यवन, रोजड़, पत्रालय-सागपुर, ता.-तलोद, जिला-साबरकांठा, गुजरात

Tel. 02770-287417, 291555, Email:vaanaprastharojad@gmail.com, web: www.vaanaprastharojad.org

दिनांक : 19 मार्च 2017 को प्रातःकाल से सायंकाल तक, वर्ष के 365 दिन अनवरत् चलने वाले देवयज्ञ का प्रथम वार्षिकोत्सव

दिनांक : 02 से 09 अप्रैल 2017 तक क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

इस अंक में

एक बार नहीं बार बार पढ़ें

वानप्रस्थ साधक आश्रम-एक परिचय

राष्ट्र निर्माण कैसे होगा हमारी महान् विभूतियां

चिकित्सकों का चिकित्सक

गायत्री मन्त्र मन की साधना

आओ वैतरणी नदी की

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

महामहिमों माननीयों की

भारतीय लोकतन्त्र में राजनीतिक दलों

www.thearyasamaj.org

पंजीयन क्रमांक- E/2732/साबरकांठा

स्थापना वर्ष - 1999

वानप्रस्थ साधक आश्रम-एक परिचय

संस्थापक तथा निर्देशक पूज्य स्वामी सत्यपति जी का जीवन

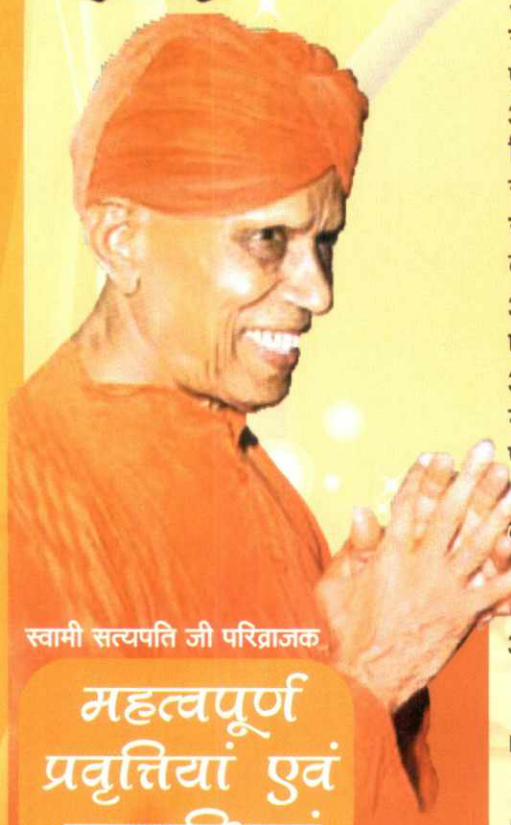

स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक

एक अद्भुत प्रेरणादायक विशुद्ध वैदिक जीवन का दृष्टान्त है। आप एक अत्यन्त निर्धन तथा अवैदिक परिवार में उत्पन्न हुए, २० वर्ष तक निरक्षर रहे, लेकिन पूर्व जन्म के प्रबल वैराग्य के संस्कारों के उदबुद्ध होने के कारण जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ आया। आपने तीव्र इच्छा, प्रबल पुरुषार्थ, घोर तपस्या के माध्यम से अपने जीवन को उच्चतम शिखर तक पहुंचा दिया और आज के अत्यन्त विकट अवैदिक समाज के समक्ष अद्भुत अनुकरणीय आदर्श के रूप में अपना जीवन निर्माण किया। पिछले ५० वर्षों से भी अधिक काल में आपने हजारों व्यक्तियों को सच्चे ईश्वर का स्वरूप, उसको प्राप्त करने की आर्ष विधि, पथ पर आने वाली बाधाओं का समाधान, साधनों का संग्रह आदि से सम्बन्धित आध्यात्मिक ज्ञान-विज्ञान प्रदान किया। आप वैदिक धर्म के रक्षक, महान् दार्शनिक, सत्याग्रही, ऋषिभक्त और वीतराग, आदर्श संन्यासी हैं।

आपके द्वारा दिए गए प्रवचनों, लिखी गयी पुस्तकों, शंका-समाधानों तथा वार्तालाप से निकला एक-एक वचन व्यक्तियों के जीवन में विद्यमान असत्य, आलस्य, प्रमाद, निराशा, अकर्मण्यता, स्वार्थ आदि द्वेषों को नष्ट करके बल, उत्साह, पराक्रम, पुरुषार्थ, आत्मविश्वास आदि उत्पन्न करके जीवन में नई प्रेरणा प्रदान करता है। आज से २५ वर्ष पूर्व सन् १९८३ में आपने त्यागी तपस्वी वैराग्यवान पठित युवा दार्शनिक विद्वानों के निर्माण हेतु दर्शन योग महाविद्यालय की स्थापना की। जिसके माध्यम से अब तक देश के १४ प्रान्तों के ५० से भी अधिक युवा पठित त्यागी वैराग्य के संस्कार वाले दार्शनिक विद्वानों का निर्माण किया जो देश-विदेश में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। आपने ऐसे दार्शनिक विद्वानों के निर्माण तथा उनको आर्थिक सहयोग करने हेतु विश्व कल्याण धर्मार्थ न्यास की स्थापना की। निवृत्त प्रौढ़ धार्मिक सज्जनों को साधना, स्वाध्याय और सेवा का अवसर प्रदान करने हेतु वानप्रस्थ साधक आश्रम की स्थापना की।

महत्वपूर्ण प्रवृत्तियां एवं उपलब्धियां

- आर्ष गुरुकुल
- वानप्रस्थ साधक, आश्रम
- वैदिक वाङ्मय प्रकाशन
- विश्व कल्याण धर्मार्थ न्यास
- योग प्रशिक्षण शिविर
- यज्ञ प्रशिक्षण शिविर
- किशोर चरित्र निर्माण शिविर
- कॉलेज के युवक/युवतियों हेतु शिविर
- याज्ञिक/आर्य परिवार स्नेह सम्मेलन
- शुद्ध वेद मन्त्रोच्चारण शिविर
- निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सालय
- अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र
- ब्रह्मचारियों को छात्रवृत्ति
- वैदिक विद्वानों का सत्कार
- देश व विदेश में वेद प्रचार
- प्राकृतिक आपदाओं में राहत कार्य
- गौशालाओं को सहयोग
- जिज्ञासुओं का शंका समाधान

वानप्रस्थ आश्रम का महत्व और लाभ

- वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण करने से ईश्वर/ऋषियों की आज्ञा का पालन होता है जो सभी गृहिस्थियों का कर्तव्य है।
- वानप्रस्थ आश्रम जीवन के तीसरे पड़ाव में सांसरिक राग-द्वेष-मोह से रहित शान्त, प्रसन्न, सन्तुष्ट, सुखी रहने का एकमात्र उपाय है।
- एक ही घर में रहने वाली तीन पीढ़ियों के परस्पर वैर-विरोध, झगड़ों का सरलता से स्थायी समाधान आश्रम व्यवस्था से ही सम्भव है।
- संस्कृत भाषा, साहित्य, दर्शन, उपनिषद्, वेदादि ग्रन्थों के अध्ययन एवं स्वाध्याय तथा अगले जीवन की तैयारी के सुअवसर के निर्माण हेतु उपयुक्त वातावरण की प्राप्ति होती है।
- आश्रम में रहने से विद्या, व्रत-संकल्प, सेवा, सत्संग, त्याग, तपस्या, ध्यान आदि द्वारा कुसंस्कारों के नाश व सुसंस्कारों के निर्माण हेतु उपयुक्त वातावरण की प्राप्ति होती है।
- आश्रम में रहकर चिन्तन-मनन, निदिध्यासन के माध्यम से विवेक-वैराग्य को प्राप्त करके आन्तरिक जीवन की उन्नति अतिशीघ्र सम्भव होती है।
- जीवन के अन्तिम उद्देश्य मोक्ष (ईश्वर साक्षात्कार)-समस्त दुःखों से छूटने का एक अमोघ साधन वानप्रस्थ आश्रम है।
- राष्ट्र में फैली हुई बेरोजगारी की समस्या का समाधान तथा नगरों की बढ़ती जा रही अत्यधिक जनसंख्या को रोकने/कम करने का विशेष उपाय वानप्रस्थ आश्रमों की स्थापना करना है।
- अनुभवी, योग्य, कुशल व्यक्तियों की समाज व राष्ट्र के हित में निःशुल्क सेवाओं की प्राप्ति होती है।
- नैतिकता-धर्म, संस्कृति, सभ्यता, आचार-विचार, सुनीति, सुपरम्पराओं का प्रचार-प्रसार तथा अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों आदि का निवारण तथा और भी अनेक पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान होता है।
- गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के प्रचार-प्रसार हेतु आवश्यक योग्य आचार्यों, अध्यापकों, प्रबन्धकों की सहज पूर्ति होती है।

www.thearyasamaj.org

■ **उद्देश्य :** वैदिक धर्म, शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता, आचार-विचार, वर्णाश्रम व्यवस्था तथा आदर्श परम्पराओं का प्रचार प्रसार करना।

■ **स्थानः** अहमदाबाद से बस मार्ग द्वारा मोडासा रोड पर (स्टेट हाइवे नं. ६८) लगभग ७० कि.मी. दूर रोजड़ गांव है। वहां से पुंसरी रोड पर १.५ कि.मी. दूर आर्यवन में आश्रम स्थित है।गोधरा तथा उदयपुर की ओर से सीधे मोड़ासा-धनसुरा होते हुए भी बस द्वारा आश्रम पहुंचा जा सकता है।

■ **दिनचर्याः** स्थायी और दीर्घकालिक साधकों के लिए सेवा, साधना तथा स्वाध्याय से युक्त एक सुव्यवस्थित, क्रमबद्ध दिनचर्या का पालन करना आवश्यक है।

■ **क्रियात्मक योग प्रशिक्षणः** ईश्वर की प्राप्ति के लिए, उच्चस्तरीय विवेक वैराग्य को प्राप्त करने हेतु योग सम्बन्धी आवश्यक सूक्ष्म विषयों का परिज्ञान कराया जाता है। प्रत्येक साधक के लिए प्रातः सायं एक-एक घंटा उपासना और दैनिक अग्निहोत्र करना अनिवार्य है।

■ **अध्ययनः** साधकों को उनकी योग्यता के अनुकूल संस्कृत भाषा, व्याकरण, दर्शन, उपनिषद्, वेद, स्मृति आदि ग्रन्थों का दैनिक अध्यापन कराया जाता है और उनको विद्वान् बनाकर वानप्रस्थ, संन्यास की योग्यता प्राप्त करने का अवसर उपलब्ध कराया है।

■ **सेवा कार्यः** दीक्षित वानप्रस्थी को अपनी योग्यता के अनुकूल आश्रम के कार्यालय, अतिथि सेवा, प्रबन्ध, भोजनशाला, बागवानी (गार्डनिंग), धर्मप्रचार, सोलह संस्कार, भवन निर्माण, पत्राचार, लेखा व्यवहार, रोगी सेवा आदि कार्यों में प्रायः २-३ घंटे का समय लगाना अपेक्षित है।

आश्रम निर्माण कार्य में प्रगति

अब तक (जून-२०११) आश्रम में ४० साधक कुटीरें, भूगर्भ ध्यान कक्ष (११०x४० फीट), विशाल भवन १५०x६० फीट, ५१,००० लीटर क्षमता की ओवर हेड टैंक, २० अतिथि प्रकोष्ठ, पाकशाला तथा भोजनखण्ड का निर्माण हो चुका है। अब तक निर्माण कार्यों में तथा अन्य व्यवस्थाओं में पांच करोड़ रुपए से अधिक व्यय हो चुका है।

भावी निर्माण कार्य-नौ यज्ञ कुण्डों वाली यज्ञशाला, भोजनशाला, अतिथिशाला, वाचनालय, चिकित्सालय, अनुसंधान भवन, भण्डार आदि का निर्माण निकट भविष्य में प्रस्तावित है। इन निर्माण कार्यों के लिए अनुमानतः पांच करोड़ रुपये का व्यय होने की संभावना है।

संन्यास-दीक्षा व वानप्रस्थ-दीक्षा

अनेक योग्य महानुभावों ने पूज्य स्वामी सत्यपति जी से संन्यास की दीक्षा ली जो कि देश-विदेश में विभिन्न प्रकार से वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। इसी प्रकार साधक आश्रम में साधना, स्वाध्याय एवं सेवा को लक्ष्य बनाकर देश-विदेश से आए हुए अनेक श्रद्धालु साधक महानुभाव पूज्य स्वामी जी से वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर है।

प्राकृतिक आपदाओं में सहायता कार्य

सन २००१ में भुज (कच्छ) में जो महाविनाशक भूकम्प आया था उस समय आश्रम द्वारा २१ दिन तक सहायता कैम्प चलाकर पीड़ित व्यक्तियों को अनाज, आटा, अन्य खाद्य पदार्थ, वस्त्र, कम्बल, पात्र,टेन्ट तथा नकद आदि उपयोगी वस्तुओं का वितरण किया गया। २१ दिन में लगभग २१ ट्रक

यज्ञ करने की इच्छा रखने वाले किन्तु न कर सकने वालों के लिए

अभूतपूर्व योजना

जिन धार्मिक सज्जनों की अग्निहोत्र (यज्ञ-होम) के प्रति श्रद्धा है किन्तु समयाभाव, स्थान, साधन की कमी या अन्य प्रकार की अनुकूलता के न होने के कारण चाहते हुए भी अपने घर में यज्ञ कर नहीं पाते हैं उनके लिए वानप्रस्थ साधक आश्रम के अग्निहोत्र केन्द्र में एक नई योजना बनाई गई है।

यज्ञ प्रेमी सज्जन प्रतिदिन अपने घर में यज्ञ न कर पाने से दैनिक यज्ञ की व्यय राशि वानप्रस्थ साधक आश्रम में दान करके तुल्य पुण्य अर्जन कर सकते हैं। इस अनुदान की राशि से प्रतिदिन प्रातःकाल से सायंकाल पर्यन्त अखण्ड (लगातार) यज्ञ होता रहेगा। सहयोग की राशि दो प्रकार से निर्धारित की गई है।

१. एक व्यक्ति द्वारा दोनों समय यज्ञ करने के लिए ५० ग्राम घी, १०० ग्राम सामग्री और १ किलो समीधा का व्यय अनुमानतः ५० रु. होता है, एक मास का १५०० रु. होता है और वर्ष भर का १८००० रु. होता है।

२. एक व्यक्ति का एक समय यज्ञ करने के लिए ३० ग्राम घी, ५० ग्राम सामग्री, ५०० ग्राम समीधा का व्यय अनुमानतः ३० रु. होता है, मास का ९०० रु. होता है और वर्षभर का १०,८०० रु. होता है।

जितने अधिक सहयोगी सदस्य होंगे उसके अनुसार ही हम अधिक मात्रा में घी, सामग्री और समीधा का उपयोग करेंगे। यज्ञ केन्द्र में सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक लगातार पुरोहितों/पण्डितों/ब्रह्मचारियों/वानप्रस्थियों के द्वारा वेदमन्त्रों का उच्चारण करते हुए गौघृत तथा सामग्री की आहुतियां दी जाती रहेंगी। प्रतिदिन अनुमानतः १२ से १५ किलो

www.thearyasamaj.org

घी, २०-२५ किलो सामग्री और ४०-५० किलो समीधाएं लगेगी।

यह योजना एक अभूतपूर्व है जिसके माध्यम से और भी अनेक प्रयोजनों को पूरा किया जा सकेगा, जैसे कि किसी का जन्म दिवस हो, विवाह की तिथि हो अथवा अन्य कोई भी शुभ प्रसंग हो तो दिन में कभी भी सहयोगी महानुभाव स्वयं उपस्थित होकर अपनी आहुति भी दे सकेंगे।

विश्व में प्रथम बार अभूतपूर्व अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र

- एक ही दिन में मात्र दो-तीन घण्टे में जिज्ञासु महानुभावों को यज्ञ की सम्पूर्ण प्रक्रिया का परिज्ञान कराकर उन्हें स्वतः अपने घर में यज्ञ करने में समर्थ बनाया जाएगा।
- इस केन्द्र में अनेक धातुओं के अनेक आकार-प्रकार के यज्ञ कुण्डों, भिन्न ऋतुओं में प्रयुक्त होने वाली अनेक प्रकार की समीधाओं तथा हवन सामग्री में प्रयुक्त होने वाली सैकड़ों जड़ी-बूटियों, औषधियों, वनस्पतियों, रसायनों आदि वस्तुओं की प्रदर्शनी लगाई गई है।
- अग्निहोत्र प्रक्रिया से सम्बन्धित आधे घण्टे का एक चलचित्र (डोक्युमेन्ट्री फिल्म) दिखायी जाती है। जिसमें मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण के साथ-साथ आचमन, अंग स्पर्श, समीधा चयन, जल सिंचन, हव्य प्रदान आदि क्रियाओं का क्रियात्मक परिज्ञान कराया जाता है।
- पर्यावरण प्रदूषण को यज्ञ की वैज्ञानिक रसायनिक प्रक्रिया से कैसे दूर किया जाता है, साथ ही वातावरण को रोग जीवाणुओं से मुक्त करके उसे शुद्ध कैसे बनाया जावे, इसकी भी जानकारी दी जाती है। शेष भाग पृष्ठ ४५ पर

सामान वितरित किया गया। भूकम्पग्रस्त क्षेत्र की गोशालाों का विशेष सहयोग किया गया। सन् २००५ में गुजरात में अतिवृष्टि हुई उस समय भी अनेक स्थानों पर खाद्य सामग्री तथा चिकित्सा के माध्यम से पीड़ितों की सेवा की गई।

वैदिक वाङ्मय प्रकाशन

दिनांक ०९/०९/२०१० को गुजरात के तात्कालीन मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गान्धीनगर में अपने कार्यालय में वानप्रस्थ साधक आश्रम द्वारा प्रकाशित ऋग्वेद भाष्य प्रथम खण्ड (गुजराती भाषा में) का विमोचन किया। चारों वेदों का गुजराती भाषा में अनुवाद करवाकर के प्रकाशन किया जाएगा, यह जानकर उन्होंने बहुत प्रसन्नता अभिव्यक्त की। साथ ही प्रकाशन की उच्चस्तरीय श्रेष्ठता देखकर बहुत साधुवाद दिया।

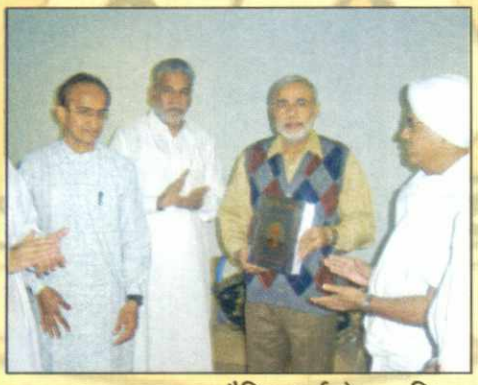

वानप्रस्थ आश्रम द्वारा वैदिक धर्म से सम्बन्धित ऋषिकृत ग्रन्थों तथा विशिष्ट विद्वानों द्वारा रचयित आध्यात्मिक और दार्शनिक छोटे-बड़े लगभग १२५ ग्रन्थों को अनेक भाषाओं में सुन्दर तथा आकर्षक रूप में प्रकाशन करके देश-विदेश में स्थित सहयोगियों, अन्य योग्य व्यक्तियों तथा संस्थाओं को भेंट स्वरूप प्रदान किया जाता रहा है। जिसमें लगभग दो करोड़ से अधिक का व्यय हो चुका है। विभिन्न स्थानों, समारोहों, उत्सवों आदि के अवसर पर साहित्य स्टॉल लगाकर भी इन ग्रन्थों का वितरण किया जाता है।

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

प्रतिवर्ष दो बार कार्तिक व चैत्र मास में (अक्टूबर/नवम्बर तथा मार्च/अप्रैल में) यहां योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन होता है, जिसमें देशभर से साधक-साधिकाएं उपस्थित होते हैं।अब तक

लगभग ५० से अधिक योग शिविरों का आयोजन किया जा चुका है। जिनमें हजारों साधकों ने भाग लेकर लाभ प्राप्त किया है। उनमें से कई व्यक्ति प्रेरणा पाकर अपने-अपने क्षेत्रों में शिविरों का आयोजन व प्रचार करने में संलग्न है।

शेष भाग पृष्ठ ४५ पर

www.thearyasamaj.org

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आरएनआई-एमपीएचआईएन २०१२/४५०६९
डाक पंजीयन-एमपी/आईसीडी/१४०५/२०१५-१७
वर्ष-६, अंक-४
अवधि-मासिक, भाषा-हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ फरवरी, २०१७
आर्ष तिथि-फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, अमावस्या
सृष्टि संवत्-१,९७,२९,४९, ११८
शक संवत्- १९३९
विक्रम संवत्- २०७३, दयानन्दाब्द-१९३

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इन्दौर- ०९४२५०६९४९१

सम्पादक
गजेश शास्त्री, इंदौर (म.प्र.)

आवरण एवं शब्द संयोजन
लक्ष्य ग्राफिक्स - ९३०१४३३२११

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

एक प्रति	२५/-
वार्षिक सहयोग	२५०/-
त्रैवार्षिक सहयोग	६००/-
आजीवन सहयोग (१५ वर्ष)	२१००/-

अन्य सहयोग-स्वैच्छानुसार

बैंक खाता धारक - वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इन्दौर
करंट खाता क्रमांक- ३२८५९५९२४७९
आईएफएस कोड-एसबीआईएन-०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज-वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	प्रस्तुति	पृष्ठ.क्र.
वेद मन्त्र-भावार्थ एवं पत्रिका उद्देश्य	वैदिक संसार	०६
महत्वपूर्ण पर्व, दिवस एवं जयन्ति-पुण्यतिथि	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०६
राष्ट्र निर्माण कैसे होगा	सम्पादकीय	०७
हमारी महान् विभूतियां- ...ऋषिका-इन्द्राग्नि	शिवनारायण उपाध्याय	०९
- देव दयानन्द	पुरुषोत्तमदास गोठवाल	१०
- भगतसिंह-सुखदेव...	डोंगरवाल वर्मा	११
धन्य शहीदों के शहजादे-भगतसिंह दीवाने	दयाशंकर गोयल	११
सबसे प्राचीन धर्म पुस्तक वेद	नरसिंह सोनी	१४
वेदों में प्रक्षेप (मिलावट) नहीं होने का कारण	गोविन्दराम आर्य	१४
चिकित्सकों का चिकित्सक की वेदना	रामफलसिंह आर्य	१५
गायत्री मन्त्र	मृदुला अग्रवाल	१७
परमात्मा और प्रकृति तथा जीव	प्रो.रामसिंह रमदा	१९
मन की साधना	डॉ. रूपचन्द्र दीपक	१९
ओ३म् ही ओ३म्	रमेशचन्द्र चौहान	२१
वैदिक सन्ध्या क्यों करें?	साधुशरण आर्य	२१
मुक्तक-हम तो चलेंगे अभियान पर	महात्मा चैतन्य मुनि	२३
आर्यावर्त्त गर्त में जा रहा	देशराज आर्य	२५
हम यहां हैरान है...	राधेश्याम गोयल	२५
आओ वैतरणी नदी की वास्तविकता जानें	हरिशंकर अग्निहोत्री	२६
राष्ट्र निर्माण	नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'	२९
उठो युवकों	खुशहालचन्द्र आर्य	३०
क्यों और आखिर कब तक? तथा नजर	ओमप्रकाश बजाज	३०
महामहिमों, माननीयों की महानता वेतन भत्तों...	डोंगरलाल वर्मा	३१
पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय तथा डी.ए.वी.कॉलेज	राधे मोहन	३३
भारतीय लोकतन्त्र में राजनीतिक दलों की...	डॉ. लक्ष्मी निधि	३५
तिब्बत जनक्रान्ति दिवस की ५८वीं वर्षगांठ	इन्द्रदेव गुलाटी	३६
परीक्षाएं आने वाली है-आओ कुछ जानें	ताराचन्दर जांगिड	३७
वैदिक धर्म की दशा-दिशा पर एक चिन्तन	ज्ञानेश्वरार्य	३८
क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर-आवेदन पत्र	वानप्रस्थ साधक आश्रम	३९
.... आवश्यक सूचनाएं तथा नियमावली	वानप्रस्थ साधक आश्रम	४०
आर्य जगत् की प्रस्तावित गतिविधियां	संकलित	४१
आर्य जगत् की सम्पन्न गतिविधियां	संकलित	४२
शोक-सूचनाएं	संकलित	४४

www.thearyasamaj.org

वेद मन्त्र एवं भावार्थ

देवयन्तो यथा मतिमच्छा विदद्वसुं गिरः। महामनूषत श्रुतम् ।। ऋ. - १.६.६

भावार्थ- मनुष्यों को वायु के उत्तम गुणों का ज्ञान, सब का उपकार और विद्या की वृद्धि के लिए प्रयत्न सदा करना चाहिए, जिससे सब व्यवहार सिद्ध हों।

वैदिक संसार के उद्देश्य

- महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्वराष्ट्रप्रेमी, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित-पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन-मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, सत्यार्थ प्रकाश एवं सद्साहित्य प्रकाशक, दयालु, दिव्य दयानन्द के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- आमजन में व्याप्त अशिक्षा, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुंचाने का प्रयास करना।

धन्य-धन्य वैदिक संसार

कहां तक बढ़ाई करूं, या वैदिक संसार पत्रिका की,
याने देश दुनियां में, बढ़यो ही नाम पायो है।
कवि लेखक शोधकार, उपदेशक, गायक, चिन्तनकार
खोज-खोज विद्वानों का परिचय जो करायो है
भूल रहे हैं वेद ज्ञान, अपनी अमोल संस्कृति को
तर्क समीक्षा द्वारा, सत्य-सत्य दरसायो है।
जगदीश आर्य का नमन, आर्य जगत् के विद्वानन कूं
जिनके लेख काव्यों से ढेर सारो ज्ञान जो पायो है।

जगदीश आर्य
प्रतिनिधि-वैदिक संसार
भरतपुर (राज.)
चलभाष-८०५८५६४२२०

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार आर्यावर्त्त के मार्च २०१७ के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

११ गते	मधु मास	१९३९ शक स.	चैत्र शुक्ल चतुर्थी २०७४	२ मार्च	पंचक समाप्त-२०:१९ वसन्त पंचमी
१३ गते	मधु मास	१९३९ शक स.	चैत्र शुक्ल षष्ठी २०७४	४ मार्च	क्षय तिथि सप्तमी -३०:०९
१५ गते	मधु मास	१९३९ शक स.	चैत्र शुक्ल नवमी २०७४	६ मार्च	मृगशिरा-१६:४३, श्रीराम नवमी
१६ गते	मधु मास	१९३९ शक स.	चैत्र शुक्ल दशमी २०७४	७ मार्च	संत हीरानन्द वातस्यायन जयन्ति
१७ गते	मधु मास	१९३९ शक स.	चैत्र शु. एकादशी २०७४	८ मार्च	अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस
१८ गते	मधु मास	१९३९ शक स.	चैत्र शुक्ल द्वादशी २०७४	९ मार्च	पुष्य नक्षत्र-२२:४६
१९ गते	मधु मास	१९३९ शक स.	चैत्र शु. त्रयोदशी २०७४	१० मार्च	प्रदोष, सावित्रीबाई फूले पुण्यतिथि
२१ गते	मधु मास	१९३९ शक स.	चैत्र शुक्ल पूर्णिमा २०७४	१२ मार्च	चैत्री पूर्णिमा, हनुमान जयन्ति
२२ गते	मधु मास	१९३९ शक स.	चैत्र कृष्ण प्रतिपदा २०७४	१३ मार्च	राष्ट्र मण्डल दिवस
२४ गते	मधु मास	१९३९ शक स.	चैत्र कृष्ण तृतीया २०७४	१५ मार्च	चित्रा-०९:५४, अन्तरराष्ट्रीय विकलांग दिवस
२७ गते	मधु मास	१९३९ शक स.	चैत्र कृष्ण षष्ठी २०७४	१८ मार्च	अनुराधा- २८:४४
२८ गते	मधु मास	१९३९ शक स.	चैत्र कृष्ण सप्तमी २०७४	१९ मार्च	गुरु हरगोविन्द पुण्यतिथि
२९ गते	मधु मास	१९३९ शक स.	चैत्र कृष्ण सप्तमी २०७४	२० मार्च	मेष सक्रान्ति-१५:५८, वसन्त समाप्त दिन-रात बराबर सूर्य भोगांश व क्रान्ति शून्य, सूर्य को गोलार्ध परिवर्तन।
३० गते	मधु मास	१९३९ शक स.	चैत्र कृष्ण अष्टमी २०७४	२१ मार्च	पूर्वाषाढ़-२२:११ व उत्तराषाढ़-२७:५७, विश्व वानिकी दिवस

किसी भी शंका समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनेय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें।

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

कैसे होगा राष्ट्र निर्माण?

वर्तमान समय में देश में पांच राज्यों उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, पंजाब, गोवा तथा मणिपुर में चुनाव सम्पन्न होकर परिणाम आने वाले प्रत्येक राजनैतिक दल तथा चुनाव मैदान में उतरा हुआ उम्मीदवार मतदाता को रिझाने के लिए अपने प्रतिद्वन्दी से मुफ्त बाँटने की प्रतिस्पर्धा कर रहा था। आप भ्रम में न रहिये वह जो भी कुछ मुफ्त बाँटने को कह रहा था, वह बाँटेगा भी या नहीं? प्रथम तो इसका कोई भरोसा नहीं है, क्योंकि उसने जो भी बाँटने है वह स्वयं के पास से तो बाँटना ही नहीं है और आज जो कुछ वह कह रहा है, वह अपने स्तर पर कुछ भी करने को सक्षम है ही नहीं तथा आज वह मात्र एक साधारण व्यक्ति अथवा मात्र उम्मीदवार है अर्थात् वह तो स्वयं उम्मीद की पंक्ति में खड़ा है। अगर मतदाता उसके बहकावे में आ गया तो वह उम्मीदवार से सरकार बन जाएगा। अब उसकी कही गई बात सरकार के गले की घण्टी बनेगी। अब उम्मीदवार की कही गई बात को पूरा करने में सरकार सक्षम है या नहीं, अगर सरकार की क्षमता से बाहर की बात है तो उम्मीदवार की कही गई बात केवल बात ही रह जाएगी। इसके लिए आप उम्मीदवार का कुछ बिगाड़ नहीं सकते, क्योंकि अब वह उम्मीदवार नहीं रहा, अब वह सरकार बन गया है और सरकार का आप इसलिए कुछ बिगाड़ नहीं सकते, क्योंकि सरकार ने आपको कोई बात कही नहीं है। अत: मतदाता रूपी आम नागरिक के पास अपना मन मसोसने के अतिरिक्त कुछ बचता नहीं है। बचता है तो केवल कोसना जिसके लिए वह स्वतन्त्र है। खूब मन मसोसे और खूब कोसे, किन्तु अपनी सीमा में रहकर, मर्यादा लांघने की कोशिश न करे अन्यथा उसके दुष्परिणाम भी भोगने होंगे। यही सब देश स्वतन्त्र होने के बाद से आज तक चल रहा है और इसका कोई अन्त भी दिखता नहीं।

इस प्रकार उम्मीदवार द्वारा कही गई बात तो केवल बात ही है, उसका कोई भरोसा नहीं, किन्तु उम्मीदवार द्वारा कही गई बात किसी राजनैतिक दल की कही गई बात के अनुकूल अथवा किसी राजनैतिक दल का उसे समर्थन है तो उसके पूर्ण होने की सम्भावना बढ़ जाती है, क्योंकि उम्मीदवार की जीतने की उम्मीद चाहे कितनी भी पूरी हो जावे किन्तु जब तक वह जिस दल से जुड़ा है उसको बहुमत नहीं मिलता तब तक वह सरकार नहीं बना सकता, अर्थात् यहां व्यक्ति सरकार नहीं बनता राजनैतिक दल सरकार बनता है और राजनैतिक दल को तो अपनी कही गई बात को पूर्ण करने का पूर्ण यत्न करना होता है चाहे उसकी कही गई बात में सरकार सक्षम हो या नहीं, क्योंकि राजनैतिक दल की कही गई बात पूरी नहीं हुई तो मतदाता रूपी आम नागरिक मन मसोस कर केवल कोसेगा नहीं उस राजनैतिक दल को राजनीति करना भूला देगा ठीक उसी प्रकार जैसा बहन मायावाती ने कहा है कि भाजपा आरक्षण समाप्त करके तो देखे, उसे राजनीति करना भूला देंगे। क्योंकि उम्मीदवार का मतदाता से पाला पांच वर्ष बाद पड़ता है तथा मतदाता भोला होने से भूल जाता है कि उम्मीदवार ने पहले क्या-क्या कहा था और क्या-क्या नहीं किया। जबकि राजनैतिक दल का सम्बन्ध मतदाता से जीवन्त होता है। इस भारत देश में चुनावी बयार प्रत्येक ऋतु में चलती रहती है अभी पाँच राज्यों के चुनाव सम्पन्न होंगे तो मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात के चुनाव आ जाएंगे। फिर लोकसभा के चुनाव, तो स्थानीय निकायों के चुनाव तो कभी उपचुनाव। अत: सरकार के बस में हो या न हो राजनैतिक दल द्वारा कही गई बात को तो पूर्ण करने की कोशिश की ही जावेगी। चाहे सरकार की कमर ही क्यों न टूट जावे। इसके फायदे अनेक हैं। मतदाता तो प्रसन्न होगा ही उसमें होने वाले व्यय में माल मिलेगा सो अलग। अब इसका श्रेय सरकार में बैठा राजनैतिक दल लूटेगा तो विपक्ष भी पीछे नहीं हटेगा। वह भी ताल ठोकेगा कि हमने सरकार पर दबाव बनाकर यह करवाया है। कुल मिलाकर मुफ्तखोरी के काम में मतदाता और नेता सभी सम्मिलित हैं।

आइये इस मुफ्तखोरी का चिन्तन करें!

सर्वप्रथम मुफ्तखोरी के अजगर जातिगत आरक्षण पर विचार करें हमारा देश धर्म निरपेक्ष है, किन्तु जाति निरपेक्ष नहीं। बालक प्रसव का समय हो अथवा स्कूल प्रवेश का उसके नाम के साथ जाति का ठप्पा लगा दिया जाता है। जातिगत आरक्षण के हालात इस तरह विकृत हो चुके हैं कि कोई भी अपने आपको उच्च जाति में आरक्षण के मामले में गिना जाना उचित नहीं मानता। पिछड़ी जाती वाले अनुसूचित जाति-जनजाति में शामिल होने के लिए प्रयासरत हैं तो अगड़ी जाति वाले अन्य पिछड़ा वर्ग में और केवल प्रयासरत नहीं हैं अपना शक्ति प्रदर्शन करने से भी नहीं चुकते हैं। एक जाति की भीड़ पूरे देश को हिला कर रख देने के लिए काफी है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह भीड़ पूरे देश को जलाकर राखकर देगी। उस भीड़ के सामने सभी नपुसंक नजर आते हैं।

केवल जाति के ठप्पे के आधार पर कोई ८०-९० प्रतिशत अंक लाने के बाद भी रोजगार के लिए दर-दर की ठोकर खाकर आत्महत्या के लिए विवश हो रहा है। चाहे वह कितना ही मध्यम आर्थिक परिवार का हो और रोजगार उसकी महती आवश्यकता है, किन्तु उच्च कुल परिवार में जन्म लेना एक प्रकार से उसका अपराध है। वहीं दूसरी ओर कितना ही समर्थ परिवार हो उसके माता-पिता शासकीय सेवा में हों और वह पढ़ाई में कमजोर होकर ४५-५० प्रतिशत अंक ही ला पाया हो किन्तु जाति के ठप्पे के आधार पर वह ८०-९० प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले योग्य रोजगार के लिए जरूरतमन्द प्रतिभागियों को पीछे छोड़ता हुआ उस रोजगार को हथिया लेता है जिसके लिए वह निपुण नहीं है। इसका माध्यम बनता है जातिगत आरक्षण। यह कैसा न्याय है? यह कैसा समानता का सिद्धान्त है? क्या ब्राह्मण, क्षत्रियों ने जाति के नाम पर जो शोषण अत्याचार शूद्र वर्णिय वर्ग के साथ किया उसकी भरपाई शोषित पीड़ितों को ब्राह्मण-क्षत्रिय आदि अगड़ी जाति वालों का शोषण-उत्पीड़न करने का अधिकार दे देने से होगी? जिस देश में जिस मानव समाज में योग्यता का सम्मान नहीं तथा अयोग्यता पुरस्कृत हो उस राष्ट्र में तो मनुष्यों में भेदभाव पनपेगा ही।

असन्तोष उपजेगा ही और जहां मानव-मानव में भेद है। समानता का सिद्धान्त नहीं है, जहां असन्तोष है उस राष्ट्र का निर्माण कैसे हो सकता? तथा यह जातिगत आरक्षण रूपी अजगर किसी के नियंत्रण में नहीं है, यह हमारी एकता, सद्भावना,

www.thearyasamaj.org

भाईचारे को निगल विद्वेष पैदा कर रहा है। इस जातिगत अजगर पर प्रहार करना तो दूर इसके तरफ टेढ़ी आँख से देखने की हिम्मत किसी राजनैतिक दल में नहीं है, उल्टे चुनावी बयार में इसके संरक्षण-पोषण में सब लग जाते हैं।

अल्पसंख्यकता तथा गरीबी के आधार पर आवास, मुफ्त विद्युत कनेक्शन, दो रुपए किलो चावल, एक रु. किलो गेहूं, हज यात्रा हेतु सबसिडी, नि:शुल्क धार्मिक स्थलों का पर्यटन, नि:शुल्क शिक्षा, नि:शुल्क पाठ्य सामग्री, विदेश में पढ़ाई हेतु स्कूल फिस में सबसिडी, मनरेगा के तहत वर्ष में १०० दिन रोजगार की ग्यारन्टी अन्यथा भत्ता आदि अनेक सुविधाएं पूर्व से दी जा रही हैं तथा समय-समय पर कोई सरकार विद्यार्थियों को साईकिल बांट रही है, कोई टेबलेट बाँट रहा है तो कोई पंजाब के चुनाव में शिक्षित बेरोजगारों को पेंशन देने की बात सामने आई है, जिसका लोगों ने विरोध भी किया है कि हमें मुफ्त के पैसे नहीं, रोजगार के अवसर चाहिए। कोई स्मार्ट फोन तो कोई प्रेशर कुकर बाँटने की बात कर रहा था।

पहले हम अल्पसंख्यकता पर विचार करें- हमारा देश धर्म निरपेक्ष है, जबकि उसे मत-पन्थ निरपेक्ष होना चाहिए। उसके लिए उसके सभी नागरिक समान होना चाहिए। विचारधारा के आधार पर नागरिकों को नहीं बाँटा जा सकता, ना ही बाँटा जाना चाहिए। जो अल्पसंख्यक कहलाए जा रहे हैं और उन्हें अल्पसंख्यकता के आधार पर उपकृत किया जा रहा है क्या वे भारत देश के अल्पसंख्यक नागरिक माने जाएंगे? और अल्पसंख्यकता के आधार पर उपकृत किया जा रहा है तो क्या इस देश में बहुसंख्यक वर्ग में उत्पन्न होना अपराध है? किस कारण से वे विशेष पृथक सुविधाएं पाने के अधिकारी हैं? तथा इन अल्पसंख्यकों के वर्ग में एक ऐसा वर्ग भी है जिसके हिस्से की जमीन बँटवारे में पाकिस्तान को दी जा चुकी है। क्या अल्पसंख्यक वें हैं जो इस धरा की मूल धर्म संस्कृति जो यहां की वीरासत हैं में विश्वास नहीं रखते जो इस देश के महापुरुष राम,कृष्ण हनुमान-गौतम, कपिल, कणाद, पतंजलि को महापुरुष नहीं मानते?

अब हम विचार करें गरीबों को आधार बनाकर लोगों को मुफ्तखोर बनाए जाने पर- सबसे प्रथम हम विचार करें कि मनुष्य गरीब कैसे बनता है क्या उसे परमपिता परमात्मा ने गरीब पैदा किया है? हाँ! परमपिता परमात्मा ने जीवात्मा को पूर्वजन्म के कर्मफल अनुसार किसी को मन्दबुद्धि, दोनों चक्षुओं से रहित नेत्रहीन, मूक-बधिर, दोनों हाथ अथवा दोनों पैरों से अस्थि बाधित विकलांग आदि उत्पन्न किया है तो समझा जा सकता है कि वह गरीब है, हालांकि ऐसा व्यक्ति भी अगर स्वाभिमानी है, कर्मठ है, पुरुषार्थी है तो वह इन परिस्थितियों में भी गरीब नहीं है, क्योंकि परमपिता परमात्मा ने उसे कोई शारीरिक न्यूनता अथवा व्याधि से दण्डित किया है तो उसे अपनी उदरपूर्ति हेतु अन्य कोई विशेष योग्यता उसमें भर दी है तभी कहावत है कि अन्धे, लूले, लंगड़ों में एक गुण ज्यादा होता है। फिर वह गरीब कैसा?

तो क्या गरीब उसे माना जावे जो पूर्ण रुपेण सक्षम होने के उपरान्त भी काम धन्धा नहीं कर रहा अर्थात् **अकर्मण्य है, आलसी है, कामचोर है अथवा काम कर रहा है तो बीड़ी पी रहा है, भांग-तम्बाखू खा रहा है, शराब पी रहा है, वेश्यागामी, व्याभिचारी है, माँसखोरी कर रहा है और इन अभक्ष्य पदार्थों के सेवन में अशक्त हो गया है, रोगी हो गया है, अथवा** जुआरी है, चोर है, लोभी है, **मितव्ययी है, दूसरों की धन-सम्पदा पर कुदृष्टि रखता है।**

क्या सरकारी तन्त्र द्वारा अल्पसंख्यकता अथवा गरीबी के आधार पर जो मुफ्तखोरी की आदत नागरिकों में डाली जा रही है उसमें पात्र-कुपात्र का ध्यान रखा जाता है? नहीं न! तो उपकृत कौन हो रहे हैं अकर्मण्य, दुर्व्यषनी, दुराचारी, मितव्ययी अच्छा यह बताओ बाँट कहां से रहे हैं? क्या ये खुले हाथों बाँटने वाले हमारे कर्णधार, हमारे नीति नियन्ता नेता लोग अपनी जेब से बाँट रहे हैं? आपका उत्तर होगा, नहीं! ये लोग अपने पास से क्या खाक बाँटेंगे, ये तो अपनी तनख्वाह-भत्ते आदि अन्य सुविधाओं पर खुले हाथों व्यय कर सरकारी खजाने पर बोझ बढ़ाते चले जा रहे हैं जिसका बोझ आम नागरिक पर पड़ता है। ये जो भी बाँट रहे हैं सरकारी खजाने से बाँट रहे हैं? तो हमारा प्रश्न है कि सरकारी खजाने में आया कहां से? उन्हीं से न जो पुरुषार्थ से कार्य कर रहे हैं, खून-पसीने से पैसा कमाकर अपने ऊपर भी खर्च न कर व्यापार, व्यवसाय में लगा रहे हैं, व्यापार-व्यवसाय को बढ़ाकर देश की सेवा कर रहे हैं और टैक्स के रूप में सरकारी खजाने को भर रहे हैं। अत: ईमानदार, कर्मठ सराहना के पात्र लोगों को सरकारों द्वारा लूटकर अकर्मण्य कुपात्र लोगों पर लुटाया जा रहा है। हम जरूरतमन्द को देने के विरोधी नहीं है, किन्तु यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि व्यक्ति किसी आपदा से ग्रस्त चरित्रवान हो, स्वयं के दुष्कर्मों के पीड़ित '**आ बैल मुझे मार**' वाली कहावत के चरितार्थ करने वाले न हो और इसमें किसी प्रकार का जाति-मत-पन्थ का भेदभाव न होकर देश के समस्त नागरिक समान रूप से इसके अधिकारी हैं। इसके लिए आधार कार्ड को तीन रंगों का बनाया जाना चाहिए। विशिष्ट नागरिक, सामान्य नागरिक तथा निकृष्ट नागरिक।

कर दाता, चरित्रवान, शासकीय योजनाओं के सहयोगी लोगों के विशिष्ट नागरिक, चरित्रवान मध्यम दर्जे के सामान्य नागरिक तथा नि:कृष्ट नागरिक की श्रेणी में उन लोगों को रखा जावे जो अपराधिक प्रवृत्ति के हो जिनका राष्ट्र, समाज को कोई योगदान नहीं होकर जिनका खान-पान चरित्र शुद्ध न हो किन्तु **भारत देश के पतनगामी राजनैतिक स्तर, राजनैतिक अपराधिकरण, राजनैतिक भ्रष्टाचार तथा राजनैतिक संरक्षण में दिवास्वप्न ही है। वर्तमान में अपात्र लोग शासकीय सुविधाओं और योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं और वास्तविक पात्र लोगों को शासकीय सुविधाओं, योजनाओं की जानकारी ही नहीं है। आज राजनीति देश सेवा न होकर सौ प्रतिशत फायदे का निवेश बनकर रह गई है।**

यहां प्रत्येक कार्य के लिए योग्यता एवं प्रशिक्षण, प्रमाण पत्र की आवश्यकता होती है, किन्तु राजनीति में जाने के लिए तथा मतदाता बनने के लिए किसी योग्यता, प्रशिक्षण एवं प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं, आपको देश, देश के इतिहास, देश की समस्याओं, देश की समस्याओं के कारण तथा उनके समाधान किसी भी विषय की जानकारी हो या न हो आप नेता बन सकते हैं, केवल और केवल आप अपने पक्ष में कितना गण अर्थात् समूह इकट्ठा कर सकते हैं, क्योंकि यहां गणतन्त्र है अर्थात् समूह द्वारा संचालित तन्त्र समूह अर्थात् भीड़, भीड़ कैसी भी हो, शिक्षित-अशिक्षित, योग्य- अयोग्य, चरित्रवान-चरित्रहीन कैसी भी हो भीड़ चाहिए भीड़ जिसके पक्ष में वह हमारा कर्णधार है। **शेष भाग पृष्ठ १३ पर**

www.thearyasamaj.org

वैदिक ऋषिका- इन्द्राग्नि

- शिवनारायण उपाध्याय -
७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा, (राज)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

यजुर्वेद अध्याय के १३ के मन्त्र संख्या २२ से २५ तक के मन्त्रों की दृष्टि इन्द्राग्नि है। इन मंत्रों में विज्ञान, सृष्टि रचना, पति-पत्नी का आपसी व्यवहार आदि विषयों पर गहन चर्चा की गई है।

यास्तेऽअग्ने सूर्य्ये रुचो दिवमातन्वन्ति रश्मिभिः।
ता भिर्नोऽअद्य सर्वाभी रुचे जनाय नस्कृधि।।

पदार्थ- हे (**अग्ने**) अग्नि के समान तेजस्वी विदुषी स्त्री। (**याः**) जो (**ते**) तेरी रुचि है (**ताभिः**) उन (**सर्वाभि**) सब रुचियों से युक्त (**न**) हमको जैसे (**रुचः**) दीप्तियां (**सूर्य्ये**) सूर्य में (**रश्मिभीः**) किरणों से (**दिवम्**) प्रकाश को (**आतन्वन्ति**) अच्छे प्रकार विस्तारयुक्त करती है वैसे तू भी अच्छे प्रकार विस्तृत सुख युक्त और (**अद्य**) आज रुचि कराने वाले (**जनाय**) मनुष्यों के लिए (**नः**) हम लोगों को प्रीति युक्त (**कृधि**) कर।

भावार्थ- इस मंत्र में वाचकलुप्तोपमालंकार है। जैसे सौर मण्डल में सूर्य की किरणे सब वस्तुओं को प्रकाशित करती है और प्राणियों में रुचि उत्पन्न करती है वैसे ही एक विदुषी श्रेष्ठ स्त्री घर के सब कार्यों का प्रकाश करती है। वह परिवार में सबको अपनी-अपनी रुचि के अनुकूल कार्य देकर उनमें प्रसन्नता का भाव उत्पन्न करती है। फलस्वरूप सभी स्त्री-पुरुषों में प्रीति उत्पन्न होती है और इससे परिवार का कल्याण होता है।

विज्ञान का विकास कब होगा? इस पर वेद का कथन है-

या वो देवाः सूर्य्ये सचो गोष्वश्वेषु या रुचः।
इन्द्राग्नी ताभिः सर्वाभी रुचं नो धत्त बृहस्पते।। यजु. १३.२३

पदार्थ- हे (**देवाः**) विद्वानों। आप सब लोग (**याः**) जो (**वः**) आपकी (**सूर्य्ये**) में (**रुचः**) रुचि और (**याः**) जो (**गोषु**) गायों और (**अश्वेषु**) घोड़ों आदि में (**रुचः**) प्रीति है (**ताभि**) उन (**सर्वाभिः**) सब रुचियों से (**नः**) हमारे बीच (रुचम्) कामना (**इन्द्राग्नी**) बिजली और सूर्यवत् अध्यापक और उपदेशक जैसे धारण करे वैसे (धत्त) धारण करो। हे (**बृहस्पते**) पक्षपात छोड़कर परीक्षा कराने वाले पूर्ण विद्या युक्त आप (**नः**) हमारी परीक्षा कीजिए।

भावार्थ- हे विद्वानों। आप सब लोग जो आपकी सूर्य में रुचि और जो गौओं और घोड़ों आदि में प्रीति है। उन सब रुचियों में हमारे बीच, जैसी रुचि विद्युत और सूर्य के समान तेजस्वी अध्यापक और उपदेशक धारण करें, वैसे धारण करो। आप पक्षपात छोड़कर हमारे ज्ञान की परीक्षा लो। क्योंकि जब तक परीक्षा नहीं होती तब तक यह नहीं जाना जा सकता है कि कोई व्यक्ति पूर्ण ज्ञान सम्पन्न है अथवा इसका ज्ञान अधूरा है।

अगले मंत्र में सुख कैसे प्राप्त होगा? इसका वर्णन है -

विराड् ज्योतिरधारयत् स्वराड ज्योतिरधारयत् ।
प्रजापतिष्टवा सादयतु पृष्ठे पृथिव्या ज्योतिष्मतीम् ।
विश्वस्मै प्राणायापावाय व्यानाय विश्वं ज्योतिर्यच्छ।
अग्निष्टेऽधिपतिस्तया देवतयाङ्गिरस्वद ध्रुवासीद।। यजु - १३.२४

पदार्थ - हे विराट अनेक प्रकार की विद्याओं में प्रकाशमान स्त्री। (**ज्योतिः**) विद्या की उन्नति को (**अधारयत्**) धारण कर, करावे जो (**स्वराट्**) सब धर्म युक्त व्यवहारों में शुद्ध आचारवान् पुरुष (**ज्योतिः**) विद्युत आदि के प्रकाश को (**अधारयत्**) धारण करे करावे वे दोनों स्त्री-पुरुष सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त होवें। हे स्त्री। जो (**अग्निः**) अग्नि के समान तेजस्वी विज्ञान युक्त (**ते**) तेरा (**अधिपतिः**) स्वामी है (**तया**) उस (**देवतया**) सुन्दर देव स्वरूप पति के समान तू (**अङ्गिरस्वत्**) सूत्रात्मा वायु के समान (**ध्रुवा**) दृढ़ता से (**सीद**) हो। हे पुरुष! जो अग्नि के समान तेज धारिणी तेरी रक्षा करने वाली तेरी पत्नी है उस देवी के साथ तू प्राणों के समान प्रीति पूर्वक निश्चय करके स्थित हो। हे स्त्री। (**प्रजापतिः**) प्रजा का रक्षक तेरा पति (**पृथिव्याः**) भूमि के (**पृष्ठे**) ऊपर (**विश्वस्मै**) सब (**प्राणाय**) सुख की चेष्टा से हेतु (**अपानाय**) दुःख हटाने के साधन (**व्यानाय**) सब श्रेष्ठ गुण कर्म और भाव के प्रचार के हेतु प्राण विद्या के लिए जिस (**ज्योतिष्मतिम्**) (प्रशंसित विद्या के ज्ञान से युक्त (**त्वा**) सुझको (**सादयतु**) उत्तम अधिकार पर स्थापित करे सो तू (**विश्वम्**) समग्र (**ज्योतिः**) विज्ञान को (**यच्छ**) ग्रहण कर और इस विज्ञान की प्राप्ति के लिए अपने पति को स्थिर कर।

भावार्थ- इस मंत्र में बतलाया गया है कि स्त्री, पुरुषों को चाहिए कि परस्पर प्रीति के साथ रहते हुए एक दूसरे के कर्त्तव्यों का बोध कराते हुए और एक दूसरे का सहयोग करते हुए संसार में सुखी जीवन यापित करते हुए विज्ञान का भी विकास करते रहें।

अगले मंत्र में मधु (चैत्र) और माधव (वैशाख) माह जिन्हें मिलाकर वसन्त ऋतु बनती है का वर्णन किया गया है।

मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतऽअग्नेरन्तः श्लेषोऽसिकल्पतां।
द्यावा पृथिवी कल्पन्तामापऽओषधय कल्पतामग्नयः पृथड्।
मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः। येऽअग्नयः समनसोऽन्तरा।
द्यावा पृथिवीऽइमे वासन्तिकावृतऽ अभि कल्पमानाऽइन्द्रमिव देवाऽ
अभि संविशन्तु तया देवतयाङ्गिर स्वद् ध्रुवे सीदतम्।।
यजु- १३.२५

पदार्थ-जैसे (**मम**) मेरे (**ज्यैष्ठ्याय**) ज्येष्ठ महीने में हुए व्यवहार वा मेरी श्रेष्ठता के लिए जो (**अग्नेः**) गरती के निमित्त अग्नि उत्पन्न होने वाले जिनके (**अन्तः श्लेषः**) भीतर बहुत प्रकार के वायु का सम्बन्ध (**असि**) होता है वे (**मधु**) मधुर सुगबन्ध युक्त चैत्र (**च**) और (**माधवः**) मधुर आदि गुण का निमित्त वैशाख (**च**) इनके सम्बन्धी पदार्थ युक्त (**वासंतिक**) वसन्त महीने में हुए (**ऋतु**) सबको सुख प्राप्ति के साधन ऋतु सुख के लिए (**कल्पेताम्**) समर्थ होवे जिन चैत्र और वैशाख महीनों के आश्रम से (**द्यावा-पृथिवी**) सूर्य और पृथ्वी (**आपः**) जल भी भोग में (**कल्पन्ताम्**) आनन्द दायक हों। (**पृथक्**) भिन्न-भिन्न (**ओषधयः**) यवादि अथवा सोमलता आदि औषधि और (**अग्नयः**) विद्युत आदि अग्नि भी (**कल्पन्ताम्**) कार्य साधक होवें। हे (**सव्रताः**) निरन्तर वर्तमान सत्यभाषणादि व्रतों से युक्त (**समनसः**) विज्ञान

www.thearyasamaj.org

वाले (**देवाः**) विद्वान्। (**ये**) जो लोग (**वासन्तिकौ ऋतु**) वसन्तु ऋतु में हुए चैत्र और वैशाख और पूर्वक से (**अन्तरा**) बीच में हुए (**अग्नयः**) अग्नि है उनको (**अभि कल्पमानाः**) सम्मुख होकर कार्य में युक्त करते हुए आप लोग (**इन्द्र मिव**) जैसे उत्तम ऐश्वर्य प्राप्त हों वैसे (**अभिसंविशन्तु**) सब ओर से प्रवेश करो जैसे (**इमे**) ये (**द्यावा पृथिवी**) प्रकाश और भूमि (**तया**) उस (**देवतया**) परम पूज्य परमेश्वर रूप देवता के सामर्थ्य के साथ (**अङ्गिरस्वत्**) प्राण के समान (**ध्रुवे**) दृढ़ता से वर्तते है वैसे तुम दोनों स्त्री पुरुष सदा संयुक्त (**यदितम्**) स्थिर रहो।

भावार्थ- इस मंत्र में यह बतलाया गया है कि स्त्री पुरुष वसन्त ऋतु में किस प्रकार मिलकर रहें।

दया के सागर देव दयानन्द

जांगिड कुल गौरव
- पुरुषोत्तमदास गोठवाल -
कबीर मार्ग, बनी पार्क जयपुर (राज.)
दूरभाष - ०१४१-२२०५९९१

अतीत में विश्वगुरु रहे भारतवर्ष की पावन धरा पर अट्ठारवी शताब्दी के मध्य गुजरात के टंकारा ग्राम में औदिच्य तिवारी ब्राह्मण परिवार में जन्में देव दयानन्द जी को, प्रारंभिक रुढ़ीवादी संस्कारों से युक्त समाज में बाल्यकाल से ही संघर्षशील व अनेक कठिनाइयों से जूझना पड़ा।

पहले जागने और जगाने वाले कोई दुर्लभ महापुरुष ही कई शताब्दियों के अन्तराल के बाद इस देव भूमि में जन्में और संघर्षशील जीवन की धारा के विरुद्ध असाधारण तर्क व बुद्धिमता द्वारा जन जीवन में वैदिक सत्य सनातन धर्म को प्रचारित करते रहे।

शिवरात्रि पर्व पर सच्चे शिव की आराधना में जागते रहे और मूर्तिपूजा की झूठी आस्था का अवलोकन एक चूहे के प्रसाद खाने तक के सच को आत्मसात कर, मूर्तिपूजा की पौराणिक मान्यता छबि की सत्यता, अविद्यापूर्वक वाह्म्य आडम्बरों से युक्त अंधभक्ति को खूब नजदीकी से परखा।

सच्चे गुरू की तलाश के लिए हिमालय, नर्मदा, काशी आदि जगह-जगह पर भ्रमण करते रहे।

आप अपने बाल्यकाल के समय चाचा व बहिन की मृत्यु के कारण वैराग्यता से घर छोड़कर सच्चे गुरु की तलाश करते-करते मथुरा के गुरु विरजानन्दजी की कुटिया पर पहुंच गये। गुरू विरजानन्द प्रजाचक्षु व्याकरण के सूर्य कहे जाने वाले गुरू ने भी पूरी निष्ठा और लगन से अपने थोड़े से समय में ही इन्हें अष्टाध्यायी, व निघण्टू कंठस्थ करा संस्कृत भाषा की पकड़ पर पूरा-पूरा अधिकार प्राप्त करा धन्य हुये।

ऐसे विलक्षण गुरु को विलक्षण ही शिष्य पाकर मथुरा नगरी की पावन कुटिया धन्य हुई और कालान्तर में वैदिक संस्कृति को अपने वेद भाष्य की कुन्जी द्वारा असाधारण सफलता के सोपान का रास्ता खुलता ही गया। आर्ष, अनार्ष ग्रन्थों का वास्तविक ज्ञान जो गुरु से प्राप्त हुआ इसके परिणाम स्वरूप आपका रचयित सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ व ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका को रचकर आर्ष क्रान्ति का इतिहास रच दिया।

स्मरण रहे- पौराणिक काल में रचयित व प्रकाशित महिधर व सायण आदि के वेदों पर भाष्य को पढ़कर जो बहुत ही निम्न कोटि के व अश्लीलतापूर्वक रचे गये थे और विदेशियों ने तो वेदों के बारे में भ्रमित गडरियों के गीत आदि की धारणा व्यक्त कर, इस पर ही अनेक प्रश्न चिह्न लगा दिये थे? निराकार ईश्वर की व्याख्या जो वेदों में प्रतिपादित थी को वाममार्गियों, पौराणिकों, रुढ़ीवादी, पंडों पुजारियों के द्वारा कपोल-कल्पित आधार पर आर्ष ग्रन्थों में मिलावट कर मूर्तिपूजा को बढ़ावा दिया गया। फलस्वरूप सारा देश भ्रमित झूठी आस्था और मिथ्या वाहम्य आडम्बरों में भरा गया। वैदिक संस्कृति धीरे-धीरे पतन की ओर अग्रसर होती रही सोचिये यह दुर्भाग्य हमारे देश की हमारी आलस्यता, अपेक्षा व शिथिलता के कारण लोगों में वेद के प्रति पढ़ने व पाणिनि व्याकरण का त्याग कर आर्यावर्त्त के लोगों का रुझान कम होने लगा। एकेश्वर, अखण्ड, अविनाशी ब्रह्म की जगह अवतारी भगवानों व महानायकों की भिन्न-भिन्न मूर्तियों की प्रचलनता जोर पकड़ने लगी।

वेद का नारा "**कृणवन्तो विश्वमायम्**" सकल संसार को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओं को भुलाकर जातिवाद, ऊंच-नीच, छूआ-छूत आदि अंधविश्वास परक परम्पराओं में पड़कर समाज में विषमतायें पैदा कर दी गई, इसका ही दुष्परिणाम स्वरूप, आपस का भाईचारा व हिन्दुओं का संगठन कमजोर होकर रह गया जो विचारणीय प्रश्न उभर रहा है? हम गुलामों के भी गुलाम रहें, मुगलों द्वारा लुटते रहे, महादुखः, हमारी मूर्खता व अकर्मण्यता आदि। आप अपने बाल्यकाल से मृत्यु पर्यन्त तक इस देश, जाति धर्म और समाज को आलस्यता अकर्मण्यता से निकाल कर संघर्षशील बनाकर अनुकरणीय सेवा की है। दया के सागर की कोई सीमा नहीं है।

वेद में गाया '**असतो मा सद्गमय**' की सकारात्मक भूमिका को निभानेवाला निर्भिक ब्रह्मचारी-अपने त्याग, तपस्या, विद्वता, निर्भिक, अकाट्य तर्कों द्वारा जगह-जगह शास्त्रार्थों द्वारा अपनी विजय पताका को फहराते रहे। '**सत्यमेव जयते**' का संदेश जनता में प्रचारित होकर वैदिक संदेश की गूंज देश में सुनी गई। धीरे-धीरे वेदों के गूढ मन्त्रों का अनुवाद सरल हिन्दी भाषा में उपलब्ध हुआ।

अंधकार से प्रकाश की ओर खोज प्राप्त कर देश के इस भीड़ तंत्र की अशिक्षित जनता में शिक्षा, धर्म, संस्कार, त्याग, तपस्या, राष्ट्रभक्ति, स्वदेशी जागरण, स्त्री शिक्षा, हिन्दी-आन्दोलन, खादी, दलित्तोथान, घोर-गरीबी, भुखमरी से संघर्ष कर राष्ट्रोन्नति की कठिन डगर पर चलते रहे। देश को एकता के सूत्रों से जोड़ते रहे और कालान्तर में परिणामस्वरूप देश पराधिनता से मुक्त हुआ, इस सफलता के लिये अनेक देशभक्त शहीद होते रहे। आज के सुप्रभात के लिये निरंतर हम देशवासियों को आपके योगदान को याद कर इन्हें हमें श्रद्धांजलि अर्पित करें । आपको द्वारा स्थापित आर्य समाज सेवा में निरन्तर प्रयत्नशील है। आर्य जगत् में आर्यजनों द्वारा अपूर्व देशप्रेम, शिक्षा, संगठन की भूरी-भूरी प्रशंसा अर्जित हुई है।

'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये'। कामना करते हैं कि भारत विश्व गुरु बने और शान्ति समृद्धि प्राप्त करता रहे।

www.thearyasamaj.org

आखिरी हमसफर - भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु

- डोंगरलाल वर्मा -
कसरावद, जिला-खरगोन (म.प्र.)
चलभाष-०८९५९०५९०९९

सरदार अर्जुनसिंह ने वंश में आर्यत्व जगाया।
किशनसिंह, अजीतसिंह ने प्रगति पथ दिखाया।।
करतारसिंह को जीवन का अपना लक्ष्य बनाया।
सुखदेव, राजगुरु को अपना हमसफर बनाया।।

एक महाशय ने अपने गन्तव्य स्थान के सफर हेतु दो टिकिट लेकर स्वयं एक सीट पर बैठ तथा एक सीट झोला रख दिया। तत्पश्चात् अन्य यात्रियों द्वारा पूछे जाने पर क्या सीट पर कोई बैठा है? तो जवाब में हां कह दिया जाता। किन्तु जब बस रवाना हुई तो खड़े एक यात्री ने परिचालक से कहा- कि सीट पर रखे सामान को उठवा कर यात्री को बिठाया जाये। परिचालक के पास आने और कहने के पूर्व महाशय ने परिचालक को दो टिकिट बतलाते हुए कहा- 'मेरे साथ मेरा हमसफर बैठा है तथा यह सफर उसके साथ आखिरी सफर है दि. ०२.०७.१९०९ को लन्दन में सर कर्जन वायली' की हत्या के बाद दि. १७.०८.१९०९ को मदनलाल धींगरा को फांसी के बाद अन्जान कब्र में दफनाया था, इसी तरह दि. १३.०३.१९०९ को सर माइकल ओ ड्वायर को गोलियों से छलनी करने के बाद दि. ३१.०७.१९४० को सरदार उधमसिंह को इसी स्थान पर दफनाया और कई वर्षों बाद पंजाब और केन्द्र सरकार के संयुक्त प्रयासों से सन् १९७४-१९७६ को भारत माता के दोनों सपूतों के अवशेषों को भारत लाकर मातृभूमि की मिट्टी, पानी, हवा से स्पर्श हुआ। ऐसे ही भारत के सपूत त्रिरत्न- सरदार भगतसिंह, सुखदेव, राज गुरु का अभूतपूर्व आखिरी दम तक हमसफर बने। जिन्होंने दि. २३.३.१९३१ को आपस में गले मिल जीवन यात्रा पूर्ण की।

शहीदे आजम सरदार भगतसिंह

दिनांक २८.०९.१९०७ को विद्यावती ने जिस बालक को जन्म दिया, उसी दिन सपूत के पिता किशनसिंह तथा चाचा अजीतसिंह जेल यात्रा से रिहा हुए थे। दादा अर्जुन सिंह सिक्ख होते हुए भी नित्य यज्ञ करते थे तथा प्रवास के दौरान साथ में यज्ञ कुण्ड, हवन सामग्री साथ में रखते थे। दादी ने पोते के ऐसे समय जन्म होने से कहा मुण्डा सोणा और भागो वाला है। आपका नाम भागोवाला रखा जो आगे चलकर भगतसिंह हो गया। प्राय: बालक, पागल, शायर और आशिक की सोचने की शक्ति विचित्र होगी। ढाई वर्षीय भगतसिंह को खेल-खेल में अपने घर के बगीचे में पिस्तौल, बन्दूकें बोने का उपक्रम करते देख एक सज्जन ने पूछा- काका!

तेरा की नां ऐ? भगतसिंह। तू की कर रिहाएं? भगतसिंह- दम्बूकां बीज रहा हां (बन्दूकें बो रहा हूं)। सज्जन- बन्दूकां काहदे लई? (बन्दूकें किसके लिये), भगतसिंह- गोरियां नूं मारूंगा। चाचाजी के जेल में जाने से अपनी चाची को रोते देख भगतसिंह कहता - 'चाची! तू रो मत मैं, बड़ा होकर अंग्रेजों को मार-मारकर भगा दूंगा और चाचाजी को ले आऊंगा।' जब भगतसिंह नौ वर्ष के थे, करतारसिंह सराबा की शहीदी का पता लगा, सराबा ने देश की आजादी लिए हंसकर फांसी का रस्सा चूम लिया। भगतसिंह ने अखबार में छपी खबर की तस्वीर काट जीवन भर अपने साथ रखी। मां को तस्वीर दिखाते कहता - बेबेजी! मैनू ऐसा लगता ऐ 'सराबा' मेरा वड्डा (बड़ा) परा (भाई) होवे। बेबेजी! में वी करतारा बनांगा। विद्यालय में भगतसिंह सभी का अच्छा मित्र था, वह वृद्ध लोगों के साथ भी मित्रता कर लेता था। एक बार बूढ़ा दर्जी कपड़े सी कर लाया। तो भगतसिंह कहता कि यह दर्जी भी मेरा मित्र है इसीलिए तो मेरे लिये कपड़े लाया। इसी तरह घर के किसी व्यक्ति ने हंसी में कहा- हां! गांव वाले भी तेरे मित्र हैं। तो भगतसिंह ने कहा- हां ये सब मेरे ही मित्र हैं। इस प्रकार भगतसिंह बड़ा होकर देशवासियों का मित्र बन गया। अमृतसर

धन्य शहीदों के शहजादे भगतसिंह दीवाने

भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु देशभक्त दीवाने।
गलबहियां डाले अरु गाते, इंक्लाब के गाने।।
बीच-बीच में भारत मां की जय उद्घोष लगाते।
नर पुंगव वत मस्त चाल से जाते थे इठलाते।।
लोह सीखचों के पीछे से, बैरक से कैदी गण।
देख-देख उनकी खुश मुद्रा, विस्मित थे मन ही मन।।
आज मरण त्यौहार मनाने, जीवन धन्य बनाने।
का शुभ अवसर मिला उन्हें, थे हर्ष विभोर दिवाने।।
अपना जीवन सुमन समर्पित करने बलिवेदी पर।
स्वतन्त्रता देवी का आह्वान करने पूजा पर।।
जा पहुंचे फांसी के तख्ते पे गाते मुस्काते।
चढ़ता खून, निखरता यौवन, पुष्पों से महकते।।
जब फांसी के फन्दे पर गए भगतसिंह लटकाएं।
उनकी माता विद्यावति के नयन अश्रु छलकाएं।।
कहा उपस्थित लोगों ने माँ रहस्य समझ नहीं आया।
इक शहीद की माता की आंखों में जल क्यों छाया।।
मां बोली, मैं नहीं शहीदी पर सुत की रोती हूं!
मैं अपने मातृत्व-कोख पर पछताती रोती हूं।
अगर कोख ये एक भगतसिंह और मुझे दे देती
तो मैं देश के चरणों में उसको भी अर्पित कर देती।
धन्य शहीदों के शहजादे, भगतसिंह बलिदानी।
धन्य देश की आजादी हित, दी गई तब कुर्बानी।

धन्य तुम्हारी वीर प्रसूता, विद्यावति सी माता।
आज देश तब गौरव गाता, श्रृद्धा-सुमन चढ़ाता।

-स्मृति शेष दयाशंकर गोयल
१५५४, डी. सुदामा नगर , इंदौर-४५२००९

www.thearyasamaj.org

के जलियां वाला बाग हत्याकाण्ड १३.०४.१९१९ को भगतसिंह की उम्र बारह वर्ष की थी, इस घटना की खबर सुनते ही भगतसिंह लाहौर से चलती ट्रेन में चढ़ बाग में पहुंचा। बाग की खून से सनी मिट्टी को एक शीशी में भर ली। घर आकर कई दिनों तक रोटी नहीं खाई। जब भी वह बाग की मिट्टी को देखता गुस्से से अपने दांत किटकिटाते हुए अंग्रेजों के प्रति आक्रोश प्रकट करता था। एक सायमन कमीशन के विरोध में क्रांतिकारियों ने जुलूस निकाला, तो अंग्रेजों ने भीड़ पर लाठियां बरसाई, लाठियों की मार से देश भक्त लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गयी। इसका बदला भगतसिंह ने राजगुरु, चन्द्रशेखर आजाद के साथ मिलकर लालाजी के हत्यारे सॉण्डर्स को मौत के घाट उतार दिया। इसके बाद आगरा में दो बम तैयार किये, झांसी ले जाकर उनकी जांच की वे ठीक निकले। आठ अप्रैल १९२८ को दिल्ली में असेम्बली की कार्यवाही चल रही थी, एकाएक सरकारी बेन्चों के पास बमों से धमाका किया गया था तथा पर्चे फेंके जिन पर लिखा था- बहरों को सुनाने के लिये जोर से बोलना पड़ता है। युवक थे - भगतसिंह, बटुकेश्वर दत्त। देश के बड़े-बड़े नेताओं ने लाहौर जेल में भगतसिंह से भेंट करके उसे समझाने का प्रयत्न किया, कि फांसी की सजा से बचने के लिये दया याचिका प्रस्तुत कर दें। इस प्रस्ताव से भगतसिंह सहमत नहीं हुए। क्योंकि हमारे बलिदान से देश में जो चेतना फैलेगी वह देश के हित में सिद्ध होगी। भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु को फांसी लगने से पूर्व उनकी मातायें मुलाकात करने आई। तथा साथ में बहुत से लोग उनसे मिलने जेल के फाटक पर मौजूद थे। जेल के अधिकारियों ने अपना निर्णय सुना दिया कि इनकी माताओं के अलावा अन्य लोग उनसे नहीं मिल सकेंगे। तत्पश्चात् भगतसिंह ने भी जेल के अन्दर अपना निर्णय भेज दिया, कि यदि सरकार हमें अपने देशवासियों से नहीं मिलने देती तो अपनी माताओं से मिलना भी हमें स्वीकार नहीं है। यह था अपने-पराये का भेद मिटाने का तर्क। सपूतों के इस निर्णय से मातायें गर्वित तो हुई पर हर्षित नहीं। फांसी की सजा देने के बाद जज ने भगतसिंह से अपनी दो इच्छायें पूछी- तो भगतसिंह ने पहली इच्छा में कहा- '**अंग्रेज साम्राज्यवाद खत्म हो**' तो जज ने कहा - यह नहीं हो सकता। तो भगतसिंह ने करतासिंह की वाक शैली में कहा 'कि दूसरी इच्छा तो तुम्हारा बाप (तुहाड़ा पियु) भी पूरी नहीं कर सकता। क्रांतिकारी कवि श्री कृष्ण सरल- **पुस्तक प्रकाशक लोग पुस्तकें बेंचकर जायदाद बनाते हैं किन्तु मैंने अपनी जायदाद बेंचकर पुस्तक बनाई है।** अनुसार '**भगतसिंह महाकाव्य** ' के प्रकाशन के बाद ग्रंथ की भेंट स्वीकार करने उज्जैन नगर पहुंची माताजी विद्यावती का स्वागत ऐतिहासिक बनकर रह गया। उज्जैन को राष्ट्रपतियों, प्रधानमंत्रियों के स्वागत करने का गौरव प्राप्त हो चुका था। किन्तु भगतसिंह की माताजी के स्वागत ने पिछले सभी स्वागत पीछे छोड़ दिये। दूर-दूर के गांव खाली हो गये, वहां के निवासी माताजी के दर्शन के लिये उज्जैन पहुंच चुके थे। जिस बग्घी में बिठाकर माताजी का जुलूस निकला, सात बार हार फूलों से भर गई। पुलिस के डंडे खाने को लोग तैयार थे, लेकिन माताजी के चरण-स्पर्श किये बिना हटने के लिए तैयार नहीं थे। जब '**भगतसिंह महाकाव्य**' की प्रति सरल जी ने माताजी की ओर बढ़ाई तो पुस्तक को हाथों में लेने के बजाय, हाथ पीछे खींच लिये। तथा माताजी बोली - तुम्हें (सरलजी) पहले चन्द्रशेखर आजाद पर ग्रन्थ लिखना चाहिए था। क्योंकि भगतसिंह के पहले वह शहीद हुआ था। तुम अपने नगरवासियों के सामने वादा करों कि अगला ग्रन्थ चन्द्रशेखर आजाद पर लिखा जावेगा। तो मैं इस ग्रन्थ की भेंट स्वीकार करूंगी। माताजी की इस महानता से जनता मुग्ध हो गयी। श्रीकृष्ण सरल जी ने चाकू से भावावेश में अपने अंगूठे को चीर माताजी के मत्थे पर रक्त से तिलक किया और वचन दिया कि अगला ग्रन्थ चन्द्रशेखर आजाद पर ही लिखा जावेगा। महाकाव्य के विमोचन के बाद कहा '**जिसे मैने लाहौर में खोया था, उसे उज्जैन में पा लिया है।**' मुझे लगता है जैसे मेरा बेटा भगतसिंह मेरी गोद में आ बैठा है और कवि श्रीकृष्ण जी सरल ने एक वर्ष के अन्दर ही शहीद चन्द्रशेखर आजाद पर महाकाव्य लिखकर माताजी को दिया वचन पूर्ण कर दिया।

शहीद सुखदेव

शहीद सुखदेव का जन्म १५.०५.१९०७ को लुधियाना जिले के ग्राम नौधरां में हुआ था, तीन वर्ष की अवस्था में उनके पिताश्री रामलाल थापर का निधन हो गया। मां श्रीमती रल्ली देई ने अपने जेठ श्री अचिन्तारात थापर की देखभाल में सुखदेव को बड़ा किया। सुखदेव के तायाजी रायलपुर में रहते थे। जो क्रान्तिकारी विचारधारा के व्यक्ति थे। तायाजी को जेल यात्रा का बहुत अनुभव होने से सुखदेव को अंग्रेजों के प्रति बहुत आक्रोश था। रायलपुर के विद्यालय में सुखदेव पढ़ रहा था कि अंग्रेज अफसर विद्यालय में आया। सभी छात्रों को आदेश दिया गया कि अफसर को सभी छात्र सलाम करें। किन्तु सुखदेव ने सलाम नहीं किया तो उसे रूल से भारी मार पड़ी, फिर भी उसने सलाम नहीं किया। सुखदेव

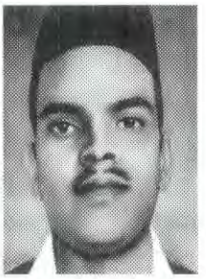

जब बड़ा हो गया तो मां ने उसके रंगीन जीवन के सपने संजोये, बोली - 'सुखदेव तू घोड़ी पर चढ़कर जा और अपने लिये दुल्हन ले आ।' सुखदेव ने दृढ़तापूर्वक कहा - 'मां! मुझे तो फांसी के तख्ते पर चढ़ना है। मां समझ गयी कि बेटा किस रास्ते पर चल पड़ा है। अचिन्तारात ने समझाया - अपने बेटे से छेड़छाड़ मत करो, हमारे किसी प्रयत्न से इसका रास्ता हम नहीं बदल सकते। वह हमारे बीच जितने दिन रहे हमें संतोष कर लेना चाहिए। लाहौर नेशनल कॉलेज में भगतसिंह के घनिष्ठ मित्र थे, सुखदेव शीशमहल बोर्डिंग हाऊस में तयेरा भाई जयदेव और यशपाल के साथ रहते थे। तथा अपने तायाजी का वह चित्र अपने पास रखते थे, जो वे कैदी के रूप में थे। उनके ही अनुसार अपने जीवन को ढालने का संकल्प कर लिया। कॉलेज की पढ़ाई के साथ क्रांन्तिकारी गतिविधियों में रहने के कारण एक किराये का मकान लेकर अपने छोटे भाई मथुरादास के साथ रहने लगे। मकान में भगतसिंह, यशपाल, और भगवतीचरण इत्यादि क्रान्तिकारियों के आगमन से मकान क्रान्ति का अड्डा बन गया। यहां क्रान्तिकारियों की एक बैठक दि. ८ एवं ९ सित. १९२८ को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला के किले के खण्डहरों में आयोजित की गयी, सुखदेव, भगतसिंह की उपस्थिति में क्रान्तिकारियों की एक केन्द्रीय समिति का निर्माण हुआ, जिसमें सुखदेव को पंजाब प्रान्त का संगठन कर्ता नियुक्त किया गया। सुखदेव ने सारे पंजाब में घूम-घूमकर विश्वस्त व्यक्तियों को क्रान्तिकारी पार्टी में सम्मिलित किया और सिद्ध कर दिया कि उसमें संगठन की अद्भुत क्षमता है। लाहौर में सुखदेव की देखरेख में बम बनाने की फैक्ट्री अच्छी चल रही थी, कि पुलिस को सुराग मिल गया। पुलिस ने एक मिस्त्री को बम की खोल बनाते पकड़ लिया। एक दिन सुखदेव जब खोल लेकर जाने लगा तो पुलिस साधारण पोषाक में थी को मिस्त्री ने बता दिया कि यही बाबू ये चीजें बनवाया है। इस प्रकार सुखदेव रंगे हाथ पकड़ा गया। तत्पश्चात क्रान्तिकारियों के पते-ठिकाने एवं बम बनाने की कई फैक्ट्रियों के बारे में पूछताछ की गई। सुखदेव पूर्व में अपनी सहन शक्ति की कई बार परीक्षाएं दे चुका था। पुलिस द्वारा बिना यातना दिये बयान देने के लिये राजी हो गया। सुखदेव ने अपने उन्हीं अड्डों के पते बताये, जिन्हें

www.thearyasamaj.org

क्रान्तिकारियों ने अड्डे खाली कर दिये थे। इस प्रकार पुलिस की यातनाओं से भी बच गया और दल के प्रति विश्वासघात भी नहीं हुआ। लाहौर षड्यंत्र केस में लाहौर जेल में सुखदेव, भगतसिंह व राजगुरु का पुन: मिलन हुआ तथा आखिरी सफर के हम सफर बन गये।

शहीद राजगुरु

शहीद राजगुरु का जन्म दि. २४.०८.१९०८ को पुणे के खेड़ा गांव में हुआ था, पिता श्री हरिनारायण तथा माता का नाम पार्वतीबाई था। छ: वर्ष की उम्र में पिता का निधन हो गया था। अध्ययन हेतु वाराणसी गये, जहां हिन्दू धर्म ग्रन्थों के साथ वेदों का अध्ययन किया। लघु सिद्धांत कौमुदी जैसा कठिन ग्रन्थ को कंठस्थ कर लिया था। शिवाजी के अनुयायी और प्रशंसक होने के साथ लोकमान्य तिलक के जीवन ने राजगुरू को बहुत प्रभावित किया। अच्छे निशाने पर और क्रान्तिकारी गतिविधियों में दक्ष होने के कारण चन्द्रशेखर आजाद की पार्टी से जुड़ गये। तत्पश्चात् भगतसिंह, सुखदेव, यतीन्द्रनाथ दास इत्यादि क्रान्तिकारियों से घनिष्ठ मित्रता हो गयी। जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड और लाला लाजपत राय की मौत से अंग्रेजों के प्रति प्रतिशोध के अंगारे मन में धधक रहे थे। राजगुरु को अपने क्रान्तिकारी साथियों शिव वर्मा के साथ यह उत्तरदायित्व सौंपा गया कि वे दिल्ली जाकर एक गद्दार साथी को गोली से उड़ाने के अभियान में शामिल होकर अपनी प्रथम परीक्षा उत्तीर्ण कर दिखावे। वह गद्दार साथी दिल्ली में शाम को प्रतिदिन घूमने जाया करता है, शिव वर्मा और राजगुरु ने छिपकर उसकी गतिविधियों का पता लगा लिया। एक शाम मौका पाकर राजगुरु ने सुनसान जगह पर उसकी पीठ पर गोली मार दी, जिससे वह भूमि पर गिर पड़ा तथा फिर राजगुरु ने उसके सीने पर गोली मार काम तमाम कर दिया। गोलियों की आवाज सुन पुलिस उसके पीछे लग गई। भागते-भागते एक गन्ने के खेत में हाल ही में पानी दिया गया था, पानी और कीचड़ में छिप गया। सर्दी के दिन होने से बेहाल हो गया। किन्तु कीचड़ के कारण पुलिस लौट गयी। दूसरे दिन अखबारों में यह घटना पढ़ी की उसने दूसरे ही व्यक्ति को मार डाला। बहुत ही दु:ख और पश्चाताप हुआ। इस घटना से एक अच्छा परिणाम निकला, कि चन्द्रशेखर, भगतसिंह के साथ लाला लाजपत राय के हत्यारे सॉण्डर्स को मारने में शामिल किया गया। जिसमें राजगुरु बहादुर सिद्ध हुआ। पहले सॉण्डर्स को राजगुरू ने गोली मारी बाद में भगतसिंह ने पांच-छह गोलियां जड़ दी। गोलियों की आवाज सुन इन्सपेक्टर मि. फर्न ने भगतसिंह को पकड़ने हाथ बढ़ाया कि राजगुरु ने फुर्ती से मि. फर्न को पूरी ताकत से भूमि पर दे मारा जो फिर उठ न सका। फिर तीन सिपाही इन दोनों के पीछे दौड़े तो चन्द्रशेखर ने तीनों को गोलियां मार कर ठण्डा कर दिया। अब क्रान्तिकारियों के सामने समस्या यह थी, कि लाहौर के बाहर कैसे जाये? आजाद ने एक पंडे का रूप धारण कर हरे रामा-हरे कृष्णा करते बाहर निकला। भगतसिंह ने फौज के अफसर का रूप धारण किया और उसके साथ भगवतीचरण बोहरा की पत्नी दुर्गा भाभी ने भगतसिंह की पत्नी का अभिनय किया। दुर्गा भाभी के तीन वर्षीय बेटे को भगतसिंह ने अपनी गोद में उठाया, राजगुरु की सूरत अच्छी नहीं होने से भगतसिंह का नौकर का अभिनय कर पुलिस की आंखों में धूल झोंककर सभी लाहौर से भाग निकले। राजगुरु ने भगतसिंह से कहा क्रान्तिकारी जीवन में तुम्हारा नौकर बना, क्यों न दूसरी दुनिया में आपके साथ पहुंच अपने साहब के लिये फ्लेट बुक कराकर उसकी सफाई करूं। तीनों को फांसी होने के पूर्व जेल के दारोगा ने साथियों से आखिरी मुलाकात करा दी। बिदा होते समय साथी भावुक हो गये। शिव वर्मा की आंखों से आंसू छलक आये। भगतसिंह ने शिव वर्मा से कहा हम तो जुदा हो रहे हैं तुम अपने उत्तरदायित्व के भारी बोझ से थकोगे नहीं, पस्त नहीं होगे, हार नहीं मानोगे। मुझे तुम पर विश्वास है। दि. २३.०३.१९३१ को तीनों रत्न भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु आखरी हमसफर बन इतिहास को अमर कर गये।

"कभी वह दिन भी आयेगा कि हम आजाद होंगे,
ये जमीं अपनी होगी, आसमां अपना होगा।
शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।" ●

पृष्ठ ८ का शेष भाग... **कैसे होगा राष्ट्र निर्माण?**

गणतन्त्र कहे अथवा गणन तन्त्र अर्थात् गणना तन्त्र गणना जिसके पक्ष में वही इस भारत का भाग्य विधाता है। हमारे एक आर्य जी तो इस गणतन्त्र के स्थान पर गन तन्त्र प्रचारित कर रहे हैं अर्थात् जिसके हाथ में गन उसी का तन्त्र बात बहुत हद तक सही भी है। भीड़ तन्त्र का ताजा उदाहरण जल्ली कट्टू के विषय में हमारे सामने आया। निरिह मूक पशुओं को मनुष्य के अपने मनोरंजन हेतु आपस में लड़वाना। इस लड़ाई में अनेक व्यक्तियों का असमय मौत के मुंह में चले जाना तथा घायल हो जाना। यह कैसी परम्परा है? इस परम्परा को उच्चतम् न्यायालय जो कि न्याय के क्षेत्र की हमारी सर्वोपरि संस्था है के द्वारा इस आयोजन को महत्वहीन तथा निरर्थक जानकर प्रतिबन्धित कर दिया गया, किन्तु इस आयोजन को ही हमारी विरासत, सांस्कृतिकता समझने वाली, मानव मात्र को मनुष्य बनाने वाली वैदिक संस्कृति के ज्ञान से विहिन-अबोध, अज्ञानी भीड़ जो आज संख्या में बहुल है कि समझ में सर्वोच्च अदालत का प्रतिबन्ध नहीं आया। बस फिर क्या था वही जो होता है चक्काजाम, ट्रेनों को रोकने की कोशिश, आगजनी, लूटपाट। आखिर भीड़ कैसी भी हो उस भीड़ का उद्देश्य नकारात्मक हो या सकारात्मक। उसकी फिक्र करना तो राजनैतिक दलों का काम है, क्योंकि वे भीड़ की दया दृष्टि से ही तो सरकार बनाते हैं और भीड़ अज्ञानी है तो उन्हें सरकार बनाने में आसानी है। भीड़ ज्ञानी बन गई तो सरकार बनाना कठिन हो जाएगा। अत: भीड़ मूर्खता के ही काम करते रहना चाहिए। इस कारण राजनैतिक दल विशेषकर सरकार को भीड़ का ध्यान रखना ज्यादा आवश्यक है। भीड़ के इस आक्रोश पर राज्य क्या केन्द्र सरकारें तक हिल गई तत्काल जल्लीकट्टू के आयोजन को जारी रखने के लिए अध्यादेश पारित किया गया और सर्वोच्च न्यायालय के प्रतिबन्ध को भी निष्प्रभावी किया गया।

इन परिस्थियों में प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि कैसे होगा राष्ट्र निर्माण? क्योंकि किसी भी राष्ट्र का निर्माण चरित्रवान जिम्मेदार नागरिकों से होता है। अकर्मण्य, चरित्रहीन, दुर्व्यसनी, गैर जिम्मेदार, अपराधी तत्वों से नहीं चाहे वे कितने ही बड़े पदों पर पहुंच कर कितने ही बड़े कर्णधार क्यों न बन जाएं वे देश को आगे ले जाने के बजाए रसातल में ले जाने का ही कार्य करेंगे, अत: राष्ट्र निर्माण से पूर्व नागरिकों का निर्माण आवश्यक है।●

www.thearyasamaj.org

सबसे प्राचीन धर्म पुस्तक- वेद

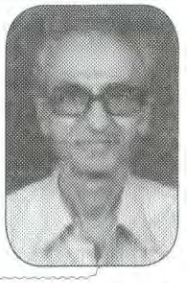

- नरसिंह सोनी आर्य -
डागा सेठिया मोहल्ला बीकानेर
चलभाष- ९२५२६१८२६४

वेद विश्व का सबसे प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ है। जिसको विश्व के सभी प्रबुद्ध व्यक्तियों ने जाना है व माना है। जिसमें मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए, बिना देश-काल-जाति बन्धन के कर्त्तव्यों और अकर्त्तव्यों (क्या करना तथा क्या नहीं करना है) आदि व्यवहार की शिक्षा दी गई है। जो धर्म-अधर्म ईश्वर आदि के संबंध में दर्शाई गई है। इसके अनुसार वर्तने पर ही विश्व में स्थाई सुख-शान्ति, समृद्धि रह सकती है। वेद चार हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अर्थववेद, उपवेद भी चार हैं - आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्व वेद, अर्थवेद। युनेष्को ने ऋग्वेद को विश्व की प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ की मान्यता दी है।

धर्म क्या है?- जो सभी के साथ न्यायोचित कर्त्तव्य का पालन करना अर्थात् मनुष्य मात्र के साथ सद् व्यवहार करना, यानि चोरी-जारी, हत्या, बलात्कार, अपहरण, भ्रष्टाचार आदि न करना ही धर्म के अन्तर्गत आते हैं। यानि हम अपने लिए जो व्यवहार दूसरों से चाहते हैं, वैसा ही व्यवहार हम दूसरों के साथ करें। इसलिए तो कहा है '**सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित दुःख भाग भवेत्।।**' नियम में, मर्यादा में चलना ही धर्म है। स्कूलों-कॉलेजों-गुरुकुलों-अस्पतालों-पुलिस-सेना-संसद-विधानसभा-घर-गृहस्थ आदि में सभी जगह नियम बने हुए हैं। उनका पालन करना ही धर्म है। धर्म केवल पूजा पद्धति का नाम ही नहीं है। वैदिक धर्म में वेद का गलत अर्थ करने पर अलग-अलग मत-पंथ का पादुर्भाव हुआ जो आज धर्म के नाम से संबोधित होने लगे। ऐसे धर्मों की बातों को ज्ञान-विज्ञान और अपने आत्मा की कसौटी पर कसकर (परखकर) मानना चाहिए। जो बातें मानवता के खिलाफ हो ऐसी बातों को त्याग देना चाहिए। यानि जिन बातों में स्वार्थ-दूसरों को दुःख देने की भावना हो, उनको त्याग देना चाहिए। मनुष्य मात्र ही नहीं, प्राणी मात्र के कल्याण की भावना का व्यवहार ही श्रेष्ठ होता है। यही धर्म है जो अपने को हिन्दू-मुस्लिम-ईसाई कहते हैं उनमें ऊपर लिखी मान्यताओं के विरूद्ध है तो वह पंथ-संप्रदाय है, धर्म नहीं है।

ईश्वर क्या है?- ईश्वर क्या है, वह है या नहीं है, है तो उसको कैसे पहचानें-साक्षातकार करें। ईश्वर को जानना एक गूढ़ रहस्य है। वह मन्दिर में है या मन मन्दिर में। सर्वव्यापक है या एक देशीय है। मूर्ति में है या निराकार है। इन बातों को जानने के लिए अन्दर यानि आत्मा के पास जाना पड़ेगा क्योंकि आत्मा के पास ही परमात्मा का निवास है। इसको जाननें के लिए समझना होगा कि जिस समय हम कोई गलत काम यानि-चोरी, हत्या, बलात्कार आदि करने की चेष्टा करते हैं, तो अन्दर बैठा हुआ परमात्मा हमको गलत काम नहीं करने की प्रेरणा देता है। हम उसकी आवाज को पहचानते नहीं हैं और गलत काम कर बैठते हैं। यह सब पवित्र आत्मा जिसकी है, उसे अनुभव होता है। जिनकी आत्मा अपराध करते-करते मलीन हो जाती है, उसे कुछ मालुम नहीं पड़ता। इस प्रकार हम परमात्मा को जान सकते हैं। वह शक्ति रूपा है। यह जगत् उसी की रचना है। ये भिन्न-भिन्न प्राणी, जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, फल-फूल, कन्द-औषधि, समुद्र-नदी, पहाड़-आकाश-अन्तरिक्ष आदि सभी परमात्मा की रचना हैं। जीवन और मृत्यु की चाबी उसी के हाथ में है। इसीलिए उसकी सत्ता को स्वीकार करना ही श्रेष्ठ है।●

वेदों में प्रक्षेप (मिलावट) नहीं होने का कारण

- गोविन्दराम आर्य -
आर्य समाज देपालपुर
चलभाष- ०९४२४०१२४७१

वेद ही एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें आज तक कोई प्रक्षेप (मिलावट) न कर सका इसमें कारण रहा वेद की सुरक्षा के विशेष उपाय। इन उपायों में वेद को बिना किसी विशेष स्वार्थ के विभिन्न प्रकार से कण्ठाग्रस्त करना रहा है।

वे इस प्रकार है (१) संहिता-पाठ (२) पद-पाठ (३) क्रम-पाठ (४) जटा-पाठ (५) पुष्प माला-पाठ (६) क्रम माला-पाठ (७) शिखा-पाठ (८) रेखा-पाठ (९) दण्ड-पाठ (१०) रथ-पाठ (११) ध्वज-पाठ (१२) घन-पाठ (१३) त्रिपद घन-पाठ

ऋषि व्याडि ने इन पाठों को, नियमों को अपने ग्रन्थ विकृति वल्ली में विस्तार पूर्वक दिया है। दूसरा कारण वेदों की पद संख्या, छन्द संख्या और मन्त्रानुक्रम से छन्द, देवता, ऋषि आदि को बताने के लिए अनेक सर्वानुक्रमणियां तैयार की गई, जिनमें शोनकानुक्रमाणी, वृहद, देवता प्रातिशाख्य सूत्र आदि रहे। इतने सब उपायों के होते हुए वेदों में किसी प्रकार का प्रक्षेप (मिलावट) असम्भव रहा। रामायण, महाभारत, पुराण, मनुस्मृति आदि में वेदों के अनुसार उपरोक्त नियम व उपाय न होने से आसानी से ग्रन्थों में मिलावट की गई उदाहरण जैसे मनुस्मृति में कुल अध्याय १२ कुल उपलब्ध श्लोक २६८५ प्रक्षिप्त श्लोक १४७१ मौलिक शेष श्लोक १२१४ हैं। इसी प्रकार महाभारत का मूल नाम जय संहिता है जो व्यासजी ने लिखा था। और उसमें मात्र ४४०० श्लोक थे जो बाद में भारत और अब महाभारत है, जिसमें एक लाख से अधिक श्लोक पाये जाते हैं। इसी प्रकार अधिकांश लोग रामचरित मानस जीसके रचयिता तुलसीदास हैं को ही रामायण समझते मानते तथा कहते हैं। जबकि मूल रामायण के लेखक वाल्मीकि हैं और वह राम के जीवन काल में वाल्मीकि द्वारा लिखा गया था। इसमें भी उत्तर काण्ड प्रक्षिप्त कर दिया गया जो कि वाल्मीकि जी ने लिखा ही नहीं था। ●

www.thearyasamaj.org

चिकित्सकों का चिकित्सक की वेदना

जांगिड कुलभूषण- **रामफलसिंह आर्य**
वरि. उप प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा हि.प्र.
सुन्दरनगर, जनपद-मण्डी
चलभाष- ०९४१८४७७७१४

आदरणीय प्रबुद्ध पाठकगण को यह जिज्ञासा हो सकती है कि वेदना तो रोगी को हुआ करती है, चिकित्सक को नहीं, फिर आप यह कैसा शीर्षक दे रहे हैं कि जिसमें रोगी की वेदना का वर्णन नहीं है। अपितु चिकित्सक की वेदना का उल्लेख है। यह कौन और कैसा चिकित्सक है जो रोगी के स्थान पर स्वयं ही पीड़ित है? आपकी शंका उचित है बन्धुओं रोगी को जो वेदना होती है वह तो सब को विदित हो जाती है परन्तु चिकित्सक की जो पीड़ा है वह यद्यपि किसी को विदित नहीं होती तथापि उसकी व्यथा रोगी की अपेक्षा उच्चकोटि की होती है। रोगी की पीड़ा व्यक्तिगत है, चिकित्सक की पीड़ा व्यक्तिगत न होकर परोपकार के लिये होती है, यह पीड़ा सभी चिकित्सकों को नहीं हुआ करती। संसार में कुछ विरले ही चिकित्सक होंगे जिनको यह वेदना व्यथित करती है। जब वे अपने समक्ष किसी को पीड़ा से कराहते हुए देखते हैं, जब अन्याय एवं अत्याचार से, शोषण से, अज्ञान एवं अविद्या से ग्रस्त, त्रस्त मानव को सिसकते हुए देखते हैं तो परोपकार की, दया की ऐसी धारा उनके मन में प्रवाहित होती है जो उनकी चिकित्सा के लिये उन्हें चिन्तित कर देती है, व्यथित कर देती है। ऐसा चिकित्सक बड़ी ही सूक्ष्मता से रोगों की पहचान करता है, उनका निदान ढूंढ लेता है। और सत्य का अर्थ का प्रकाश करते हुए यह घोषणा करता है कि **इस देश को रोग हुआ है, जिसका औषध तुम्हारे पास नहीं है** अर्थात् मेरे पास नहीं है। (सत्यार्थ प्रकाश ग्यारहवां सम्मुलास) अब आप समझ गये होंगे कि चिकित्सक कौन है, रोग क्या है और चिकित्सा कैसी है। जी हां! बन्धुओं! चिकित्सक है प्राणी मात्र के प्रति संवेदना रखने वाले, अपने प्राचीन ऋषि मुनियों के प्रति अपार श्रद्धा रखने वाले, स्वदेश के गौरव श्रेष्ठ वैदिक परम्पराओं, उच्चतम जीवन मूल्यों की पुनः स्थापना करने वाले, संसार में किसी पर भी अत्याचार को सहन न करने वाले, अनुपम योगी महामनीषि, वेदोद्धारक, परमपिता परमात्मा की अनुपम कृति, हमारे लिये ईश्वर का अद्भुत वरदान परोपकार का समुद्र जिनके हृदय में ठाठें मार रहा था, सदियों से तड़पते हुए मनुष्यों को देख कर जिनका हृदय उनके लिये कराह उठा, ऋषियों की टूट गई परम्परा जो एक कड़ी बनकर जुड़े, जिन्हें देखकर पूरा संसार अवाक्, मुख पर हाथ रखकर उनकी ओर निहारने लगा, **रूप में, बल में, विद्या में, तपस्या में, क्षमा में जिनके समकक्ष कोई अन्य दृष्टिगोचर नहीं होता, ऐसे आदरणीय वन्दनीय, पूज्यनीय महर्षि दयानन्द जी महाराज! ऐसे युगपुरुष के श्री चरणों में शत-शत नमन।**

तो आईये जानें, उनके द्वारा पहचाने गये रोगों को, चिकित्सा को और चिकित्सक की वेदना को। बात उस समय की है जिस समय मैं पूज्य गुरुवर स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज के द्वारा लगाये गये शिविर में उद्गीथ साधना स्थली (हिमाचल) में प्रशिक्षणार्थ गया हुआ था। स्वामी जी प्रतिदिन कोई न कोई गम्भीर विषय उठाकर ऐसा घुमाते थे कि हम देखते रह जाते कि ये विचार उनके मस्तिष्क में उठ कहां से रहा है। एक दिन वे सत्यार्थ प्रकाश का विषय ले रहे थे और उस दिन इस महान चिकित्सक की वेदना का वर्णन करते हुए ग्यारहवें सम्मुलास में अंकित ऋषिवर के उपरोक्त शब्दों को उठाया। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ा तो हमने भी कई बार था परन्तु उस वेदना को हम उतना नहीं जान पाये जो स्वामी जी महाराज ने हमारे सामने रखी। अब रोग हो गया है तो उन रोगों की पहचान भी महर्षि जी के शब्दों में करनी होगी और उनका उपचार भी वे ही बतायेंगे। क्योंकि रोगों का वर्णन करते समय ऋषिवर की यह घोषणा भी है कि इसका औषध तुम्हारे पास नहीं अर्थात् मेरे पास है,

बोध या प्रबोध

बोध की कथा कहां - वहां प्रबोध हो गया था।
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का शुभ शोध हो गया था।।
सदियों से जाति का भाग्योदय विहान था।
अज्ञान के दनुज का सर्वत्र अवसान था।।
मनुज और मनुजता के कल्याण का जो मन्त्र था।
वैदिक स्वराज का भी वह प्रकाम्य तन्त्र था।।
यह सूक्त मूल की थी शंकर सुजान की थी।
यह प्रबुद्ध चेतना थी ज्योति प्रबोध की थी।
सम्मान मानवों का उद्देश्य सर्वत्र होगा।
सेवा ही धर्म होगा, कर्म पूजा का मन्त्र होगा।।
तब राष्ट्र की समुन्नति जन-जन की भावना में।
अभिप्रेत धारण से होगी शुभ कामना में।
यह प्रेरणा की ज्योति ऋषि हृदय में जली थी।
परमार्थ की ये कलियां ऋषि उद्यान में खिलीं थी।
शिवरात्रि का सन्देश प्रबोध बन के आया।
ये वेदभिक्षु को भी सत्य पथ पे ही लाया। शमित्योम्

रचयिता-स्वामी ब्रह्मानन्द 'वेदभिक्षु'
आर्य समाज बिहारीपुर
जिला-बरेली (उ.प्र.)

www.thearyasamaj.org

आईये पहले रोग जान लें। इन रोगों का वर्णन सत्यार्थ प्रकाश में यत्र-तत्र हुआ है, उनको एक स्थान पर देखना है तो यूं देखेंगे -

१. आपस की फूट, २. मतभेद, ३. ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, ४. विद्या न पढ़ना, न पढ़ाना, ५. बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, ६. विषयासक्ति, ७. मिथ्याभाषणादि कुलक्षण, ८. वेद विद्या का अप्रचार।

ये वे रोग हैं जो सदियों से इस आर्यवर्त्त देश को अन्दर ही अन्दर जाकर खोखला करते चले गये। रोगी रोग में ही आनन्द की अनुभूति करने लगे, उन्हें ईश्वरीय देन समझ कर उन्हें भोगने में ही अपना कल्याण मान बैठे। यद्यपि कुछ अन्य महापुरुषों ने भी कुछ प्रयास किये परन्तु एक तो उनके वे प्रयास समग्र न होकर एकांगी थे और दूसरे उनके प्रयास का आधार सुदृढ़ न था अत: उनके प्रयास भी अस्थाई एवं एकांगी ही रहे। महर्षि दयानन्द जी महाराज ही वे प्रथम व्यक्ति थे जिनके उपचारों का आधार इतना सुदृढ़ एवं स्थायी था कि बड़े से बड़ा झंझावात भी उनका कुछ न बिगाड़ सका अर्थात् **उनका आधार था ईश्वरीय वाणी वेद! वेद के आधार पर उन्होंने उन लोगों के उपचारार्थ ओषध प्रदान की और सम्पूर्ण सत्यार्थ प्रकाश एवं संजीवनी के रूप में प्रकाशित किया।** वैसे तो आप रोग ढूंढने लगेंगे तो अनेकों ही मिल जायेंगे परन्तु मुख्य रूप से उपरोक्त ही है शेष दोषों की गणना इन्हीं के अन्दर हो जाती है। अब जानते हैं, इनकी ओषध! तो बन्धुओं! जैसे-जैसे रोग है वैसे-वैसे ओषध भी है।

प्रथम दो रोगों की ओषध अर्थात् आपस की फूट और मतभेद की ओषध है प्रथम सम्मुलास, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना और न पढ़ने का ओषध है द्वितीय एवं तृतीय सम्मुलास, बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह और विषयासक्ति का ओषध है चतुर्थ सम्मुलास और मिथ्याभाषणदि कुलक्षण एवं वेद विद्या का अप्रचार का औषध है पंचम सम्मुलास।

लोगों ने अविद्या में फंसकर अपने लिये पृथक-पृथक ईश्वर बना लिये, कोई शैव बना, कोई वैष्णव, कोई देवी का उपासक बना, कोई किसी का, कोई किसी का। इस रोग ने सबको बांटकर रख दिया। एक सम्प्रदाय ने दूसरे से द्वेष करना प्रारम्भ किया और घृणा और विद्वेष की ज्वालाओं ने न जाने क्या-क्या निगल लिया। इसलिए प्रथम सम्मुलास ऋषिवर ने इस आशय के साथ लिखा कि ये सब नाम ईश्वर ही के हैं। परन्तु अलग-अलग गुण होने के कारण से। सबका उपास्यदेव एक ईश्वर ही है और उसका नाम ओम् है।

बालकों को प्रारम्भ से ही उत्तम शिक्षा घर पर और फिर आचार्य के कुल में दी जाये। कोई भी बालक विद्याप्राप्ति का समय आने पर अपने घर में न रहने पाये अपितु आचार्य का गुरुकुल ही उसका स्थान हो जहां पर बिना किसी भेदभाव के सबको तुल्य भोजन एवं वस्त्रादि की व्यवस्था हो। जहां पर रहकर सभी लोग न केवल विद्वान बने अपितु पुरुषार्थी भी बनें। ब्रह्मचर्य की कठोर भट्टी में तप कर सभी तपस्वी एवं सदाचारी बनें। विद्या कैसी हो, पढ़ने का स्थान कैसा हो, पढ़ाने वाले कैसे हों, उनका परस्पर का व्यवहार कैसा हो, तृतीय सम्मुलास में इसका बहुत ही सुन्दर निरुपण अनेकों प्रमाण देकर किया है। आज जबकि शिक्षा एक बहुत बड़ा व्यवसाय बन चुका है और भयंकर लूट मची है, लाखों रुपये प्राथमिक कक्षाओं में ही बच्चे की शिक्षा के ऊपर प्रतिवर्ष व्यय करके भी माता-पिता को वह नहीं मिलता जिसकी उन्हें आशा होती है। उच्छृंखल वृत्ति के विद्यार्थी न तो अपना कुछ कल्याण कर पाते हैं, न माता-पिता का, न समाज और न राष्ट्र का ही। कितने ही आपराधिक कृत्यों में फंस कर सबके लिये दु:ख का कारण बन जाते हैं। इन सभी रोगों का उपचार है ये दूसरा और तीसरा सम्मुलास।

युवक एवं युवती पूर्ण युवावस्था आने पर गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार स्वैच्छा से अपने योग्य जीवन साथी चुनकर श्रेष्ठ सन्तान को जन्म दें और राष्ट्र के उत्थान में अपना पवित्र योगदान प्रदान करें। विवाहोपरान्त भी अति विषयों का सेवन न करके जितेन्द्रिय रहकर, पुरुषार्थ युक्त होकर जहां स्वयं की कामनाओं की पूर्ति करें वहीं भरपूर ऐश्वर्य की प्राप्ति करके राष्ट्र को भी उन्नत करें। पति पत्नी का परस्पर व्यवहार कैसा हो, किस का विवाह किसके साथ किस रीति से करें, समाज निर्माण की यह अद्भुत योजना ही चतुर्थ सम्मुलास में अनेकों रोगों का ओषध आनन्दकन्द ऋषिवर प्रदान करते हैं।

पांचवे सम्मुलास में वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम का वर्णन करते हुए सहज ही में ऐसी व्यवस्था देते हैं कि जिससे श्रेष्ठ, सदाचारी, पक्षपात रहित, धार्मिक, विद्वान प्रचारकों द्वारा समाज से दोषों को दूर करने का कार्य किया जा सके और ईश्वरीय वाणी वेद का प्रचार सर्वत्र होता रहे। यह ऐसा महान कार्य है कि जिसको व्यापक स्तर पर किया जाना अति आवश्यक है। आर्यावर्त्त के सन्यासी तो ऐसे प्रचारक होते थे जो सम्राटों को भी उनकी त्रुटियां बताकर डांटने का साहस रखते थे और सम्राट भी उनसे भय खाते थे। परिणामत: दोष स्वत: ही दूर हो जाया करते थे। फिर सातवें सम्मुलास से लेकर दसवें सम्मुलास तक अत्यन्त, पुरुषार्थ एवं आरोग्य का लाभ करके चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना का कार्य है। ग्यारहवें सम्मुलास से चौदहवें तक पूरे भूमण्डल पर वैदिक धर्म का प्रचार करने की योग्यता प्राप्त कर कृणवन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य प्राप्त करने का आदेश ऋषिवर ने दिया है।

मान्य पाठकगण! तनिक विचारिये कि यदि कहीं हमारी व्यवस्था सत्यार्थप्रकाश के अनुसार हो जाये तो संसार का कायाकल्प होने में कितनी देर लगेगी? कैसी उत्तम औषधि उस दिव्य दृष्टि के स्वामी ने हमें प्रदान की है। जिन रोगों को जानकर उन्हें दूर करने के लिए वह चिकित्सक अपनी रातों की निद्रा खो देता है, जिन रोगों पर वह आंसू बहाता है, जो अनेक विध कष्ट उठाकर, अपमान सहकर भी किसी से कोई शिकायत नहीं करता, बस देश का रोग दूर होना चाहिए यही कामना करता है। उसकी वेदना का क्या हम लोग अनुमान लगा सकते हैं? जो आर्यावर्त्त कभी विश्व गुरु था, सोने की चिड़िया जिसे लोग कहते थे, जिसकी मिट्टी को चन्दन समझ करके अपने माथे पर तिलक लगाते थे। उसकी दीन-हीन दशा देखकर वह महान चिकित्सक, वह उच्च कोटि का योगी, वह वीतराग संन्यासी कितना व्यथित था इसका अनुमान भी हम लोगों को नहीं है। हां! जिन्होंने उसकी वेदना का थोड़ा सा भी अनुभव किया वह कोई गुरुदत्त बना, कोई लेखराम बना, कोई श्रद्धानन्द बना तो कोई स्वतन्त्रानन्द बना।

आर्यों! आओ हम भी उसकी वेदना को समझें और इस महान भार को जो हमारे पूर्वज हमारे कन्धों पर छोड़ गये हैं ठीक प्रकार से वहन करें। ●

www.thearyasamaj.org

प्राय: सामान्यजन बगैर सोचे-विचारे मिथ्या आरोप लगाते हैं कि आर्य समाजी ईश्वर को नहीं मानते। जबकि वास्तविकता यह है कि ईश्वर को पूर्णरूपेण सत्य स्वरूप में आर्य समाजी ही मानते हैं, क्योंकि वे ईश्वर के सत्य स्वरूप को जानते भी हैं। ईश्वर का सत्य स्वरूप वही व्यक्ति जान सकता है जिसने वेद को जान लिया है और आर्य समाजियों के ज्ञान का आधार वेद है इसलिए आर्यसमाजी ईश्वर को न केवल मानता है अपितु जानता भी है, जबकि सामान्यजन ईश्वर को मात्र मानता है, जानता नहीं है। तो आईये ईश्वर को मानने के साथ-साथ उसका सत्य स्वरूप जानें भी।- सम्पादक

गायत्री मन्त्र

- मृदुला अग्रवाल -
१९ सी, सरतबोस रोड, कोलकाता-
चलभाष- ९८३६८४१०५१

"ॐ भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोन: प्रचोदयात्।"

"**गायत्री मन्त्र**" चारों वेदों की आत्मा है। वेदों में इसे "वेदमाता" भी कहा गया है। चारों वेदों के हजारों मन्त्रों में "**गायत्री मन्त्र**" सर्वश्रेष्ठ है। यह परमात्मा का गुणगान कर उनकी प्रशंसा करता है। इसे "**सावित्री मन्त्र**" भी कहा जाता है। उपनयन के समय ब्रह्मचारी को आचार्य इसी सावित्री मन्त्र से उपदेश करते हैं। यह मन्त्र उनके शिष्यों के प्राणों की रक्षा करता है। "**गायत्री मन्त्र**" में २४ अक्षर हैं। आठ-आठ अक्षरों के तीन पद हैं। इनका वर्णन बृहदारण्यक उपनिषद् में विस्तृत रूप से किया गया है। "**गायत्री मन्त्र**" का ध्यान एवं उच्चारण करने से हम सब बुराईयों से दूर हो जाते हैं। अगर हम "गायत्री मन्त्र" को अपने मन में पूर्णरूप से आत्मसात कर लेवें तो प्रभु अपनी सर्वस्व चमकती हुई प्रभा से हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग में प्रेरित अवश्य करते हैं।

"**गायत्री मन्त्र**" की शक्ति के सम्बन्ध में श्री ओमप्रकाश बजाज (मध्य प्रदेश) ने "**वैदिक संसार**" पत्रिका (जून २०१६) में लिखा है कि अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ. हॉवर्ड स्टीनजेरिल ने विश्वभर के सभी धर्मों के मन्त्र, भजन, प्रार्थना, सूत्रों का संकलन करके, उनका "शरीर विज्ञान प्रयोगशाला" में प्रभाव परीक्षण किया वैज्ञानिक आधार पर हमारा "गायत्री मन्त्र" सर्वाधिक प्रभावशाली एवं लाभप्रद सिद्ध हुआ।

"**गायत्री मन्त्र**" के प्रत्येक शब्दों की व्याख्या या अर्थ:-

"**ॐ प्रणव = सर्वव्यापक**" *Omnipresent* , सबका रक्षक *all proteeting* ॐ ईश्वर का सर्वोत्तम नाम है, क्योंकि इसमें जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक ओ३म् समुदाय हुआ है, इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं - जैसे "**अकार**" से विराट्, अग्नि और विश्वादि। "**उकार**" हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि। "मकार" से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है। उसका ऐसा ही वेदादि सत्यशास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है कि प्रकरणानुकूल ये सब नाम परमेश्वर के ही हैं। - सत्यार्थ प्रकाश, प्रथम समुल्लास

ॐ के अतिरिक्त बाकी जितने नाम हैं वे सब ॐ के ही विशेषण हैं, जो उसके सद्गुणों का बखान करते रहते हैं, इसीलिए इसको सर्वगुणों का धाम भी कहते हैं। गीता, अध्याय-७, श्लोक-८ में श्रीकृष्ण ने कहा भी है, **सर्ववेदेषु प्रणव:** अर्थात् मैं सम्पूर्ण वेदों में ओंकार हूं। ओंकार नाम से परमात्मा का ग्रहण होता है।

"**हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।।**
योड़सावादित्ये पुरुष: सोडसावहम्।। ओ३म् खं ब्रह्म"
-यजुर्वेद, अध्याय-४०, मन्त्र १७।।

भावार्थ :- सब मनुष्यों के प्रति ईश्वर उपदेश करता है कि हे मनुष्यों! जो मैं यहां हूं वही अन्यत्र सूर्यादि लोक में जो अन्य स्थान सूर्यादि लोक में हूं। वहीं यहां हूं सर्वत्र परिपूर्ण आकाश के तुल्य व्यापक मुझसे भिन्न कोई बड़ा नहीं, मैं ही सबसे बड़ा हूं। मेरे सुलझणों से युक्त पुत्र के तुल्य प्राणों से प्यारा मेरा निज नाम "ओ३म्'यह है। जो मेरा प्रेम और सत्याचरण से शरण लेता है। अन्तर्यामीरूप से मैं उसकी अविद्या का विनाश कर उसके आत्मा का प्रकाश करके शुभ, गुण, कर्म, स्वभाव वाला कर सत्यस्वरूप का आवरण स्थिर कर योग से हुए विज्ञान को दे और सब दु:खों से अलग करके मोक्ष सुख को प्राप्त कराता हूं।

ईश्वर ही ॐ है। ॐ शब्द से आत्मा को सत्यबोध होता है। ॐ अविनाशी है कभी नष्ट नहीं होता। सारे वेद, धर्मानुष्ठान करने वाले तपस्वी, ब्रह्मचारी आदि जिसकी प्राप्ति की इच्छा करते हैं, उसका नाम ॐ है। गीता **अध्याय-८, श्लोक-११एवं १३** के अनुसार भी - वेद के जानने वाले विद्वान सच्चिदानन्दघन परमपद को "**ओंकार**" नाम से कहते हैं। जो पुरुष ॐ ऐसे एक अक्षर रूप ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ और उसके अर्थ स्वरूप परमात्मा का चिन्तन करता हुआ शरीर को त्यागता है वह पुरुष परमगति को प्राप्त होता है।

'**भू:' = प्राणदाता,**

सब प्राणियों को जीवन प्रदान करने वाला, प्राणों का प्राण:, प्राण विधाता है। सबके प्राणों की रक्षा हेतु अन्न एवं औषधि आदि निर्मित करने वाला परमेश्वर ही होता है। **यजुर्वेद, अध्याय-४०, मन्त्र-१७** में जो सूर्य में भी व्यापक पुरुष अर्थात् परमात्मा का निज नाम ॐ बताया है, उससे ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे गायत्री मन्त्र का देवता सविता भी है। एवं सविता का अर्थ सूर्य भी होता है और उसी सूर्य को परमात्मा ने ही निर्मित किया है, इसीलिए सूर्य की धूप का विधिवत् सेवन करने से दुर्गन्धादि जनित दुष्ट जन्तु रोगकारकों के दोषों को भून डाला जाता है। सूर्य की धूप और प्रकाश से निन्द्रा, आलस्यादि तमोगुण के कार्यों का नाश भी होता है। सूर्य द्वारा वर्षा और यवगोधूमादि औषधि और वट पिप्पलादि वनस्पति उगते हैं जिनसे अन्न होता है। अन्न हमारे प्राणों की रक्षा करने में कितना आवश्यक है। यह हम सभी जानते हैं। **यह सारा वृत्तान्त सामवेद, मन्त्र १४६२ के अनुसार है।**

परमात्मा का स्मरण रूपी पुष्प हमारे प्राणों को सुगन्धित करता है। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हमारे प्राणों को निज शरण में लीजिये।

"**भूरिती वै प्राण:**" "**य: प्राणयति चराऽचरं जगत् स भू: स्वयम्भूरीश्वर:**" अर्थात् जो सब जगत् के जीवन का आधार प्राण से भी प्रिय और स्वयम्भू है उस प्राण का वाचक हो के "भू:" परमेश्वर का नाम है।

www.thearyasamaj.org

-सत्यार्थ प्रकाश, सम्मुलास -३ ।।

"भुवः" = दुःखहर्ता Desteroyeeer of meieseeriees, सब दुःखों एवं क्लेशों से हमें छुड़ाने वाला। हमारी पाप प्रवृत्तियों को हर लेने वाला। संसार में तीन प्रकार के दुःख है-

(१) **आध्यात्मिक-** जो आत्मा एवं शरीर में अविद्या राग- द्वेष, मूर्खता और ज्वर पीड़ित से होते हैं। (२) **आधिभौतिक** - जो शत्रु व्याघ्र और सर्पादि से प्राप्त होता है और (३) **आधिदैविक** = जो अतिवृष्टि, अतिशीत, अति उष्णता, मन और इन्द्रियों की अशान्ति से होता है।

"भुवः" इन तीनों प्रकार के क्लेशों और दुःखों को दूर करके हमें कल्याणकारक कर्मों में सदा प्रवृत्त करता है। पराधीनता से दुःखों की प्राप्ति होती है, इसलिए "**भुवः**" हमें स्वाधीनता प्रदान करता है, जिससे हमें सुख मिलता है। ऐहिक दुःखों में अविचलित रहना सिखाता है। "**भुवरित्यपानः**" "**यः सर्व दुःखमपानयति सोऽपानः**" जो सब दुःखों से रहित, जिस के संग ये जीव सब दुःखों से छूट जाते हैं इसलिए उस परमेश्वर का नाम "**भुवः**" है- सत्यार्थ प्रकाश, सम्मुलास-३ ।।

"**स्वः**" **सुखकर्ता, स्वयं सुखस्वरूप एवं सबको सुख देने वाला।** Full of delight and gives delight to his devotees, giver of peace and bliss, अपने उपासकों को सुख प्रदान करता है। "**यो मोदयति स देवः**" जो स्वयं आनन्दस्वरूप है और दूसरों को आनन्द देता है। सबके मन को आन्तरिक शान्ति प्रदान करता है। शान्त मन ही अपेक्षाकृत तेजस्वी मेधा प्रदान करती है। किसी भी दुःख से विचलित नहीं होता एवं मनुष्य का आध्यात्मिक विकास करता है। मनुष्य दिव्यगुणों की प्राप्ति के लिये ज्ञानस्वरूप परमेश्वर का ध्यान करता है। सर्वोपरि विराजमान, मनन योग्य वह परमेश्वर सर्वव्यापक होकर स्थिर है। उस प्रकाशस्वरूप का बल सर्वत्र प्रकाशमान है। वह ही महान देव अज्ञान अन्धकार से हमें बचाता है। "**स्वरिति व्यानः**" "**यो विविधं जगद् व्यानयति व्याप्नोति सव्यानः**" **जो नानाविध जगत् में व्यापक होकर, सबको धारण करता है इसलिए उस परमेश्वर का नाम "स्वः" है। -सत्यार्थ प्रकाश, समुल्लास-३।।**

छन्दोग्योपनिषद में इन तीनों '**भूः**', '**भुवः**', '**स्वः**' का अर्थ अस्ति, भाति, और प्रीति है। अर्थात् Being Beeoming Bliss ये तीनों '**महाव्याहृति**' कहलाती है। सब वेदों में 'गायत्री मन्त्र' व्याहृति समेत नहीं है, सिर्फ **यजुर्वेद, अध्याय-३६, मन्त्र-३** में यह तीनों व्याहृतियों के साथ है, यजुर्वेद के इस मन्त्र का भावार्थ :-

"जो मनुष्य कर्म, उपासना और ज्ञान सम्बन्धिनी विद्याओं का सम्यक् ग्रहण कर आत्मा को युक्त करते हैं तथा अधर्म, अनैश्वर्य और दुःखरूप मलों को छुड़ाकर धर्म ऐश्वर्य और सुखों को प्राप्त होते हैं, उनको अन्तर्यामी जगदीश्वर आप ही धर्म के अनुष्ठान और अधर्म का त्याग कराने को सदैव चाहता है।"

"**तत्**" = वह, आप, उसी परमात्मा के स्वरूप को हम लोग।

"**सवितुः**" = सब जगत् का उत्पादक (उत्पन्नकर्ता) है। eveater of the world. गीता, अध्याय-१०, श्लोक-८ में श्रीकृष्ण ईश्वर के विषय में कहते हैं कि "**मैं सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति का कारण हूं।**" सूर्यादि प्रकाशकों के भी प्रकाशक the illuminater of all the luminous bodies like the sun. '**यः सुनोत्यु- त्पादयति सर्वं जगत् स सविता तस्य**' सकल ऐश्वर्ययुक्त जगत् का उत्पादक एवं निर्माता। **- सत्यार्थ प्रकाश सम्मुलास-३।।**

"**वरेण्यम्**= ग्रहण और ध्यान करने योग्य, अतिश्रेष्ठ, वरण करने योग्य, प्राप्त होने योग्य, The lest to become one with him, 'वर्तुमर्हम' उस परमात्मा का जो स्वीकार करने योग्य हो, अतिश्रेष्ठ हो। "भर्गः' तेजस्वरूप, परमात्मा का शुद्ध, पवित्र करने वाला चेतन, ब्रह्मस्वरूप, The pure and most predominating power of god जिस पूर्ण शुद्ध स्वरूप का भक्त लोग ध्यान करते हैं। विकारों (**षट्-विकार**) को भस्म करने वाला, अविद्यादि दुःखदायक विघ्नों एवं पापरूपी दुःखों के मूल को नष्ट करने वाला। burner of the sinful activities of human beings.

पंडित तुलसीराम स्वामी कृत सामवेद, मन्त्र-१४६२ (गायत्री मन्त्र) के अनुसार '**भर्गः**' शब्द से अन्न का ग्रहण जानिये। सूर्य द्वारा वर्षा, औषधि एवं वनस्पति उगते हैं। जिनसे अन्न होता है। इसलिए भी सूर्यजनित अन्न का विधिपूर्वक धारण, सेवन करना इस मन्त्र का उपदेश है।

"**देवस्य**" = देवों के देव supreme god. आत्माओं के प्रकाशक, समग्र ऐश्वर्य के दाता, the greatest bestouer of spiendid wealth (both matarial and spiritual) in the form of wisdom (ज्ञान), peace (शान्ति), and faith (विश्वास)। '**यो दीव्यति दीव्यते वा स देवः**' जो सर्व सुखों का देनेहारा, सर्वत्र विजय करानेहारा, जिसकी प्राप्ति की कामना सब करते हैं।

"**धीमहि**" = धारण करें, परमात्मा का हम ध्यान करें। meditate upon him आपकी कृपा से निरन्तर स्वयं के हृदय में आपका ही ध्यान करें, आपको ही धारण करें, जिससे हमारी बुद्धि को आत्मिक ज्ञान प्राप्त हो।

"**यः**"= आप, '**जगदीश्वर**' जो सविता देव परमात्मा।

"**नः**"='**अस्माकम्**' हमारी।

"**धियः**" बुद्धियों को सत्य वैदिक ज्ञान की प्रेरणा दें। '**बुद्धि**' right intellect .

"**प्रचोदयात्**= '**प्रेरयेत**' प्रेरणा करें अर्थात् बुरे कामों से छुड़ाकर उत्तम गुण, कर्म और स्वभाव में प्रवृत्त करें। inspire into the best actions, noble virtues and right behavior or nature.

ऋग्वेद, काण्ड-३, सूक्त-६२, मन्त्र-१० (गायत्री-मन्त्र) :-

भावार्थ- जो मनुष्य सबके साक्षी पिता के सदृश वर्त्तमान न्यायेश, दयालु, शुद्ध, सनातन, सबके आत्माओं का साक्षी परमात्मा की ही स्तुति और प्रार्थना करके उपासना करते हैं उनको कृपा का समुद्र सबसे श्रेष्ठ परमेश्वर, दुष्ट आचरण से पृथक करके श्रेष्ठ आचरण में प्रवृत्त करा और पवित्र तथा पुरुषार्थयुक्त करके धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त कराता है।

पी.एस. = कई तथाकथित पोंगापंथियों जिन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में पोप नाम दिया है के द्वारा सामान्यजन को भ्रमित कर रखा है कि "**गायत्री मन्त्र**" का उच्चारण करने का अधिकार सिर्फ द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य पुरुष-वर्ग का ही है, स्त्रियों व कन्याओं तथा शूद्रों को नहीं। परन्तु यह सरासर मिथ्या वक्तव्य है, क्योंकि "**गायत्री-मन्त्र**" वेदों का सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है तथा मनुष्यमात्र के लिए है। वेदों में कहीं नहीं लिखा है कि वेद-मन्त्रों को सिर्फ पुरुष-वर्ग ही उच्चारित कर सकता है। ●

www.thearyasamaj.org

"परमात्मा और प्रकृति तथा जीव"

वेद में ईश, प्रकृति तथा जीव तीनों ही अलग बताये हैं।
तीनों की अलग सत्ताओं में परमात्मा की सत्ता सर्वोपरि है।।
जब कोई न था प्रभु के गर्भ में विलुप्त थे, सर्वत्र अंधेरा था।
सर्वप्रथम प्रभु के अनन्त आकाश शून्य खाली बनाया था।।

जिसमें समस्त प्रकृति और जीव की माया को रचा था।
असंख्य आकाश पिण्डों निहारिकाओं-आकाश गंगाओं को बनाया।।
फिर सूरज, पृथ्वी, चांद, तारे-सितारे नक्षत्र ब्लेक होल को बनाया।
अग्नि, वायु, जल, मेघ-विद्युत बनाकर, असंख्य जीवों को जन्माया।।

अन्न-वनस्पति, पेड़-पौधों, झरने सोते, नदी-झील, पर्वतों को बनाया।
इस धरा पर नभचर, जलचर, थलचर, धूप-चांदनी, वर्षा को बनाया।।
नाना प्रकार के फूल-फल, वनस्पति और जीवों से इस धरा को सजाया।
पृथ्वी को गलीचा, आकाश को तम्बू बनाकर मनमोहक स्वर्ग यहां बनाया।।

'रमदा' प्रभु की अपरम्पार, रहस्यमयी माया देखकर भारी चकराया।
आकाश का न आदि और न मध्य तथा न अन्त देख वेदों ने गाया।
सभी साकार-भौतिक को नश्वर इसी खाली में विलुप्त पाया।
परमात्मा अविनाशी नित्य सर्वव्यापी को निराकार सदैव पाया।।

जो भी दृश्य-अदृश्य देव रहे, उसी प्रभु ने यह खेल किया।
शुद्ध मन-बुद्धि और आत्मा ने निष्पापी मानव बनकर प्रभु दर्शन पाया।।
सदाचारी, निर्विकारी, निरोगी बनकर होश में सद्गति पाया।
प्रभु कृपा से ब्रह्ममय बनकर मानव देह में मृत्यु पर मोक्ष पाया।।

ब्रह्मा के 900 वर्षों तक इच्छामुक्त दिव्य जीव होकर परम आनन्द पाया।
फिर मोक्ष अवधि समाप्ति पर, सृष्टि के आदि में अमैथुन युवा मानव बन आया।।
परमात्मा की न्याय व्यवस्था में कोई हस्तक्षेप नहीं, वह न्यायकारी दयालु है।
प्रभु अकाय अजन्मा सर्वज्ञ अभय सर्वत्र अगोचर अनादि सर्वदृष्टा सर्वशक्तिमान है।।

वह पूर्ण अनन्त शून्य अभय सर्वेश्वर अन्तर्यामी सृजनहार-पालनहार है।
जीवों में सर्वश्रेष्ठ मानव जीव अन्त में बनाया है।।
जिसे विलक्षण बुद्धि समझ-विवेक प्रभु ने दिया है।
इसलिए नर-नारी में विकास, उन्नति पथ पर बढ़ा है।।
नर-नारी ने अपने को सुन्दर वस्त्रों से ढंका है।

अन्य सभी जीव अपनी अल्प बुद्धि से नग्नावस्था में हैं।।
फिर भी मानव दुर्लभ शरीर पाकर भी नहीं संभल रहा है।।
भगवान भजन, सत्संग, सद्कर्मों से सब अच्छा हो रहा है।
प्रभु कृपा से सद्बुद्धि पाकर सुख शान्ति है।।

मन-बुद्धि शुद्ध होकर प्रभु ध्यान से दुःख दूर हैं।
'रमदा' ध्यान योग भगवान भक्ति में आनन्द मगन है।।
दान-पुण्य, धर्म-कर्म, परोपकार-सदकर्मों में लगा है।
सुखी वृद्धावस्था तनाव मुक्त होकर सादगी सात्विकता से है।।

झंझटों से दूर, सूझबूझ से जीवन में चलना है।।
कम बोलकर और गम खाकर कुछ धन संकट को बचाना है।
किसी से न मांगकर प्रभु से ही मांगना लाभकारी है।।
नित्य प्रतिदिन प्रातः-सायं सोते-जागते 'ओ३म्' जपना है।

'ओ३म्' जाप से शक्ति-ऊर्जा से अमन-चैन समाधान है।।
सभी परेशानियाँ-दुःख दूर होकर मन शान्त प्रसन्न है।
इन्द्रियों का स्वामी मन और मन का स्वामी बुद्धि को माना है।।
बुद्धि और शरीर की स्वामी आत्मा तथा आत्मा का स्वामी परमात्मा है।।

अ.प्रा. प्रो. रामसिंह रमदा
रामाश्रय-महात्मा रमदाकुटी
गुरु तेगबहादुर मार्ग, हल्द्वानी- जिला-नैनीताल
चलभाष-९९९७३३७९३५

मन की साधना

- डॉ. रूपचन्द्र दीपक -
६१०५, पतंजलि योगपीठ फेज-२
हरिद्वार, (उत्तराखण्ड)
चलभाष - ९८३९१७८१६९०

जीवन को सुखी-समृद्ध बनाने के यत्न हर देश में हुए हैं। किन्तु जितना सन्तुलित एवं समग्र चिन्तन भारत के ऋषियों ने किया, उतना अन्यत्र कहीं नहीं हुआ। ऋषि-प्रणाली से ही शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उत्थान सम्भव है। इस प्रणाली में जागरण, शयन तथा सन्ध्या कालों में मन को विशेष रूप से शुद्ध, शान्त एवं केन्द्रित किया जाता है।

शरीर और मन का सम्बन्ध

मनुष्य एक इकाई है। इसमें आत्मा, मन और शरीर संगठित है। आत्मा के लिए मन और शरीर मिलकर कार्य करते हैं। अतः शरीर और मन में घनिष्ट सम्बन्ध होना स्वाभाविक है।

क्रोध करने पर नेत्र लाल और चेहरा कठोर हो जाता है। अधिक क्रोध करने वाले व्यक्तियों के नेत्रों और चेहरे पर स्थायी रूप से कठोरता

www.thearyasamaj.org

आ जाती है। क्रोध मन का गुण है किन्तु शरीर पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार भय मन का गुण है, किन्तु भय की अवस्था में शरीर के रोम खड़े हो जाते हैं, हाथ-पैर ठण्डे हो जाते हैं और मल मूत्र भी निकल जाता है। मन में भोजन के प्रति लालसा उत्पन्न हो जाए, तो मुंह में पानी भर आता है। प्रियजन से मिलने पर मन प्रसन्न हो तो नेत्रों में चमक आ जाती है, चेहरा खिल उठता है और खाने-पीने की आवश्यकता घट जाती है।

प्रियजन की मृत्यु से मन दु:खी हो तो चेहरा मुरझा जाता है, आंखों से आंसू निकल पड़ते हैं और नींद गायब हो जाती है। चिन्ता मन का विषय है, किन्तु इससे चेहरा निस्तेज हो जाता है। रक्तचाप बदल जाता है, पाचन-तन्त्र कमजोर हो जाता है और शरीर क्षीण हो जाता है। मन शान्त रहे तो रक्तचाप सामान्य रहता है, शरीर के रोग कम होते हैं और आयु लम्बी होती है। इस प्रकार मन के भावों का शरीर पर प्रभाव पड़ता है।

शरीर का भी मन पर प्रभाव पड़ता है। उदाहरणार्थ- उत्तेजक पुस्तक पढ़ने और अश्लील चित्र देखने से मन में उत्तेजना आती है। जल की पहुंच शरीर तक है, मन तक नहीं, किन्तु स्नान करने से मन को शान्ति मिलती है। अधिक भोजन करना शरीर का विषय है, किन्तु इससे मन बैचेन होता है। नशा करना शरीर का विषय है, किन्तु इससे मन अपवित्र हो जाता है। व्यसन् का प्रयोग शरीर पर होता है, किन्तु इससे मन में चञ्चलता आती है।

पेड़ की ठण्डी छाया शरीर पर पड़ती है, किन्तु मन भी सुख का अनुभव करता है। नरम गद्दे पर सोना, मधुर संगीत सुनना, स्वादिष्ट भोजन करना, पैर दबवाना आदि शरीर के विषय हैं; किन्तु इनसे मन भी सुख पाता है। शरीर रुग्ण रहने लगे तो मन में निराशा का भाव आ जाता है।

इन सब वास्तविकताओं से विदित होता है कि शरीर और मन का घनिष्ट सम्बन्ध है। दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। मन की साधना के लिए शरीर भी अच्छा होना चाहिए। मन की साधना आगे शरीर को भी आरोग्य प्रदान करती है।

मन- बुद्धि- चित्त- अहंकार

अन्त:करण चतुष्टय में मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार चारों गिने जाते हैं। मन का कार्य संकल्प-विकल्प करना और इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना है। यह गतिशील रहने वाला तत्व है। इसकी उत्पत्ति अहंकार के पश्चात् होती है। इसके सहयोग से ही पांच ज्ञानेन्द्रियाँ ज्ञान-सम्पादन और पांच कर्मेन्द्रियां कर्म-व्यापार करती हैं। इससे उभय इन्द्रिय भी कहा जाता है।

बुद्धि का कार्य चिन्तन और निश्चय करना है। सृष्टि उत्पत्ति में सर्वप्रथम '**महत्तत्व**' बनता है। यही महत्तत्व जीवात्माओं के साथ बुद्धिरूप होकर रहता है। बुद्धि स्वरूप से वस्तुनिष्ठ है। इसका वास मस्तिष्क में है।

चित्त का कार्य स्मृति और संस्कारों को संग्रहित करना है। मन में जिस भावना वा कामना का दीर्घकाल तक वास रहे, वह भी वासना बनकर चित्त में संग्रहित रहती है। चित्त ज्ञान-प्रधान है और इसका वास हृदय में है।

अहंकार मैं-पन की भावना है। महत्तत्व के पश्चात् अहंकार नामक तत्व की उत्पत्ति होती है। यह कर्म-प्रधान है और इसका वास हृदय में है। अहंकार स्वरूप से व्यक्तिनिष्ठ है और ममता, अस्मिता एवम् अभिमान का आधार है। 'यह धन, भूमि, शरीर, परिवार, वंश, ग्राम एवं देश मेरा है,' जीवात्मा को यह अनुभूति इसी तत्व से होती है।

शयन के समय बोलने का प्रथम वेद मन्त्र है -

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मन: शिव संकल्पमस्तु।।

यजुर्वेद : अध्याय-३४, मन्त्र-१

मन्त्रों में दूर-दूर ले जाने वाला, इन्द्रियों को प्रवृत्त करने वाला और मननस्वरूप जो तत्व बताया गया है, वह मन ही है। किन्तु, बुद्धिरूप, वेद को जानने हारा और सारथि की भांति मनुष्यों को ले जाने वाला जो तत्व बताया गया है, वह बुद्धि है। स्मृति का साधन और योगयुक्त चित्त तो चित्त है ही। जो सब कर्मों का साधन रूप, आत्मा का साथी और जिसके बिना कोई काम नहीं किया जाता, वह अहंकार है। इस प्रकार मन्त्रों में मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार चारों के लिए 'मन' शब्द का प्रयोग किया गया है।

साधना का अभिप्राय

साधना में मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार, चारों का परिष्कार अपेक्षित है, अर्थात्

(१) मन में अच्छे संकल्प न उठें; मन पवित्र और शान्त हो।

(२) बुद्धि शुद्ध और तीव्र हो; शुद्ध बुद्धि पाप से बचाती है; तीव्र बुद्धि सफलता दिलाती है।

(३) चित्त में उत्थानकारी संस्कार एवं स्मृतियाँ उभरें; वासनायें शमन को प्राप्त हों।

(४) अहंकार स्वस्थ हो; इसमें यथार्थ दर्शन की भावना हो; न हीनम्मन्यता और न श्रेष्ठम्मन्यता।

(५) मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार पृथक-पृथक विषयों में न लगे हों अपितु चारों एकनिष्ठ हों; सम्पूर्ण अन्त:करण प्रशान्त रहकर समग्रता में कार्य करें।

दिनचर्या पूर्व सन्ध्या से

साधक की दिनचर्या का प्रारम्भ उससे पहली सन्ध्या से हो जाता है। रात्रि को मनुष्य ठीक से सोए, तभी प्रात: ठीक से उठकर दिन में उत्तम व्यवहार कर सकता है। रात्रि को अनुचित भोजन, अनुचित चिन्तन और अनुचित शयन करके प्रात: उचित जागरण नहीं हो सकता और दिन के उत्तम प्रारम्भ का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इस प्रकार साधना की दृष्टि से शयन जागरण से पहले हैं। हम अच्छे दिन की साधन अच्छे शयन से करें। फिर जागरण तथा समस्त कर्म अच्छे हों। ज्ञान कर्म तथा उपासना उत्कृष्ट हों, यही मन की साधना है। ●

www.thearyasamaj.org

वैदिक सन्ध्या क्यों करें?

- साधुशरण आर्य -
आर्य समाज- राज चैनपुर, जिला- पलामू (झारखण्ड)

१. वैदिक सन्ध्या इसलिए करें कि सन्ध्या के द्वारा बहुत प्रकार का लाभ होता है। जैसे पहला लाभ ईश्वर के बारे में पूर्ण जानकारी होती है। ईश्वर तो निराकार है, बाहर के नेत्र द्वारा दर्शन नहीं होता है। उस ईश्वर के दर्शन के लिए आत्मज्ञान होना चाहिए। आत्मज्ञान वैदिक सन्ध्या उपासना के द्वारा ही होता है।

२. हमारा मन और आत्मा वा शरीर स्वस्थ रहता है और हम शुभ कर्म करने के लिए आगे बढ़ जाते हैं।

३. हमारी आत्मा को ज्ञान के द्वारा भोजन की प्राप्ति होती है। शरीर का भोजन तो अन्न, फल, औषधि के द्वारा हो जाता है। इसलिए हम सन्ध्या उपासना के द्वारा ज्ञान को प्राप्त करते हैं।

४. जब हमारी आत्मा सबल और बलवान होती है तो हम किसी विघ्न-बाधा से नहीं डरते हैं और मन एकाग्र होकर परमात्मा के ध्यान में लग जाता है और हमें आत्मिक शक्ति मिल जाती है। यहां पर एक उक्ति है।

जिस नर में आत्मिक शक्ति है, वह शीश झुकाना क्या जानें।
जिस दिल में ईश्वर भक्ति है, वह पाप कमाना क्या जानें।।
दो काल करे सन्ध्या व हवन, नित् सत्संग में जो जाते हैं।
भगवान का है विश्वास जिन्हें, दुख में घबराना क्या जानें।
मन-मन्दिर में भगवान बसा, जो उसकी पूजा करता है।
मन्दिर के देवता पर जाकर, शीश को पटकना क्या जानें।।

वैदिक सन्ध्या में महर्षि ने जो विधि क्रम किया है वह अपने आप में विशेष महत्व रखता है। सन्ध्या को तीन भागों में विभाजित किया है। प्रत्येक के छः छः मन्त्र हैं। प्रथम भाग में प्रारम्भिक भौतिक क्रियाओं से सम्बन्ध रखता है। प्रथम में हम अपनी आत्मा का निरीक्षण करते हैं। इन्द्रिय परीक्षण करते हैं। इन्द्रियों की सक्षमता एवं पवित्रता के प्रति सजग होते हैं। यम नियम पालन करने में सजग रहते हैं। मन को एकाग्र एवं चित्त को समाहित करने में प्रयत्नशील होते हैं। वैदिक सन्ध्या में अपनी ही नहीं सबकी कल्याण की प्रार्थना की जाती है। वेद मंत्रों में अधिकांश नः का प्रयोग हुआ है। अर्थात् प्रभु हम सब पर सुख की वर्षा करें। हे प्रभो जो भद्र हो अच्छाई हो वह हमें प्राप्त कराइए।

सन्ध्या में महर्षि ने जो क्रम निर्धारित किया है। शिखा बन्धन, आचमन, अंग स्पर्श-मार्जन, प्राणायाम, अघमर्षण, पुनः आचमन, मनसा परिक्रमा, उपस्थान, समर्पण एवं नमन्।

अब हम थोड़ा अंग स्पर्श पर विचार करते हैं। इन्द्रिय स्पर्श एवं मार्जन के द्वारा हम इन्द्रियों की सक्षमता, स्वस्थता, एवं पवित्रता के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं और साथ ही इन्हें सुरक्षित रखने हेतु अनावश्यक आशक्तियों में न फंसने देने, यम-नियमों का पालन करते रहने आदि का संकल्प करते हैं।

इन्द्रिय स्पर्श मन्त्र में बाहु के लिए यशो बलम पद का पाठ हुआ है। अर्थात् हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हमारे बाहुओं में यशरूपी बल हो अर्थात् यश वाला बल हो। यशोबलम पद सभी इन्द्रियों के साथ सम्बन्धित समझना चाहिए।

इन्द्रिय स्पर्श मन्त्र। **ओं वाकः वाकः। ओं प्राणः प्राणः। ओं. चक्षुः चक्षुः। ओं. श्रोत्रम् श्रोत्रम् । ओं नामिः। ओं हृदयम्। ओं कण्ठः। ओं शिरः। ओं बाहुभ्यां। यशोबलम्। ओं. करतल कर पृष्ठे।**

मन्त्र के प्रत्येक पद पाठ के साथ इंगित इन्द्रिय व अवयव पर उंगली रखकर हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभो आपकी महान अनुकम्पा से हमारी ये इन्द्रियां व अवयव स्वस्थ सक्षम और यश दिलाने वाले हों।

अब अघमर्षण पर विचार करते हैं।

- ओ३म् ही ओ३म् -

ओ३म् ही तन में ओ३म् ही मन में
ओ३म् मेरा जीवन धन है।
ओ३म् ही मेरे मन का स्वामी
ओ३म् का ही आराधन है।।
जब-जब दुःख का सिन्धु मिला प्रभु तब-तब तुझे पुकारा है,
अनुनय विनय सुनी प्रभु मेरी तूने मुझे उबारा है।
भवसागर के घटाटोप में तू ही भवभय भञ्जन है।।
ओ३म् ही...
घनी घटाएं दुविधाओं की जब घिर-घिर कर आती हैं,
तेरी ही करुणा किरणों में आत्म शान्ति मिल जाती है।
जीवन की हर एक उलझन में तू ही जीवन दर्शन है।।
ओ३म् ही...
जन्म-मरण से बंधा हुआ जब-जब जीवन झूला झूलें,
तब-तब तू सावन बन आता मेरा पुलकित मन फूले।
नित्य नाचते मन मयूर का तू ही सघन गगन धन है।।
ओ३म् ही...
ओ३म् पिता है, ओ३म् ही माता
ओ३म् दुःखों का त्राता है,
ओ३म् ही मेरा सच्चा साथी
ओ३म् जगत् का भ्राता है।
ओ३म् ही है सर्वस्व हमारा, ओ३म् ही सत्य सनातन है।
ओ३म् ही...

रमेशचन्द्र चौहान
२६२, पार्श्वनाथ नगर, इंदौर-९
चलभाष - ९८२६०३१३४९

www.thearyasamaj.org

अघमर्षण का अर्थ है। अघ = पाप और मर्षण = निकरण, दुरीकरण अर्थात् पाप का निवारण करना।

अब तक वैदिक सन्ध्या के विधि क्रम में हमने अपने आप का जानकारी किया। आत्म निरीक्षण किया। अब हम आत्म निरीक्षण की अन्तिम पायदान पर पैर रखते हैं। अपनी उन मानसिक वृत्तियों का लेखा-जोखा लेते हैं। जिनके कारण पापजन्य अंजान से हो जाया करता है। उन्हें निरस्त करने और निरस्त ही रहने देने का संकल्प एवं प्रयत्न से प्रयास करते हैं। साथ ही जो अन्जान से पाप हो गये हैं उनका प्रायश्चित करते हैं और उनके फल भोग को सहने का साहस जुटाते हैं। महर्षि ने ऋग्वेद के तीन मन्त्रों को अघमर्षण मन्त्रों के नाम से वैदिक सन्ध्या में इस स्थल को सर्वोच्च स्थान दिये हैं। इनमें सृष्टि उत्पत्ति और उसमें वैज्ञानिक क्रम का बीज रूप में हो पाया है। उसको ठीक से समझ लेने पर अभिमान (घमण्ड) प्रवृत्ति व स्थिति से उबरने की उत्तम प्रेरणा ले पाते हैं।

अत: अभिमान व अहंकार की उभरती वृत्तियों में हम प्रभु की महान शक्ति का ध्यान करें। पल भर में प्रलय कर देने वाले प्रभु के आगे हमारी हस्ती क्या है। यह सोचकर हम मन के आचरण से सत्य आचरण से व धर्म आचरण से अपने आपको मन, वचन व कर्म से पवित्र बनावे और अपने किये पापों अनाचारों का प्रायश्चित करें। अघमर्षण मन्त्रों के जाप में प्रभु सत्ता को याद कर उसके आगे अपना मस्तक झुकाकर अपने जीवन को पवित्र बनाने की प्रेरणा ले। इसके बाद हम पुन: आचमन और संकल्प करें कि अभिमान व घमण्ड की मानसिक प्रवृत्तियों का दमन करें।

ओ३म् प्राची दिग्ग्निरधिपति रसितो रक्षिता दिव्या इषव: तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो रक्षितम्यो नम: इषभ्यो नम: एभ्यो अस्तु योऽस्मान द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्त वो जन्में दध्म:।

भाषार्थ हमारे सामने की प्राची दिशा आगे बढ़ने की दिशा है। प्रगति करने की दिशा है। अग्नि रूप ज्ञान स्वरूप प्रभु स्वामी है तथा हमारे बन्धन काटने वाले हैं। सब प्रकार से रक्षा करने वाले प्रभु स्वामी निर्भय होकर आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रहे हैं। वाण रूप साधन हमारे पथ प्रदर्शक हैं। उन गुणों के अधिपति ईश्वर को नमस्कार। रक्षक को नमस्कार। इच्छापूर्ति करने वाले वाण रूप विद्वानों को नमस्कार उन सबों को नमस्कार जो हम से द्वेष करते हैं या जिनसे हम द्वेष करते हैं। हे प्रभु आपके न्याय रूप चरणों में रखते हैं।

प्राची दिशा हमारे आगे बढ़ने और उन्नति करने की दिशा में अग्नि रूप दिशाधिपति प्रभु हमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, की प्राप्ति के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रहे हैं। आगे बढ़ने में जो भी रुकावट व बाधा मार्ग में आते हैं। उसको दूर करते हैं और हमारी रक्षा करते हैं। साथ ही विद्वान हमारा मार्गदर्शन करने में हमारे सहायक बनते हैं। अत: उन सबके प्रति अभार व्यक्त करते हुए हम लोग आगे बढ़ें। जीवन यात्रा को सफल बनावें यही इस मंत्र का भाव है।

अब इस दक्षिण दिशा पर विचार करते हैं। जो हमारे दाहिनी और दक्षिणी दिशा है। उसका इन्द्र अर्थात् परम प्रभु अधिपति है। जो कुटिल चाल से रक्षा करने वाले हैं और हमारे पितरजन बुजुर्ग जन आदि हमारे मार्ग दर्शक हैं। दक्षिण-दिशा के प्रभु इन्द्र हमें धन ऐश्वर्य को प्राप्त कराते हैं। इस प्रकार इस दिशा के विहित व कर्त्तव्य कर्मों को करते हुए हम दिशाधिपति को उसकी रक्षण व्यवस्था आदि के लिए श्रद्धा के साथ नमस्कार करते हैं।

जब हम (**प्रतीचि दिक**) पीठ पीछे की दिशा में विचार करते हैं। पीठ पीछे की दिशा में सर्व व्यापक वरुण प्रभु अधिपति है जो छिपकर घात करने वालों से रक्षा करने वाले हैं। (**अन्नम इषव:**) अन्न भौतिक अन्न व हम से न्यून समर्थ वाले हमारे आश्रित वाण मार्गदर्शक है। इन सबकों नमस्कार करते हैं। प्रतीचि दिशा हमारे पीठ की पश्चिम दिशा है। पूर्वाभिमुख होकर जब हम खड़े हो जाते हैं या सन्ध्या के लिए बैठते हैं तो पीठ पीछे की दिशा पश्चिम दिशा होती है। इस दिशा का पति सर्व व्यापक वरुण प्रभु हैं। वरुण का अर्थ जल भी है। जिस प्रकार वरुण सर्व व्यापक है। उसी प्रकार जल भी दृश्य व अदृश्य रूप में सर्व व्यापक है।

अब हम थोड़ा विचार बाई ओर की उत्तर दिशा पर करते हैं। (**उदीची दिक**) उदीची दिशा हमारे बांई ओर की उत्तर दिशा है। (**सोम**) सोम सबका उत्पादक प्रेरकशांति स्वरूप प्रभु दिशाधिपति है जो स्वत: उत्पन्न स्वयम्भू तथा हमारी आत्मा में व्यापक होकर हमारे अन्दर उत्पन्न होने वाले विकारों व बुरे विचारों को दूर करने वाला रक्षक है। तथा (**अशनि इषव:**) उसकी विद्युत रूप वज्रवत दण्ड व्यवस्था हमारे लिए वाण रूप मार्गदर्शक है। इस प्रकार प्रभु की यह व्यवस्था प्रभु के अशनि रूप इषव बनते हैं। हमसे स्वत: उत्पन्न बिकारों को पलक झपकते ही निरस्त कर देते हैं। और वाणरूप हमारा यथार्थ पथ प्रदर्शन करते हैं। विद्युत पवित्र है और सबको पवित्र करती है। इसी प्रकार सोम रूप प्रभु हमारे हृदयों में ज्ञान का प्रकाश कर हमारे विकारों को निकाल देते हैं। केवल भक्ति भजन की बटन दबाने की देर **हैं**।

अब हम थोड़ा नीचे भूतल की दिशा पर विचार करते हैं। ध्रुवम एवं स्थिरता की दिशा में (**विष्णु**) सर्व व्यापक सबको संगठन में रखने वाला शासक दिशा का स्वामी है। (कल्याण ग्रीव: रंग-बिरंगी वनस्पति लता, पेड़, पौधे जिसके ग्रीव के समान है उसी के इशारे पर नीचे से उपर की ओर उठकर मुक्तकण्ठ से स्वरों में दिशाधिपति के ही गुण गा रहे हैं और (**इषव:**) हमारे पथ प्रदर्शक बन रहे हैं। यह दिशा स्वामी ही हमारे रक्षक हैं। इस प्रकार इस मन्त्र का सार यहीं हुआ कि हम अपनी विविध उपलब्धियों के साथ एक सच्चे वानप्रस्थ के रूप में समाज सेवा के क्षेत्र में उतरे। साम्प्रदायिक विरोधाभाष के कारण उत्पन्न किये जाने वाले अड़चनों के उपरान्त समाज को संगठित करने के प्रयासों में सुझबूझ एवं शांति के साथ जुटे रहें। इसी ध्येय की पूर्ति में दिशापति विष्णु, के अधिकार में रहते हुए हम उसे नमस्कार करते हैं। जो हमसे द्वेष करें या हम जिससे द्वेष करें उन्हें व अपने आपको उस दिशाधिपति विष्णु भगवान की न्याय व्यवस्था में समर्पण करते हैं।

अब हम उपर की दिशा में उठने की दशा में विचार करते हैं। बृहस्पति बड़ों से भी बड़ा सर्वत्र सर्व शक्तिमान प्रभु स्वामी है। वह (वर्षम श्वित्र:) श्वेत शुभ्र ज्योतिर्मय है वही हमारा रक्षक है।

www.thearyasamaj.org

वर्षा की बूंदें जो शीतल शांत सुखदायी व पवित्र है सबको पवित्र करने वाली है, तथा उन्हीं के सदृश साधना से ऊंचे उठे। सुखदायी आत्मजन हमारे (दूषवः) मार्गदर्शक हैं। यह हमारा पथ प्रदर्शन करते हैं। (वर्षम इषवः श्वित्रः) वर्षा की बूंदे हमारा मार्गदर्शन करती हैं। ये बूंदे बड़े तप से तपकर उपर उठती हैं पर उपर उठना उन्हें अच्छा नहीं लगा वह तो पुनः धरती पर गिर जाने ही में अपना गौरव समझती हैं। अतः उमड़ घुमड़ कर बरसने लगती हैं। मुसलाधार वर्षा के रूप में जब बरसती हैं तो चारों तरफ खुशी की लहर दौड़ जाती है। ग्रीष्म की झुलसाने वाली तपन से राहत मिल जाती है। धरती हरी भरी हो जाती है। वनस्पति जगत फिर से हरीभरी हो जाती है। इस प्रकार मनसा परिक्रमा के मन्त्रों का सार यह हुआ कि हम मन से प्रभु के गुणों के चहूंदिशा परिक्रमा करते हुए प्रभु के गुण-चिंतन में ध्यान लगाते हैं। अपने जीवन को पवित्र बनाए रखने में प्रभु से प्रार्थना करते हैं। उसकी रक्षण व्यवस्था और इसको सश्रद्धा से नमस्कार करते हुए उनकी आज्ञा का पालन करते रहे और सनमार्ग का अनुशरण करते रहे। अभिमान न आए मन में उठने वाले विकारों का दमन करें और सामाजिक उत्थान वा लोंकोपकार के कार्य में लगे रहें। इस प्रकार हम मन वचन व कर्म से पवित्रता अर्जित कर पवित्र प्रभु के उपासना होने के अधिकारी बने।

अब उपस्थान मंत्र पर विचार करते हैं। (**वयं तमसस्परि उत्तर**) हम अन्धकार से परे अर्थात् अज्ञान अन्धकारमय प्रकृति ज्ञान से उपर उठें (**अन्तरम् स्वर पश्यन्त**) ज्यों आता ज्ञान अर्जित करें अर्थात जिवात्मा को जानें। अपने आप को स्वाध्याय से पहिचानें और तदननन्तर (**देवम् देवता सूर्यम् ज्योति उत्तरम्**) देवों के देव परमदेव परमात्मा के उत्तम ज्ञान को ब्रह्मज्ञान अर्जित करें। वह परमदेव परमात्मा ज्योर्तिगमय है सारे जगत् को प्रकाशित करने वाला सूर्यों का सूर्य है। उसे जाने पहिचानें और उसे (अगन्य) प्राप्त करें। जिसकी उपासना से ही उसके ऊपर आसन होने का सौभाग्य मिलता है। अतः हम अत्यंत विनीत एवं समर्पित भाव से ध्यानवस्थित हो उसके गुणों का चिन्तन मनन करते हुए उससे यही प्रार्थना करते हैं कि प्रभु हमें मौलिक ज्ञान से परे आत्माज्ञान और तत्वज्ञान ब्रह्मज्ञान अर्जित करने की शक्ति प्रेरणा दें। ताकि हम आपकी उपासना में सार्थक हों और आपकी उपासना हो सके।

लेकिन उपासना होने के हेतु उस प्रभु तक पहुंचें कैसे? कौन हमें उनके ध्यान का मार्ग बताए इस सम्बन्ध में कुछ अगले मन्त्र में किया है। **ओ३म् उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्।**

अच्छी तरह उपर निश्चय ही उस उस परमात्मा को जो वेदों का प्रकाशक है अन्तर्यामी है और सब जगत् का उत्पादक है तथा सृष्टि के समान भूतों में व्यापक हो रहा है जो सब देवों का देव है। सब जीव आदि जगत् का उत्पादक है उस परमात्मा को सब जीव आदि जगत का प्रकाशक है। उस परमात्मा को विश्व विद्या की प्राप्ति के लिए जानने पहचानने के लिए हम ऊंचे उठें उस तक पहुंचें और उसके उपासना होने का सुयोग प्राप्त करें।

लेकिन यहां पर प्रश्न उठता है कि परमात्मा तक पहुंचे कैसे? मन्त्र बता रहा है कि उसी के द्वारा फहराई गई अनन्त (केशवः) पताकाओं के सहारे आगे बढ़ते चलो। यह तुम्हें निश्चय ही प्रभु तक पहुंचा देगी।

क्या हैं पताकाएं?

(१) चारों वेद, उपवेद, वेद, उपनिषद, वैदिक वाङ्मय। श्रृष्टि सृजन में प्रभु की रचनात्मक कला की कारीगरी है। यह असंख्य आकाश गंगाएं उनमें असंख्य सूर्य जो तारों की तरह टिमटिमाते नजर आ रहे। यह ग्रह जो आपके अपने आधार के चारों ओर निर्धारित कक्षा में चक्कर लगा रहे हैं। प्रभु की सत्ता में किसी के नियंत्रण में यह नियंत्रित गति में घूम रहे हैं। हे मनुष्यों तुम उस सर्वव्यापक ईश्वर के अनन्त जगत् के सृजनात्मक कर्मों को तो देखो। इस प्रकार पूर्ण आस्था, श्रृद्धा और समर्पण मात्र से प्रभु की आराधना, उपासना ही में सन्ध्या की सार्थकता है।

अब हम उपासना मंत्र पर विचार करते हैं। तीसरा मंत्र यह है।

(**चित्रम**) अद्भुत विलक्षण, गुणयुक्त प्रभु (**धावा पृथिवी अन्तरिक्षम**) धौ पृथ्वी व अन्तरीक्ष लोकों को तथा सूर्य लोकों को सृजकर प्रकाशित करने व धारण रक्षा करने वाला है। वह प्रभु सकल प्राणी जगत् व जड़ में आत्म रूप व्यापक हो रहा है और सारे ब्रह्माण्ड को प्रकाशित कर गतिमय कर रहा है। वह सर्व शक्तिमान प्रभु देवों

हम तो चलेंगे अभियान पर

महा. चैतन्य मुनि
महादेव, सुन्दरनगर
जिला-मण्डी,
हिमाचल प्रदेश

अब न धरती, अपना आकाश न रहा,
प्रमाणित अब कोई इतिहास न रहा।
सही क्या है चलो कम्प्यूटर से ही पूछें-
इस सदी के आदमी पर विश्वास न रहा।।

आजादी के क्षत-विक्षत चेहरे हो गए हैं,
घाव ये कुछ और भी गहरे हो गए हैं।
और ऊंचा पुकारो, कुछ और भी ऊंचा-
भाई दिल्ली के कान बहरे हो गए हैं।

डूबने का दर्द भला क्या जानें, जो किनारे हैं,
अन्धेरों की टीस भला क्या जानें, जो सितारे हैं।
आग के दरिया में डूबने का दर्द, हमसे पूछो-
हमने उजड़े हुए विरान गुलशन संवारे हैं।।

विरोधियों को सब रुकावटें रखने दो,
भले सुख सुविधाओं को भी हटने दो।
हम तो चलेंगे अभियान पर इसी वक्त-
हम से यह मत कहो कि बादल छंटने दो।।

www.thearyasamaj.org

में जड़ व दिव्य गुणयुक्त चेतन देवों में सदा विद्वानों में (**उद्गात**) अर्थात् प्रकाशित रहता है। वह प्रभु (**मित्रस्य**) मित्र अर्थात् राग द्वेष रहित लोगों, सूर्य लोकों तथा प्राणादि देवों का प्रकाश करने वाला है। (**वरुणस्य**) सब उत्तम कार्यों में वर्तमान लोगों को (**अग्ने**) अग्नि ज्ञानवान शिल्पादि कलाओं में निपुण महानुभावों का प्रकाश करने वाला है और (**अनीकम**) सकल मनुष्यों के सब दुखों व कष्टों का नाश करने वाला है। वह परमपिता परमात्मा हमारे हृदय के (**उद्गात्**) सदा प्रकाशित करते हैं। अर्थात् प्रभु आदेश दे रहे हैं कि हे मनुष्यों! मैं तुम जीवों के लिए कुछ मर्यादाएं निर्धारित कर रहा हूं जिसका पालन करते हुए तुम ज्ञान के साथ पुरुषार्थ से कर्म करते हुए, अर्थ आदि की प्राप्ति करते हुए मृत्यु की परे ढकेलते हुए सौ वर्ष तक जियो।

क्या है ये मर्यादाएं- यम की अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य और नियम की शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वर प्रणिधान यही मर्यादाएं हमें आध्यात्मिक दुखों से बचाए रखती हैं। प्रभु के इस महान उपकारों के प्रति हम आभार व्यक्त करते हुए हम समर्पण भाव से उसके अत्यन्त गुणों का चिन्तन मनन करते हैं तथा उसी की ही उपासना में मग्न हो विनित भाव से करते हैं कि हे प्रभु आप हमारे हृदयों में यथावत प्रकाशित कर रहे हैं। (**ततः**) वह ब्रह्म (**चक्षुः**) सबका दृष्टा, सबका मार्गदर्शक (**देवहितं**) धर्मात्मा का परम हित कारक तथा (**पुरस्तात्**) अनादिकाल से सृष्टि के पूर्व से वर्तमान वाला है तथा (**उन्त + चरत**) उत्कृष्टता से सबका ज्ञाता है। (**तत्**) उस ब्रह्म को हम (**शतम् शरदः पश्यम**) सौ वर्ष तक प्राणों को धारण कर जिएं। सौ वर्ष तक वेदादि शास्त्रों को व मंगलकारी आप्त वचनों को सुने, सौ वर्ष तक उसी के सद्उपदेशों का वेदोक्त आधारित ज्ञान का उपदेश करें सौ वर्ष तक दीनता रहित हों और सौ वर्ष से भी अधिक जीयें, सुनें, पढ़ें, व उपदेश करें और अदिन रहें। सदा उसको देखते रहें अर्थात् उसे सर्व व्यापक समझकर सख्त शुभ कर्मो में ही रत् रहे ताकि यही कर्म हम उसे भेंट कर सकें। वैसे तो वृद्धावस्था की अशक्तता कुछ न कुछ हद तक सभी को सहनी ही पड़ती है। पर हे प्रभु। हम अपाहिज होकर दूसरों के आश्रित होकर न पड़े रहें। ऐसी हम पर कृपा करें। अभाव व अपाहिजता ही दीनता की जननी है। अतः इनसे बचे रहें ऐसी ही कृपा कीजिए हम पर

गायत्री मन्त्र

अब हम उपस्थान प्रकरण के अन्तिम प्रकरण के अन्तिम मन्त्र पर आते हैं। यह गायत्री मन्त्र है। इसे सावित्री मन्त्र महामन्त्र, गुरु मन्त्र, वेदमाता आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसे सर्वोत्तम मन्त्र कहा गया है। इसलिए की इसमें प्रतीक रूप में चारों वेदों का ज्ञान कर्म व उपासना का सुन्दरतम विधान है। स्तुति में हम प्रभु के गुणों का चिन्तन करते हैं।

मन्त्र में भूः-भूवः स्वः सवितुः भर्गः आदि स्तुति परक शब्दों से प्रभु के गुणों का बोध हो रहा है।

प्रार्थना में हम प्रभु से सहायता की विनय करते हैं। जबकि धियोयोनः प्रचोदयात् पद प्रार्थना को द्योतक है। उपासना में हम प्रभु के सानिध्य में अमृतमय आनंद की प्राप्ति के लिए पूर्ण श्रद्धा और भक्ति से आपके आपको समर्पित कर रहे हैं। वरेण्यं और धीमहि इसी अभिप्राय को प्रदर्शित करते हैं। उसके आश्रित हो जाते हैं। तब प्रभु हमारे दुखों को दूर करके चिरस्थायी सुख मोक्षानन्द अवश्य प्राप्त कराते हैं।

इस प्रकार गायत्री जाप में हम उत्पत्तिकर्ता पालन कर्ता, प्राणरक्षक, दुःखहर्ता, सुख प्रदाता प्रभु से विनीत प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु, हे प्राणाधार! हम आपके दिव्य रूप का ध्यान करते हैं और आपका वरण करते हैं। अपने आपको आप ही को अर्पण करते हैं। आप कृपा करके हमारी बुद्धियों को पवित्र कीजिए, ताकि हम आप ही के बताए सन्मार्ग पर चलते हुए शुभकर्मों में लगे रहें। धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति हो और आपकी उपासना और मोक्ष की प्राप्ति लगे रहे और आपके उपासक होने के अधिकारी बनें।

समर्पण मन्त्र

हे ईश्वर दयानिधे भवत्कृपयानेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थ काम मोक्षानाम सद्य सिद्धिर्भवेनः।।

इस प्रकार सब मन्त्रों के अर्थों से परमेश्वर की उपासना करके आगे समर्पण करें कि हे ईश्वर! दयानिधे आपकी कृपा से जो उत्तम काम हम करते हैं वो सब आपको अर्पण है। जिससे हम लोग आपको प्राप्त हो के धर्म, अर्थ, काम, व मोक्ष के सब दुःखों से छुकर सदा आजाद रहना है। इन चार पदार्थों की सिद्धी हमको शीघ्र प्राप्त होते हैं। मन्त्र में सद्य शब्द का विशेष महत्व है कि हम प्रभु से प्रार्थना तथा पुरुषार्थ चारों चीजों अर्थात् धर्म-अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि आज हो ऐसी प्रार्थना करते हैं। आज तो आज ही है। कल तो नहीं अर्थात् प्रतिदिन सन्ध्या करने वालों के लिए तो प्रतिदिन आज ही होगा। उनके लिए तो कल कभी होगा नहीं अतः प्रतिदिन प्रभु अराधना में रत् रहने का अभिप्राय यही है कि प्रतिदिन के किये कर्मों का प्रभु को अर्पित करना है और पवित्र प्रभु को पुजनीय परमपिता को पवित्र कर्म ही अर्पित किये जा सकते हैं। अपवित्र नहीं। अतः हमारे कर्म सदा पवित्र बने रहें इसी के लिए हमें सचेत रहना है। जब हम मन्त्र पाठ में जपोपासना के कर्म बोलते हैं कि आपकी क्रिया करो तो हम सन्ध्या उपासना में बोलने के मुताबिक क्रिया करेंगे तो ही हमारा बोलना सार्थक होगा। इसलिए सन्ध्या उपासना के साथ ही कम से कम पन्द्रह मिनट गायत्री और ओ३म् का जापादि करना जरूरी है। अगर हम जाप को नहीं करते हैं तो हमारा बोलना सार्थक नहीं होगा। इसलिए दोनों मन्त्रों का जाप अति अनिवार्य है।

इसके साथ ही हम प्रभु चरणों में नमस्कार करके उपासना सम्पन्न करते हैं।

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।
इति क्षम (ओ३म् तत् सत्)
माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख माही।
मनुवा सो चहुं दिश फिरे, यह तो सुमिरन ना ही।। ●

www.thearyasamaj.org

हम यहां हैरान हैं!

देख करके ये नजारे, हम यहां हैरान हैं!
झूठ फलता फूलता, सत्य यहां विरान है।
चमचों चाटूकारों का होता यहां सम्मान है
विद्वता और योग्यता का घट रहा अब मान है।
देख करके ये नजारे, हम यहां हैरान हैं,
धर्म का तेरे, पुजारी कर रहे उपहास हैं।
आस्था को मार खंजर, खो रहे विश्वास हैं
तिलक छापे से वो तेरे, बनते खासम खास हैं।
कैसे करें आश्वस्त जन को,जब स्वयं अनजान है।
देख करके ये नजारे, हमं यहां हैरान हैं,
तृष्णा के जल में डूबकर, अब तक बुझी न प्यास है,
मानव दानव बन रहा, हो वासना का दास है,
दे बली, पीकर मदिरा, भक्ष कर रहा मांस है,
कैसे रहे स्वच्छन्द नारी, यहां हर कहीं शैतान है।
देख करके ये नजारे ,हम यहां हैरान हैं,
पेड़ पर बैठे परिन्दों ने कही ये बात है,
उनके लिए क्या उजाली और अंधेरी रात है,
जिनके दिलों में ईर्ष्या नफरत और हरदम घात है।
इनके लिए क्या दीवाली और क्या रमजान है।
देख करके ये नजारे, हम यहां हैरान हैं,
धुँध में प्रदूषण की खोया हुआ दरबार है।
आग आतंक की लगाकर, ढूंढता उपचार है,
मार अपने को रहा कैसा तेरा संसार है,
आकर जरा तो देख ले, सब यहां नादान हैं।
देख करके ये नजारे, हम यहां हैरान हैं।

राधेश्याम गोयल 'श्याम'
न्यू कॉलोनी कोदरिया (महू)
मो. ९६१७५९७९१०

प्रातःकाल से सायंकाल तक, वर्ष के ३६५ दिन अनवरत् चलने वाले अग्निहोत्र का प्रथम वार्षिकोत्सव, १९ मार्च २०१७

वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ द्वारा १९ मार्च २०१६ से प्रतिदिन प्रातःकाल से सायंकाल तक अनवरत् चलने वाले अग्निहोत्र का एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में एक भव्य समारोह आयोजित किया जा रहा है। समस्त धर्मनिष्ठ-यज्ञप्रेमी आर्यजन सादर आमन्त्रित है।

आर्यावर्त्त गर्त में जा रहा

आर्यवर्त्त गर्त में जा रहा है, कोई बचाने वाला ना रहा।
मनमानी सब कर रहे हैं, कोई कहने वाला ना रहा।।

जांगिड कुल गौरव
-देशराज आर्य
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य
रेवाड़ी, हरियाणा
चल:-९४१६३३७६०९

वैदिक धर्म नष्ट हुआ और सर्वत्र पाखंड फैल रहा,
पापों से मुक्ति पाने हेतु, हर कोई कांवड़ ला रहा,
देखा देखी आडम्बरों में हर मानव फंसता जा रहा,
बुद्धि कुंठित होने के कारण दर-दर ठोकर खा रहा,
मर्यादा सब नष्ट हो रही है कोई होश दिलाने वाला ना रहा।
आर्यवर्त्त गर्त ...

तरह-तरह के डेरे आश्रम, हर दिन पैदा हो रहे,
भौतिकवाद में फंसकर, सब नर नारी दुःख पा रहे,
छल- प्रपंच और पण्डों से सब भ्रमित होते जा रहे,
स्वांग और लीला रचकर, ढोंगी धन को लूटे जा रहे,
श्रीकृष्ण की भी लांछन लगावें, कोई समझाने वाला ना रहा
आर्यवर्त्त गर्त ...

गणेश प्रतिमा के जल विसर्जन से शुद्ध पानी का नाश करें
मानव पिरामिड बनाकर के दही हांडी का स्वांग भरें,
कभी बालाजी की ध्वजा उठाकर कोसों पैदल चला करें,
पीले वस्त्र धारण करके डेरूं, डफरी से भजन करें
भीड़ में धक्के खाते फिरे, कोई खुद की ही सांकल से पीट रहा।
आर्यवर्त्त गर्त ...

कोई बम लहरी की घंटी बजावे, कोई हर गंगे का जाप करे
कोई पेट की खातिर ढोंग रचाकर शनिदेव का स्वांग भरे
शनिदेव की जय बोल कर आटा तेल की मांग करे
हस्त रेखा और भविष्य की खातिर, ज्योतिषियों के घर फिरा करे
भाग्य विधाता तो ईश्वर केवल, उन्हें यह समझाने वाला ना रहा।
आर्यवर्त्त गर्त ...

कभी धन को दुगना करवाने हेतु ठगों पर विश्वास करें,
सोने की ईंट बनवाने हेतु लाखों रुपये का नाश करें
कभी छिपे हुए धन पाने हेतु नरबलि का भी प्रयास करें
बुझक्कड़ के चक्कर में पड़कर, अपने कुल का नाश करें
गन्डे ताबिज से ईलाज करावें, कोई इन्हें रहस्य बताने वाला ना रहा।
आर्यवर्त्त गर्त ...

दूरदर्शन और चलचित्र ने आज, मानव को भरमाया है।
मनवांछित फल पाने खातिर, जन्त्रों का व्यापार चलाया है,
पढ़े लिखे बुद्धिमानों को भी, धूर्तों ने मूर्ख बनाया है।
विज्ञान के युग में भी मानव को, सत्य मार्ग से भटकाया है।
जीना मरना सब ईश्वराधीन है, यह उनको समझाने वाला ना रहा।
आर्यवर्त्त गर्त ...

कहीं शुद्ध स्थान पर मौन बैठकर ईश्वर में ध्यान लगाओ तुम
माता पिता वृद्धों की सेवा कर, जग में नाम कमाओ तुम
मर्यादा संयम में रहकर सच्चा गृहस्थ निभाओ तुम
खान पान सब सादा रखो, सब व्यसनों को दूर भगाओ तुम
स्वाध्याय हमने छोड़ दिया अब, यह समझाने वाला कोई ना रहा।
आर्यवर्त्त गर्त ...

www.thearyasamaj.org

आओ वैतरणी नदी की वास्तविकता जानें!

- हरिशंकर अग्निहोत्री -
५, आनन्द ब्रादर्स, सब्जी मण्डी मार्केट
बल्केश्वर, आगरा-२५२००४ (उ.प्र.)
चलभाष- ९८९७०६०८२२

प्रस्तुत लेख में एक प्रचलित कहानी का उल्लेख किया जा रहा है। इस कहानी के माध्यम से कौन-कौन सी भ्रांतियां फैली हैं तथा इन भ्रांतियों से समाज पर क्या-क्या कुप्रभाव हुए हैं? कहानी का सच्चा स्वरूप क्या है? तथा कहानी के सच्चे स्वरूप से एक स्वस्थ एवं सच्चे समाज का निर्माण हो सकता है। यह भी उल्लेख किया गया है। आओ विचार करें-

कहानी कुछ इस प्रकार है कि मृत्यु के बाद जीवात्मा शरीर छोड़कर यम के दरबार में उपस्थित होता है। यम के दरबार में चित्रगुप्त के द्वारा जीवात्मा के कर्मों का लेखा जोखा यम के सामने रखा जाता है जिसके आधार पर यम जीवात्मा को स्वर्ग या नरक प्रदान करते हैं। जीवात्मा को वैतरिणी नदी को भी पार करना होता है। वैतरिणी नदी में रुधिर और पीप भरा हुआ है तथा नदी में जहरीले एवं भयानक जीव भी हैं जो जीव को खाते हैं कष्ट देते हैं, पार नहीं होने देते। नदी में एक गाय भी है जो जीव गाय की पूंछ पकड़ लेता है वह वैतरिणी नदी से पार हो जाता है।

ऊपर लिखित कहानी समाज में प्रचलित है जिसके चलते अनेक भ्रांतियां हुई हैं। ध्यान दें-भ्रांतियां इस प्रकार है:-

१. यम कोई अलग देव है जो परमात्मा का न्याय विभाग चलाता है वैसे ही जैसे समाज में प्रचलित है कि ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र जैसे निर्माण, पालन और संहार करने वाले देव हैं तथा परमात्मा अलग है।

२. यम का दरबार कहीं अन्यत्र है।

३. व्यक्ति के मरने के बाद ही कर्मों का निर्णय होता है।

४. मृत्यु के बाद स्वर्ग या नरक मिलता है।

५. कहीं अन्यत्र वैतरिणी नदी भी है।

६. गाय दान करने से व्यक्ति वैतरिणी (भवसागर) से तर जाएगा।

७. व्यक्ति जो पाप कर्म करता है पुण्य करने से पाप कट जाते हैं। परमात्मा प्रसन्न होने पर क्षमा कर देता है।

उपरोक्त भ्रांतियों के रहते व्यक्ति अकर्मण्य, आलसी तथा असत्य के साथ जीवन को रिश्वतखोरी से सफल करना चाहता है। जैसे पापी-अपराधी व्यक्ति भी जब गाय दान करने से तर जाएगा तो सभी क्षेत्रों में पवित्रता-सत्यता, कर्त्तव्य पालन के स्थान पर चापलूसी, बेईमानी एवं धोखाधड़ी अर्थात् घोटालों का राज हो जाता है।

आइये कहानी के सच्चे स्वरूप पर विचार करते हैं फिर सच्चे स्वरूप का समाज पर प्रभाव देखेंगे।

सबसे पहला प्रश्न है कि यम कौन है?

१. षळिद् यमा ऋषयो देवजा इति। (ऋग्वेद १/१६४/१५)

२. शकेम वाजिनो यमम्। (ऋग्वेद २/५/१)

३. यमाम जुहूता हविः। यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः। (ऋग्वेद १०/१४/१३)

४. यमः सूयमानो विष्णुः सम्भ्रियमाणो वायुः श्यमानः। (यजुर्वेद ८/५७)

५. वाजिनं यमम् (ऋग्वेद ८/२४/२२)

६. यमं मातरिश्वानमाहूः। (ऋग्वेद १/१६४/४६)

ऊपर लिखित मन्त्रों में क्रमशः (१) ऋतुओं, (२) वायु, (३) अग्नि तथा परमेश्वर का नाम यम है।

यम शब्द के अनेक अर्थ हैं। कहानी के यम का विषयगत अर्थ परमेश्वर ही है। परमेश्वर एक है और वह सर्वशक्तिमान है। परमेश्वर जब सृष्टि के निर्माण, पालन और संहार का कार्य करता है तो किसी की सहायता नहीं लेता है। **परमात्मा को अलग से कोई विभाग या विभाग का अधिकारी बनाने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि वह स्वयं ही सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है।**

ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, शिव, मंगल, शनि, सूर्य, सरस्वती, लक्ष्मी, उसी के नाम हैं। यम भी उसी परमात्मा का नाम है। महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक अमर ग्रन्थ में परमात्मा के गुण-कर्म स्वभावानुसार सौ नामों की व्याख्या की है।

सब जगत् के बनाने से '**ब्रह्मा**', सर्वत्र व्यापक होने से '**विष्णु**' दुष्टों को दण्ड देकर रूलाने से '**रुद्र**', मंगलमय और सबका कल्याणकर्ता होने से '**शिव**', जो आप मंगलस्वरूप और सब जीवों के मंगल का कारण है इसलिए उस परमेश्वर का नाम '**मंगल**' है। जो सब में सहज प्राप्त धैर्यवान है इससे उस परमेश्वर का नाम '**शनैश्चर**' हैं, स्वप्रकाश स्वरूप सब के प्रकार करने से परमेश्वर का नाम '**सूर्य**' है। जो सब जगत् के बनाने में समर्थ है इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'शक्ति', जिसको विविध विज्ञान अर्थात् शब्द, अर्थ सम्बन्ध प्रयोग का ज्ञान यथावत् होवे, इससे उस परमेश्वर का नाम '**सरस्वती**' है,जो सबको देखता, सब शोभाओं की शोभा और जो वेदादि शास्त्र व धार्मिक विद्वान योगियों का लक्ष्य अर्थात् देखने योग्य है, इससे उस परमेश्वर का नाम '**लक्ष्मी**' है। इसी प्रकार '**यमु उपरमे**' इस धातु से यम शब्द सिद्ध होता है। '**सर्वान् प्राणिनो नियच्छति स यमः**' जो सब प्राणियों के कर्मफल की व्यवस्था करता है और सब अन्यायों से पृथक रहता है इसलिए उस परमेश्वर का नाम '**यम** है।'

चित्रगुप्त को समझने के लिए हमें सांख्य दर्शन का सहारा लेना

www.thearyasamaj.org

पड़ेगा। जिसमें महर्षि कपिल लिखते हैं कि महत् + अहम् + मन + ५ ज्ञानेन्द्रियाँ, + ५ कमेन्द्रियाँ + ५ तन्मात्राएं = १८ तत्व मिलाकर परमात्मा सूक्ष्म शरीर का निर्माण करता है जिसे सृष्टि के आरम्भ में प्रत्येक आत्मा के साथ जोड़ दिया जाता है। ५ तन्मात्राओं के बाद ५ स्थूलभूत तैयार करके परमात्मा स्थूल शरीर का निर्माण करता है। जो दिखाई दे रहा है वह स्थूल शरीर ही है। स्थूल शरीर के अन्दर सूक्ष्म शरीर, सूक्ष्म शरीर के अन्दर आत्मा तथा आत्मा के अन्दर परमात्मा विद्यमान रहता है।

स्थूल शरीर के द्वारा जो भी कर्म किये जाते हैं उन कर्मों का पूर्ण विवरण सूक्ष्म शरीर में सुरक्षित रहता है इसीलिए पौराणिक भाषा में सूक्ष्म शरीर को ही चित्रगुप्त कहते हैं, क्योंकि यह चित्रों (कर्मों) को गुप्त रखता है।(कर्म ही नहीं अंत:करण में उठने वाले दुर्विचार भी परमात्माकृत इस सी.सी.टी.वी. कैमरे में कैद हो जाते हैं। - **सम्पादक**)

जीवात्मा शरीर को कर्मों के आधार पर प्राप्त करता है वे मनुष्य शरीर में आकर जो कर्म करता है वे सभी संचित होकर प्रारब्ध (**भाग्य**) बनते रहते हैं तथा कुछ कर्मों का फल तत्काल मिल जाता है तथा कुछ का फल एक दो महीने या वर्षों बाद मिलता है। कुछ कर्मों का फल मृत्यु के बाद दूसरे जन्म और व्यवस्थाओं के रूप में प्राप्त होता है। यह परमात्मा की न्याय व्यवस्था है। कर्मों का फल मिलता अवश्य है इससे वंचित नहीं रह सकते हैं।

स्वर्ग और नरक कोई स्थान (**लोक**) विशेष नहीं होते। '**स्वर्ग**' नाम दु:ख विशेष भोग और उसकी सामग्री की प्राप्ति का है तथा '**नरक**' जो दु:ख विशेष भोग और उसकी सामग्री को प्राप्त होना है। स्वर्ग और नरक सरल भाषा में सुख और दु:ख का नाम है जो मृत्यु से पहले और मृत्यु के बाद जन्म-जीवन के साथ जुड़ा हुआ है। जीवात्मा को जितने शरीर प्राप्त होते हैं - जलचर, थलचर, नभचर, अण्डज, स्वेदज, जरायुज, उद्भिज अर्थात् पशु, पक्षी कीड़े, मकोड़े आदि में मनुष्य का शरीर ही केवल उभय योनि अर्थात् कर्म और भोग दोनों से जुड़ा हुआ है, शेष सभी केवल भोग योनि है, उनके कर्मों का कोई विशेष अर्थ नहीं है, वे केवल भोग भोग रहे हैं, जबकि मनुष्य भोग के साथ कर्म भी करता है जिसमें वह स्वतंत्र है। इसीलिए **मनुष्य शरीर को ही वैतरिणी कहा है अर्थात् जहां से तरने का साधन मिलता है। इस शरीर रूपी वैतरिणी में ही रुधिर और पीप भरा है। यहां गाय को धर्म रूपी नियम अनुशासन के लिए प्रयोग किया गया है अर्थात् मनुष्य शरीर को पाकर यदि धर्म करे तो तर जायेगा और यदि अधर्म करेगा तो पुन: -पुन: जन्मता और मरता रहेगा।** काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या आदि जीवात्मा को पार होने से बाधक तत्व है। गाय दान करने से पाप कर्मों से छुटकारा नहीं होगा। यहां मनु का एक श्लोक विषय को और स्पष्ट करेगा।

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षित:।
तस्माद् धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्मो हतो वधीत् । (मनु.)

मरा हुआ धर्म मारने वाले का नाश, और रक्षित किया हुआ धर्म रक्षक की रक्षा करता है इसीलिए धर्म का हनन कभी न करना, इस डर से कि मारा हुआ धर्म कभी हमको न मार डाले।

समाज के लोग अधिकतर हिन्दू, मुस्लिम, जैन, बौद्ध, ईसाई, पारसी, यहूदी, सिख आदि को धर्म मानते हैं जबकि ये धर्म नहीं है। ये सम्प्रदाय है। धर्म तो परमात्मा के द्वारा बनाया गया संविधान है जो सभी के लिए एक जैसा है तथा वेदों में वर्णित है।

महर्षि दयानन्द धर्म के विषय में लिखते हैं- '**जो पक्षपात रहित, न्यायाचरण, सत्यभाषणादि युक्त ईश्वराज्ञा वेदों से अविरूद्ध है उसको 'धर्म' मानता हूं।**' अर्थात् न्याय करना धर्म ही है चाहे हिन्दू करे या मुसलमान या अन्य कोई। जो न्याय करता है वह धर्म ही करता है। इसी प्रकार निष्पक्षता और सत्य व्यवहार धर्म ही है।

धर्म क्या है? (धर्म की विस्तृत जानकारी के लिए लेखक की पुस्तक '**धर्म की यथार्थता**' अवश्य पढ़ें।)

परमात्मा (यम) प्रत्येक जीवात्मा को उसके कर्मों का फल देता है जो जैसा कर्म करता है उसे परमात्मा वैसा ही फल देता है।

परमेश्वर की कर्मफल व्यवस्था के विषय में समाज में प्रचलन है कि -

१. जो जैसा करता है परमात्मा उसे वैसा ही फल देता है।

२. परमेश्वर भी समय के साथ बदल गया है, आज दुष्ट सुखी है, अच्छे लोग दुखी हैं।

३. यदि तथाकथित धर्माचार्यों से मिलें तो वे कहते हैं कि हमारे पास ऐसे कई साधन हैं। जिनके द्वारा हम आपको दु:खों से छुड़ाकर सुख दे सकते हैं अर्थात् परमात्मा की व्यवस्था को हम बदल देते हैं।

जन सामान्य स्वयं में फंसा हुआ सा महसूस करता है कि क्या करें-

आइये विचार करते हैं कि क्या कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है या कर्म फल बदला जा सकता है।

यदि यह मानें कि रिश्वत देने से (भोग लगाने से) परमात्मा प्रसन्न होता है तो समाज में बुरे कर्म होते ही रहेंगे जैसे न्याय न मिलने पर व्यक्ति अन्याय करता है। इस बात को स्पष्ट करने के लिए यहां एक उदाहरण लेते हैं - (१) बेईमान व्यक्ति को रिहाई (२) ईमानदार व्यक्ति को सजा। इसी प्रकार यदि हम यह समझें कि **परमात्मा दान, भण्डारा, जागरण, स्नान आदि से प्रसन्न होकर हमारे पाप कर्मों को क्षमा कर देता है तो यह बात ईश्वरीय न्याय सिद्धांत के विरूद्ध है। यदि ऐसा मान लें तो व्यक्ति पाप कर्म करके भण्डारा कराने व जागरण करके तथा विभिन्न स्थलों पर स्नान करके पुन: पाप कर्मों में जुट जाएगा।**

यदि परमेश्वर समय के अनुसार बदलता है तो परमेश्वर के बदलने का इन्तजार करना पड़ेगा। जब परमेश्वर बदलेगा तब ही सही हो पायेगा। इस बात का प्रचार भी पाप कर्मों को बढ़ावा देता है। बात यह है कि **परमात्मा की न्याय व्यवस्था कुछ ऐसी है कि कुछ तो साफ-साफ दिखाई देती है तथा कुछ विशेष अध्ययन व चिन्तन से पता चलता है।** आइये इसे समझने का प्रयास करते हैं। प्रथम तो हम यह समझें कि परमात्मा न्यायकारी है न्याय उसे कहते हैं कि जो जैसा कर्म करे उसे वैसा ही फल प्राप्त हो यथा पुण्यात्मा को सुख, पापी को दु:ख।

महाभारत शान्ति पर्व-

आत्मना विहितं दु:ख आत्मना विहितं सुखम् ।
गर्भशययामुपादाय भुज्यते पौर्वदेहिकम् ।। १८१/१४

दु:ख अपने ही किए हुए कर्मों का फल है और सुख भी अपने ही

www.thearyasamaj.org

पूर्व कृत कर्मों का परिणाम है। जीव माता की गर्भ शैया में आते ही पूर्व शरीर द्वारा उपार्जित सुख, दुख का उपभोग करने लगता है।

यथा धेनु सहस्त्रेषु वत्सो विदन्ति मातरम् ।
तथा पूर्वकृतं कर्म कर्त्तारमनुगच्छति।। १८१/१६

जैसे बछड़ा हजारों गौओं में अपनी माँ को पहचान कर उसे पा लेता है, वैसे ही पहले का किया हुआ कर्म भी कर्त्ता के पास पहुंच जाता है।

राम कहते हैं कि पहले जन्म में हमने इच्छानुसार बारम्बार बहुत सारे पाप कर्म किये हैं, आज उनका फल मिल रहा है इसी कारण हमारे ऊपर दु:ख के ऊपर दु:ख पड़ रहे हैं। राज्य का नाश होना, पिताजी का मरना, माताजी का वियोग होना, बन्धु बान्धवों से छूटना, यह सब बातें याद आती है तो हमारे शोक के वेग को परिपूर्ण कर देती हैं।- रामायण (अरण्य काण्ड) -

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ।
नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि ।। -अत्रिस्मृति

अच्छा या बुरा कर्मफल अवश्य ही भोगना पड़ता है चाहे जितना भी समय हो जाए बिना भोगे कार्य की समाप्ति नहीं होती है।

सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगा:।। १३

अर्थात् -कर्माशय का विपाक जाति, आयु, भोग रूप होता है।

ते ह्लादपरितापफला: पुण्यापुण्यहेतुत्वात।। १४

-योगदर्शन (साधनपाद)

अर्थात् - पुण्य और पाप होने से वे (जाति, आयु, भोग) सुख-दुख रूप फल वाले होते हैं-

आ यो धर्माणि प्रथम: ससाद, ततो वपूंषि कुणुषे पुरूणि।
धास्युर्योनिं प्रथम आ विवेशा, यो वाचमनुदितां चिकेत।।

अथर्ववेद - ५/१/१/२

जो मनुष्य पूर्व जन्म में धर्माचरण करता है, उस धर्माचरण के फल से अनेक उत्तम शरीरों को धारण करता और अधमात्मा मनुष्य नीच शरीर को प्राप्त करता है। जो पूर्व जन्म में किये हुए पाप-पुण्य के फलों को भोग करने के स्वभाव युक्त जीवात्मा है, वह पूर्व शरीर को छोड़ के वायु के साथ रहता है, पुन: जल, औषधि वा प्राण आदि में प्रवेश करके वीर्य में प्रवेश करता है तदनन्तर योनि अर्थात् गर्भाशय में स्थिर हो के पुन: जन्म लेता है।

जो जीव अनुदित वाणी अर्थात् जैसी ईश्वर ने वेदों में सत्यभाषण करने की आज्ञा दी है, वैसा ही यथावत ज्ञान के बोलता है और धर्म ही में यथावत् स्थिर रहता है वह मनुष्य योनि में उत्तम शरीर धारण करके अनेक सूखों को भोगता है और जो अधर्माचरण करता है वह अनेक नीच शरीर अर्थात् कीट, पतंग, पशु आदि के शरीर को धारण करके अनेक दु:खों को भोगता है।

द्वे सृती अशृणवं पितृणामहं देवानामुत मर्त्यानाम् ।
ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरं मातरंच।। -यजुर्वेद

संसार में हम दो प्रकार के जन्मों को सुनते हैं। एक मनुष्य शरीर का धारण करना और दूसरी नीच गति से पशु, कीट, पतंग, वृक्ष आदि को होना। इसमें मनुष्य शरीर के तीन भेद हैं। एक पितृ अर्थात् ज्ञानी होना, दूसरा देव अर्थात् सब विद्याओं को पढ़ के विद्वान होना, तीसरा मर्त्य अर्थात् साधारण मनुष्य का शरीर धारण करना। इनमें प्रथम गति अर्थात् मनुष्य शरीर पुण्यात्माओं और पुण्य-पाप तुल्य वालों को होता है और दूसरा जो जीव अधिक पाप करते हैं, उनके लिए हैं, इन्हीं भेदों से सब जगत् के जीव अपने पुण्य और पाप के फल भोग रहे हैं।

जीवों को माता-पिता के शरीर में प्रवेश करके जन्म धारण करना पुन: शरीर छोड़ना, फिर जन्म को प्राप्त होना बारंबार होता है।

प्रमाणों के आधार पर कहानी का सच्चा स्वरूप-

(१) परमात्मा ही यम है जो जीवों का कर्मफलदाता है।

(२) यम का दरबार प्रत्येक के साथ हर समय रहता है।

यम- परमात्मा, चित्रगुप्त-सूक्ष्म शरीर, आत्मा-जीव

(३) कर्मफल ईश्वरीय व्यवस्था है। कुछ कर्मों का फल तत्काल मिल जाता है, कुछ का १ या २ महीने-वर्षों के बाद मिलता है तथा कुछ कर्मों का फल मृत्यु के बाद भी जन्म लेने पर (शरीर धारण करने के बाद) प्राप्त होता है।

(४) जीवन और मृत्यु के बाद दोनों अवस्थाओं में सुख-दु:ख को ही स्वर्ग-नरक कहते हैं।

(५) स्वर्ग और नर्क अलग से कोई लोक या स्थान नहीं है। यही सुख और दु:ख का नाम है।

(६) वैतरिणी नदी मनुष्य का शरीर है। इस शरीर को प्राप्त होकर जीव मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

(७) जो जीव मनुष्य शरीर को प्राप्त करके धर्म का आचरण करता है, वह भव सागर (जन्म-मृत्यु के चक्र) से पार हो जाता है।

गाय-धर्म-वेदानुकूल व्यवहार

(८) जीव मनुष्य शरीर को प्राप्त करके पाप पुण्य करता है। परमात्मा की न्याय व्यवस्था में उसे अवश्य फल मिलता है। पूजा-अर्चना, आराधना, उपासना, स्तुति, प्रार्थना आदि या भण्डारा, अभिषेक, गंगा स्नान, दान आदि से कर्मफल को बदला नहीं जा सकता है।(इन कार्यों में कुछ से जैसे वेदादिशास्त्रों का स्वाध्याय, ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना, दान आदि से हमारी बुद्धि में निर्मलता आती है तथा ज्ञान की प्राप्ति होकर हमारा आत्मिक बल बढ़ता है। जिस कारण हम सद्कर्मों के प्रति दृढ़ होते हैं। यह सब अच्छे कर्मों का फल है। - सम्पादक)

हमारी इस चर्चा का मुख्य उद्देश्य यह है कि कहानी के सच्चे स्वरूप को समझ कर समाज में प्रचारित कर दिया जाए तो चोरी, डकैती, बदमाशी, व्याभिचार, अनाचार, भ्रष्टाचार सभी बन्द हो जाएंगे, क्योंकि जब व्यक्ति को यह समझ आ जायेगा कि कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है तो वह अच्छे कार्य करेगा और यह कह दिया जाए कि कर्मफल को उपासना दान आदि द्वारा बदला जा स कता है तो वह दान या उपासना करते हुए गलत कार्य करता रहेगा, यहां यह कहना अति आवश्यक है कि दान या उपासना का लाभ है, लेकिन इतना लाभ नहीं है कि यह किसी के पाप कर्मफल को बदल सके इसीलिए कर्म अच्छे ही करने चाहिए। •

www.thearyasamaj.org

राष्ट्र निर्माण

- नरेंद्र आहूजा 'विवेक' -
६०२ जी.एच. ५३, सेक्टर-२०
पंचकूला, हरियाणा
चलभाष- ९४६७६०८६८६

किसी भी राष्ट्र की मजबूत बुलन्द इमारत के निर्माण के लिए सर्वाधिक आवश्यक है कि उस इमारत के निर्माण में प्रयोग होने वाली इकाई अर्थात् प्रत्येक ईंट मजबूत हो और अटूट बन्धन में एक-दूसरे के साथ जुड़ी हुई हो। जिस प्रकार इमारत के निर्माण में ईंट का मजबूत होना आवश्यक है ठीक उसी प्रकार राष्ट्र के निर्माण में उसकी प्रत्येक इकाई अर्थात् प्रत्येक नागरिक का मजबूत होना आवश्यक है। प्रत्येक नागरिक के मजबूत होने के लिए उसमें कुछ गुण विशेष होने अत्यंत आवश्यक है।

अथर्ववेद के बारहवें कांड का प्रथम सूक्त भूमि सूक्त के नाम से सुविख्यात है और अपनी मातृभूमि अपने राष्ट्र के निर्माण के लिए एक नागरिक के रूप में जिन गुणों को धारण करना अनिवार्य बताया गया है। **सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।** इस मन्त्र में नागरिकों के लिए जिन आवश्यक गुणों का वर्णन किया गया है वह **बृहत् सत्यं** अर्थात् अटल सत्य निष्ठा, दूसरा **ऋतं**-यथार्थ ज्ञान, **उग्रं**- क्षात्र तेज, **तपः**- धर्म का पालन, **दीक्षा**-हर काम करने में दक्षता, **ब्रह्म**-ईश्वरीय ज्ञान, **यज्ञः**- परोपकार, दान और त्याग। नागरिकों के ये गुण अपनी मातृभूमि देश व राष्ट्र का पालन पोषण व रक्षण करते हैं। हमारी मातृभूमि हमारी धरतीमाता हम सभी को धारण करके हमारा पालन पोषण और हमारे सुख के साधन हमें बड़ी सुलभता से उपलब्ध करवाती है। हमारा भी अपनी धारण करने वाली राष्ट्र माता के प्रति कुछ दायित्व बनता है। परस्परतंत्रता के सिद्धांत के अंतर्गत जिस प्रकार यह भूमि, पृथिवी, भारतमाता हमें धारण कर रही है हम भी वेद मन्त्र में दिए गुणों को धारण करके और आपस में सौहार्द्र, समरसता और प्रेम के अटूट बन्धन में बन्धकर भारत माता का पालन पोषण करें।

आइए अब इन गुणों पर एक-एक करके विचार करते हैं। **बृहत् सत्यं** यानि अटल सत्य निष्ठा। हमारी निष्ठा केवल अपने राष्ट्र के प्रति हो जो भूमि हमारा पालन पोषण कर रही है हम उसी के प्रति पूर्णतया समर्पित हों। यदि हम रहें तो यहां, खायें तो यहां लेकिन गुण गाएं किसी अन्य के या फिर हमारी निष्ठा अपनी मातृभूमि के प्रति न होकर किसी अन्य देश के साथ हो तो हम कृतघ्नता दोष के अपराधी देशद्रोही कहलाएंगे। सरल शब्दों में हमारी अटल सत्य निष्ठा, सर्वस्व समर्पण केवल अपने राष्ट्र के प्रति होना चाहिए। दूसरा गुण **ऋतं** अर्थात् यथार्थ का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। इस यथार्थ ज्ञान में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद समाया हुआ है यानि हमें अपनी संस्कृति का सम्पूर्ण ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। हमारी पुरातन सनातन वैदिक संस्कृति जिसका ज्ञान सृष्टि के रचयिता परमपिता परमेश्वर ने इस सृष्टि में रहने वाले समस्त प्राणियों के लिए एक नियमावली के रूप में चार ऋषियों के माध्यम से दिया था अर्थात् इस वैदिक सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा में पूरी सृष्टि, पूरी धरती और इसके सभी देश आ जाते हैं। अन्य सभी मत-मतांतर तो किसी न किसी स्वार्थ की भावना के वशीभूत प्रतिक्रिया स्वरूप चलाए गए हैं। संस्कृति में मनुष्य के आंतरिक जीवन मूल्य और नैतिकता आती है जो सत्य होने के कारण सदा अपरिवर्तनीय रहते हैं। सभ्यता तो उस संस्कृति के बाह्य चिह्नों का नाम है। हम नागरिकों के लिए अपने पुरातन सनातन वैदिक संस्कृति के यथार्थ ज्ञान का होना अत्यंत आवश्यक है। तीसरा गुण है **उग्रं** अर्थात् क्षात्र तेज जो कि देश की भौगोलिक सीमाओं की रक्षा और उसके विस्तार के लिए अत्यंत आवश्यक है। बलशाली राष्ट्र के लिए उसके प्रत्येक नागरिक में आत्मिक शारीरिक और सामाजिक बल का होना राष्ट्र की रक्षा के लिए आवश्यक है। चौथा गुण **तपः** अर्थात् धर्म का पालन और मनुष्य के रूप में हमारा धर्म मनुष्यता है। मनुष्य होने के लिए आवश्यक गुण है मननशील व विचारवान होना, सभी से स्वआत्मवत और यथायोग्य व्यवहार करना, निर्बल धर्मात्माओं का संरक्षण, दुष्टों को दंड देते हुए परोपकार के कार्य करना हमारे धर्म का मूल **सब सत्य विद्याओं का पुस्तक ईश्वरीय वाणी वेद है।** अतः धर्म के पालन के लिए वेद ज्ञान होना भी आवश्यक है। पांचवां गुण है **दीक्षा** अर्थात् कार्य करने में दक्षता। **'योगः कर्मसुकौशलम्'** कहते हुए योगेश्वर कृष्ण ने कार्यों में कुशलता व दक्षता को ही योग कहा है। अतः राष्ट्र को उत्तरोत्तर प्रगति के लिए उसके नागरिकों को अपने-अपने कार्यों में पूर्णतया कुशल व दक्ष होना आवश्यक है।

छठा गुण है **ब्रह्म** अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान। इसके अंतर्गत हम मनुष्यों को जीवात्मा परमात्मा के सत्य स्वरूप और संबंधों का सत्य ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। **उस एक सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, दयालु, न्यायकारी, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वअन्तर्यामी, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, अमर, अनुपम नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता ईश्वर का बोध होना अत्यन्त आवश्यक है।** इससे हम धार्मिक आडम्बरों, मत-मतान्तरों के मकड़जाल से बचकर एक सूत्र में बन्धकर पाखंडियों के शोषण से बच सकते हैं। सातवां गुण **यज्ञः** जिसे देव दयानन्द ने हम सभी के लिए नित्यकर्म निर्धारित किया है और इस यज्ञ को मनुष्य अपने जीवन में धारण करे तथा अपने आत्मा में ज्ञान की अग्नि को उद्बुध करके प्रत्येक श्वास- प्रतिश्वास के साथ सद्कर्मों की आहूति देता रहे। इस यज्ञ में दान, त्याग व परोपकार की भावना समाहित होती है।

यदि राष्ट्र के नागरिक के रूप में इन गुणों को धारण करके परस्पर सौहार्द्र, समरसता और प्रेम के अटूट बन्धन में बंध जाएं तो उन्नत राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। ●

www.thearyasamaj.org

उठों युवकों! भारत माता तुम्हें निहार रही खड़ी-खड़ी।

आज है, समस्याएं सामने इसके जटिल और बड़ी-बड़ी।।
दूध, घी, जो शक्ति की खान हैं, शराब ने ले लिया उसका स्थान है।
खाते अण्डे, मांस, तम्बाकू और पान हैं,
जिससे बढ़ रहा चारित्रिक नुकसान है,
इन दुर्व्यसनों को दूर करने की, जरूरत है आज बड़ी?

उठो युवकों भारत माता...

सिनेमा, टीवी, का हो रहा प्रचार खास है,
अश्लील साहित्य से हो रहा, ब्रह्मचर्य का विनाश है।
खेलते जुआ, चौपड़ और ताश हैं,
बताओ ऐसे युवकों से देश को क्या आस है।
नव जागरण के बिगुल बजाने की आ गई है घड़ी....

उठो युवकों भारत माता...

प्राचीन शिक्षा का प्रचार खत्म है,
पश्चिमी सभ्यता का बढ़ रहा महत्व है
अज्ञान, पाखण्ड का हो रहा ताण्डव है,
नव युवक हो रहा प्राय: सद्ज्ञान से रहित है।

उठो युवकों भारत माता...

वैदिक शिक्षाओं का प्रचार करो तुम,
संयम, सदाचार का संचार करो तुम,
मानव मात्र की सेवा से प्यार करो तुम,
सुपथ पर बढ़ने का प्रयास करो तुम,
चरित्रवान युवकों की एक विशाल सेना कर दो खड़ी...

उठो युवकों भारत माता...

आतंकवाद, प्रथकतावाद का हो रहा बड़ा जोर है,
देश द्रोहियों, भ्रष्टाचारियों का चहुंओर मच रहा शोर है,
जिससे देश बन रहा दिन प्रति दिन बड़ा कमजोर है,
इनको चलना ही आज कार्य सिरमौर है,
बना दो देश की हालत खुशहाल, जो आज जर्जर हुई पड़ी....

उठो युवकों भारत माता...

- खुशहालचन्द्र आर्य -
१८० महात्मा गान्धी रोड (दो तल्ला)
कोलकत्ता (पश्चिम बंगाल)
चलभाष - ०९८३०१६५७९४

त्वरित प्रतिक्रिया

क्यों और आखिर कब तक?

थोड़े-थोड़े विराम के बाद ऐसी शर्मनाक
घटनाओं की पुनरावृत्ति हो ही जाती है!
न जाने हमें कमजोर मान कर अथवा
हमारी सहनशीलता को गलत समझकर?
अभी चार दिन नहीं हुए कि हमारी
विदेशमन्त्री के सख्त नाराजगी दिखाने पर
इस कम्पनी ने जो भारत में भी अपना बड़ा
कारोबार फैलाए हुए हैं, हमारे राष्ट्र ध्वज
की छाप वाले पावदान बाजार में लाने पर
खेद व्यक्त किया था और इस बेहूदे उत्पाद के
बाजार से अविलम्ब वापस करने का वादा किया था
और अब... हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी की
फोटो वाले चप्पल बाजार में ले आई है।
क्या यह बहुराष्ट्रीय कम्पनियां इतनी अनजान हैं?
या ये हमारे जैसे देशों को अपने सामने
कुछ नहीं गिनती है?
या हमारे में इतनी भी सामर्थ्य नहीं है कि
इस कम्पनी और अन्य ऐसी कम्पनियों को
आगाह कर सकें कि बहुत हो गया, अब और नहीं?

क्या नज़र लगती है?

क्या यह भी एक वहम है, एक चला आ रहा अंधविश्वास? बहुत लोग इसे मानते हैं, गांव देहात के लोग ही नहीं शहर के पढ़े लिखे समझदार लोग भी, गांवों में तो खैर अभी भी इसे इतना मानते हैं कि इसी को लेकर झगड़े फसाद फौजदारी तक होते रहते हैं। क्या नज़र उतारने से नज़र का असर दूर हो जाता है? लोग यह भी मानते हैं कि अकसर ऐसा देखने में भी आता रहता है! मोबाइल में कैमरा होने से अब लोग घर के बच्चों के फोटो लेते रहते हैं। वाट्सएप और फेसबुक पर डालते हैं। बहुत बार बच्चे को नज़र लग जाती है। घर की महिलाएं ही नमक से या लाल मिर्च से नजर उतार देती हैं।

(नजर उर्दू शब्द है जिसका हिन्दी नाम दृष्टि है। क्या दृष्टि कभी किसी को लगी है। अथवा लग सकती है? यह घोर अज्ञानता और आत्मबल की दुर्बलता का परिचायक है। -सम्पादक)

- ओमप्रकाश बजाज -
कालिंदी कुंज, पिपलिया हाना, इंदौर
चलभाष- ९८२६४-९६९७५

www.thearyasamaj.org

जातिवाद का मच्छर लहू लील रहा है। धर्मवाद का जहर रगों में बढ़ रहा है।
भौतिकता की लौ में भ्रष्टाचार पल रहा है। संकीर्णता की लू में भारत वर्ष जल रहा है।

महामहिमों, माननीयों की महानता वेतन भत्तों में

भाड़ में जाये देश-भक्ति, फले-फूले खूब धर्म-जातिवाद।
पद लोलुप, धन-पिपासा में मस्त, भारत के कर्णधार।।
कबीर-बड़ा हुआ सौ क्या भया, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लगे अति दूर।।
अधमा धनमिच्छन्ति धनं मानं च मध्यमाः।
उत्तमा मान मिच्छन्ति मानो हि महतां धनम् ।। -चाणक्य

अर्थात् - अधम मनुष्य धन की इच्छा करते हैं, मध्यम धन और मान दोनों की इच्छा करते हैं। उत्तम मनुष्य केवल मान की इच्छा करते हैं, महापुरुषों का सबसे बड़ा धन मान ही है।

जबकि महामहिम (राष्ट्रपति, राज्यपाल) माननीय (विधायक, सांसद) आदि वेतन-भत्ते और प्रतिशत की इच्छा करते हैं।

समय समय की बात है समय समय के रोग। करोड़ों में बिकते हैं दो कौड़ी के लोग।

भारत की जनता के सेवक, विकासक, हितकर आदि कहलाने वाले माननीय हकीकत में प्रायः शोषक, भक्षक, सेवा के नाम पर मेवा बनाना जबकि निर्धन किसान, मजदूरों का विकास नहीं वरन् विनाश के कारण आत्महत्या पर मजबूर है। इनकी दुर्गति होने पर भी महामहिमों के वेतन में दो सौ प्रतिशत का इजाफा, माननीयों के वेतन भत्तों में सौ प्रतिशत का फायदा, इनके अलावा आलिशान आवास, रेल-वायुयान, यात्रा टेलीफोन, मोबाइल, बिजली आदि सुविधाएं मुफ्त, क्योंकि इनके हाथों में है ताला-चाबी तो क्यों न होगी मनमानी, अपना हाथ जगन्नाथ, अन्धा बांटे रेवड़ी, फिर-फिर आपुन को दे. कहावते सौ प्रतिशत सिद्ध। विश्व में अगर सच्चा सेवा का पूजारी है तो सर्वोपरि डॉक्टर हैं। क्योंकि मौत से रक्षा करता है किन्तु खेद! ये डॉक्टर शिक्षा तो पा रहे हैं, इन्सानियत कदापि नहीं इन्हें सरकार द्वारा प्रदाय वेतन से कोई मायना नहीं वरन् निजी चिकित्सा ही अलाउद्दीन का चिराग है। इसी भांति माननीयों के आला वेतन-भत्तों के अलावा हर विभागों में करोड़ों-अरबों के विकास कार्य होते हैं। कर्मचारी, अधिकारी, माननीयों की सहभागिता से प्राप्त प्रतिशत ही सोने की चिड़िया है। इससे भी बढ़कर देश की अर्थ व्यवस्था को दीमक की भांति खोखली कर देने वाली माननीयों को दी जाने वाली पेंशन है। जो माननीयों द्वारा मात्र छः दिन के सेवाकाल पर ही आजीवन पेंशन पाने की पात्रता हो जाती है। जबकि साठ वर्ष आयु तक कर्मचारी की सेवा-निवृत्ति पर मिलने वाली पेंशन अब बंद कर दी। ये है भारतमाता के कर्णधारों की नीति, विधान और न्याय। अतः गुप्ताजी के अनुसार महाक्रांति पथ को वरण हेतु -

अन्याय सहकर बैठे रहना यह महा दुष्कर्म है। न्यायार्थ अपने बन्धु को दण्ड देना धर्म है।

अतः ऐसे विधि विधान वाले ये माननीय बन्धु नहीं अर्थ-तन्त्र के महा शत्रु। धर्मार्थ महाक्रान्ति ही अत्यावश्यक। वेतन भत्तों की वृद्धि के लिये कर्मचारियों को माननीयों के समक्ष कुत्ते की भांति पूंछ हिलाना, महीनों तक संघर्ष और खुदकुशी तक करनी पड़ती है। जब कहीं ऊंट के मुंह में जीरा समान दस प्रतिशत छः प्रतिशत तथा अब दो प्रतिशत वृद्धि होती है और समाचार पत्रों में बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा जाता है कि सरकार पर इतने करोड़ रुपये का आर्थिक भार पड़ेगा। जबकि माननीयों के दो सौ प्रतिशत वेतन भत्तों की वृद्धि होने पर एक अक्षर तक नहीं प्रकाशित होता है, कि सरकार पर कितना आर्थिक भार पड़ेगा। इनके वेतन की वृद्धि पर न तो कोई आयोग बैठता है न ही संघर्ष। सहज रूप से वेतन बढ़ जाता है।

भारत के मनीषियों! पन्द्रह अगस्त १९४७ को अंग्रेजों से आजादी पा ली है। किन्तु प्रजातन्त्र के नाम पर तानाशाही, निरंकुशता, अधिनायक तन्त्र ही विद्यमान है। अंग्रेज तानाशाह, क्रूर, निरंकुश, अधिनायक, पंचम जार्ज की शान और सम्मान में कवि रविन्द्र ने स्तुति गान जन-गण-मन अधिनायक जय है! दिनांक २७/१२/१९११ ई. को गाया था। आजादी के बाद संविधान में गणतन्त्र शासन लागू होने पर भी अधिनायक तन्त्र को यथावत रखते हुए कवि रविन्द्र का दासता गान जन-गण-मन अधिनायक को राष्ट्रगान के रूप में अपनाया गया, जो प्रजातन्त्र पर धिक्कार है। महापुरुषों की सर्वोपरि पहली कसौटी है। सादा जीवन उच्च विचार। अतः महामहिमों, माननीयों-भूत को झांकों, वर्तमान को बूझो तथा भविष्य को बूनों। हेतु एक विदेशी राजदूत ने जब चाणक्य की झोपड़ी को देखकर कहा अहो! इतने बड़े राष्ट्र का प्रधान मंत्री झोपड़ी में रहता है। चाणक्य ने कहा-महाशय! जिस देश का प्रधानमंत्री झोपड़ी में रहता है वहां की जनता भवनों में रहती है और जिस देश का प्रधानमंत्री गगन चुम्बी अट्टालिकाओं में रहता है वहां की प्रजा झोपड़ी में रहती है। यह था भारत के भूत का आदर्श। भारत के आज का माननीयों! (मच्छर द्वारा रक्त का शोषण, मलेरिया की बीमारी) इसी तरह गरीब किसान मजदूर द्वारा आत्महत्या के समाचार पढ़े जाते हैं। सरकार को राजस्व की प्राप्ति के लिए शराब नशाखोरी की वृद्धि अलाउद्दीन का चिराग है। वोट बैंक की फसल हेतु चुनाव में मांस, शराब, रुपये का वितरण ही नेताओं का महोत्सव है और कामयाबी का ब्रह्मास्त्र है। तत्पश्चात चाणक्य ने दूत से कहा-श्रीमान् । आप राजकीय कार्य से आये हैं या मेरे व्यक्तिगत। दूत ने कहा आचार्य! में आप से ही मिलने आया हूं। इतना कहते हुए आचार्य चाणक्य ने जलते हुए दीपक को बुझाकर दूसरा दीपक जलाया

www.thearyasamaj.org

तो नवागत अतिथि ने विस्मय से पूछा ऐसा क्यों? तब चाणक्य ने कहा जो दीपक जल रहा था मैं राजकीय कार्य कर रहा था, किन्तु आप मेरे व्यक्तिगत कार्य से आये हैं। इस लिए मैंने निजी दीपक जलाया। जबकि महामहिमों की बिजली के बिलों का भुगतान प्रतिमाह लाखों रुपयों का शासन द्वारा होता है। तो जनता अन्धेरे में ही रहेगी।

अन्धेरे में जो बैठे हैं, नजर उन पर जरा डालो। अरे ओ! देश के कर्णधारों।

एक बार अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन जा रहे थे कि उनकी नजर एक सूअर के शावक पर पड़ी जो गटर में गिरने के कारण ऊपर आने का प्रयास कर रहा था किन्तु वह बार-बार गिर जाता था। शावक की जिन्दगी और मौत के संघर्ष को देखकर महामहिम ने अपने हाथों से शावक को बाहर निकाल दिया। किसी प्रत्यक्षदर्शी व्यक्ति ने राष्ट्रपति से कहा- दया निधे। आप अमेरिका के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति होने पर भी शावक की जान बचाई, बच्चे का दर्द आप से देखा नहीं गया। और उसका निवारण किया। यह आप की बहुत बड़ी उदारता और महानता है। राष्ट्रपति ने कहा - श्रीमान् दर्द तो मेरे हृदय में हुआ और उसका निराकरण मैने किया। भारत की नारियों में पहली नारी श्रीमती प्रतिभा पाटिल महोदया को राष्ट्रपति बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। समाचार पत्रों की सुर्खियों में राष्ट्रपति महोदय की विदेश यात्रा के दौरान अपने भाई-भतीजों को भी विदेश यात्रा से गंगा स्नान कराना दया और उदारता का हाल पढ़ा गया। सेवा निवृत्ति के बाद राष्ट्रपति भवन में जो तमगे रखे जाना थे, कृपा करके महामहिमा के द्वारा अपने साथ ले जाना तथा बाद में पुनः वापिस बुलाया जाना आदि आज के माननीयों की पुत्रैषणा, वित्तैषणा के दर्द हेतु समाधानार्थ -

यह मुल्क था चाणक्य, नानक, दयानन्द, आजाद का।
आज है कर्णधारों आपका और आपकी औलाद का।।
आजाद हो माननीयों! वतन को दे दो कोई भी अन्जाम।
पर! हकीकते-तवारीखे आईना तो दहाड़ेगा।।
क्या! जिन्दाबाद या मुर्दाबाद, मुर्दाबाद मुर्दाबाद।।
जीते जी क्यों! जनता पुतलों का करती दाह-संस्कार।।

श्रम से मदद करना, सादगी त्याग की विचित्र मिसाल अमेरिका के पहले राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन जिनके नाम से देश की राजधानी का नाम वाशिंगटन विश्व विख्यात है। भारत में आदिवासी युवा क्रान्तिकारी शहीद तिलका मांझी ने सन् १९६७ में अपनी शहादत से ग्राम तिलकापुर (बिहार) को अमर किया। पंजाब में शहीदे आजम, भगतसिंह का प्रेरक शहीद करतारसिंह सराबा ने अपने सराबा गाँव को अजर अमर किया।

विश्व के महापुरुषों के विचारों पर भारत के माननीयों की कसौटी-

आदर्श राजनीति के जनक दार्शनिक प्लेटों - प्रजातन्त्र मूर्खों का शासन होता है। भारत में योग्यता धारी और राजनीतिज्ञ की नहीं वरन चुनाव में आयोग्य व्यक्तियों के विजयी उम्मीदवार प्रजातन्त्र के नाम पर अधिनायक तन्त्र चला रहे हैं।

राजनीतिज्ञ चाणक्य - **व्यक्ति गुणों से महान होता है ऊंचे पद पर बैठने से नहीं। जबकि भारत की सरकार में उंचे पदों पर बैठने हेतु गुणों की नहीं वरन् नोटों की आवश्यकता होती है।**

अमेरिकी कवि, दार्शनिक एमर्सन - समस्त महान व्यक्ति प्रायः मध्यम वर्ग से उत्पन्न होते हैं। भारत में धनाड्य वर्ग से उत्पन्न लोगों पर महानता थोपी जाती है। जैसे प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के कपड़े भारत की पावन नदी गंगा में नहीं पेरिस से धुलकर आते थे। इंग्लैण्ड के जिस महाविद्यालय में नेहरू पढ़ते थे। इनकी कारें चारों दिशा के गेट पर खड़ी रहती थी।

हिन्दी के सम्राट मुंशी प्रेमचन्द - सूट-बूट और ठाट-बाट में महानता नहीं होती है। जबकि भारत के माननीयों के सूट-बूट पर लाखों रुपये का खर्च, करोड़ों अरबों के आवास। किन्तु जनता का दिग्दर्शन।

कोठी-बोटी की चाहत में माननीय खा गया पु अरु चारा।
झूठन की चाहत में, गई आजादी की स्वर्णिम धारा।
लाख रु. कुर्बान करते हैं शौकीन कुत्तों के नाम पर।
चार रु. बर्बाद न करूं हैवानी शौक के नाम पर।।
पर ललचायी नजर से देखता है भूखा-ए गरीब।
काश! झूठन ही नसीब हो जाये पापी पेट के नाम पर।।
लाख रु. बर्बाद करते हैं, माननीय दल के झण्डे के लिये।
चार रु. बर्बाद न करूं नाहक कपड़ों के लिये।
पर ललचायी नजर से देखता है नंगा-ए गरीब।
काश! एक झण्डा ही मिल जाए लंगोटी के लिये।
हे भारत के माननीयों जहा आंखों में भर लो शर्म का पानी।
जो जी रहे हैं झूठन पर उनके हित में त्याग करो अय्याशी।

शहीदों की आत्मा की चीत्कार - ये सिलसिले कतल के, अभी और कितने होंगे।

खुदगर्ज इस वतन में अभी और कितने होंगे।
आखों में आंसू भरकर, वो शहीद सिसकते होंगे।
भ्रष्टाचार इस वतन में, अभी और कितने होंगे।

अंग्रेज साहित्यकार कार्लाइल - **छोटे के साथ सेवा और सद्व्यवहार करने वाला बड़ा व्यक्ति अपनी महानता प्रकट करता है। भारत में प्रायः माननीयों द्वारा सेवा के बजाय मेवा प्राप्ति के कुटिल व्यवहार से जैसे बड़ी मछली छोटी मछली को निगलती है ऐसे ही गरीब निगले जा रहे हैं।**

नेताओं ने बाना सेवा का जबसे पहना है।
करोड़ों का मेवा जनसेवा से कमाया है।
सेवा के नाम पर देश को लगाया खूब चूना।
खाते अपने वंशजों के देश-विदेश में खुलाया है।
काजू है बोटी है, नेताओं की प्लेटों में!
मजे ही मजे हैं, खादी के लिबासों में।

कवि, नाटककार, शेक्सपीयर - **कुछ लोग जन्म से महान होते हैं, कुछ कर्म से महानता पाते हैं, तथा कुछ व्यक्तियों पर महानता लाद दी जाती है। सन् १९६५ ई. में लालबहादुर शास्त्री**

www.thearyasamaj.org

ने पाकिस्तान द्वारा हमला करने पर शास्त्रीजी ने अपने कर्मों के बल पर (विजय) महानता पाई है। तो सन् १९६२ ई. में चीन से नेहरू ने देश को पटकनी खिलाई है। राजीव गांधी (पायलट) को प्रधानमंत्री बनाया जाना महानता लादी जाने का प्रमाण है।

अनन्त: आज के हालातों को देखते हुए जिस प्रकार भारत की गुलामी के कारण अंग्रेजी सरकार भारतीय जनता की नजर में घृणा और अपनी आंखों का कांटा बन गयी थी। ठीक ऐसे ही देश के कर्णधारों का नजारा जनता के प्रति बन चुका है। भारत का शेर-ए-दिल मदनलाल धींगरा ने निरंकुश, क्रूर कर्जन वायली को इंग्लैंड के नगर लंदन में मौत के घाट उतार दिया था। जो निर्दोष भारतीय क्रातिकारियों की मौत का बदला लिया था। जज के सामने आपने बयानों में दहाड़ते हुए कहा अंग्रेजों को भारत की तीस करोड़ जनता का मैं दोषी मानता हूं। अंग्रेजों ने भारत में बहुत काले कारनामें किये। अंग्रेजी पतिवर्ष दस करोड़ पौंड का धन भारत से इंग्लैंड लाते हैं। एक अंग्रेज भारत में सौ पौंड प्रतिमाह वेतन पाता है। इसका सीधा अर्थ यही है कि मेरे गरीब देश के एक हजार लोगों का भोजन छीनकर उन्हें मौत के मुंह में धकेलना है। मेरे एक हजार भारतीय सौ पौंड से एक माह तक आराम की जिंदगी जी सकते हैं। जबकि ये अंग्रेज अय्याशी में बर्बाद करते हैं। अत: आज भारत में मदनलाल धींगरा की आर्थिक गणना का कथन गरीब किसान मजदूर और माननीयों के वेतन, भत्ते, प्रतिशत, के कारण भूखे मरने के साथ साथ आत्महत्या कर रहे हैं। अस्तु शेर-ए-दिल धींगरा और सरदार उधमसिंह आदि शहीदों की क्रान्ति आज भारत के नवयुवकों के लिये अत्यावश्यक है। बाबू भ्रष्ट, अफसर भ्रष्ट, भ्रष्ट खाकीवर्दी। सारे भ्रष्टें की कुंजी नेता की मोहिनी कुर्सी। (जय भारतीय)●

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय तथा डी.ए.वी. कॉलेज

- स्मृतिशेष राधे मोहन -
पूर्व प्रधान-गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार समिति प्रयाग (इलाहाबाद), उ.प्र.
चलभाष-०९४१५६४९९७१

सन् १९८३, ३० जनवरी दिन मंगलवार को प्रात: स्मरणीय परिव्राजाकाचार्य वैदिक धर्म के पुनरुद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का देहावसान हो गया। समस्त आर्य जगत् में शोक की लहर महर्षि दयानन्द का महाप्रयाण लोगों के लिए अत्यन्त दुखदायी था। अगले दिन रविवार को लाहौर में पंजाब केसरी लाला लाजपत राय के नेतृत्व में एक बड़ी शोक सभा हुई उसमें यह निश्चय हुआ कि महर्षि दयानन्द की स्मृति में दयानन्द कॉलेज की स्थापना की जाये और उसके द्वारा उनके सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित नौजवानों को प्रशिक्षित करके महर्षि दयानन्द के उद्देश्यों को पूरा किया जाये। उस समय लालाजी ने उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए धन की अपील की और तत्काल ऋषि भक्तों द्वारा एक लाख रुपया एकत्र हो गया। डी.ए.वी. कॉलेज की स्थापना हुई और महात्मा हंसराज ने अपना शेष जीवन कॉलेज के लिए समर्पित कर दिया। थोड़े ही दिनों में डी.ए.वी. कॉलेज का अंकुर विशाल वृक्ष बन गया और सारे देश में डी.ए.वी. कॉलेजों की स्थापना की धूम मच गई। इसी क्रम में प्रयाग में रमाकान्त विद्याकान्त की माता जी ने मीरापुर में एक बड़े भू-भाग को डी.ए.वी. कॉलेज के लिए दान कर दिया।

प्रारंभ में एक छोटे से स्कूल के रूप में १९१४ में डी.ए.वी. की स्थापना हुई और रमाकान्त विद्याकान्त तथा यशवन्त राय आदि प्रबुद्ध आर्य सत्पुरुषों ने विद्यालय के समुन्नयन के लिए प्राणपण से जुट गये। विद्यालय के लिए एक योग्य प्रधानाचार्य की आवश्यकता हुई। उन दिनों एक नौजवान एटा जिले के नगरई गांव का रहने वाला दर्शन शास्त्र और अंग्रेजी में एम.ए. करके प्रतापगढ़ में एक स्कूल में अध्यापक था। उसमें महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को प्रचार-प्रसार में फैलाने की बहुत ललक थी। संयोग से रमाकान्त जी ने उसको ढूंढ लिया और उससे डी.ए.वी. कॉलेज में अध्यापन के लिए प्रार्थना की। वह व्यक्ति दयानन्द का क्रितदास बन चुका था इसलिए वह अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए उसने रमाकान्त जी के प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया और डी.ए.वी. स्कूल के हेडमास्टर के रूप में प्रतिष्ठित हो गये। वह व्यक्ति का कालान्तर में आर्य जगत् में पण्डित गंगाप्रसाद उपाध्याय के नाम से प्रख्यात हो गये।

पण्डित गंगाप्रसाद उपाध्याय ने बड़ी दूरदर्शिता से विद्यालय के उन्नयन के लिए भगीरथ प्रयत्न किया। उस समय मीरापुर एक छोटा सा गांव था उसके पास दरियाबाद अटाला आदि मुसलमानों की बड़ी बस्ती थी। विद्यालय के पास भूमि थी किन्तु बढ़ते हुए कक्षाओं के लिए आर्य पुरुषों के साथ धन संग्रह करके विद्यालय भवन का निर्माण कराया। जैसे स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने दो पुत्रों हरिशचन्द्र और इन्द्र को गुरुकुल में रखकर उन्हें पढ़ाया और उनकी गणना आर्य समाज के उच्चकोटि के विद्वानों में हुई। इसी प्रकार पण्डित जी ने अपने पुत्रों सत्यप्रकाश, विश्वप्रकाश, श्रीप्रकाश और रविप्रकाश को अपने सानिध्य में रखकर डी.ए.वी. स्कूल में प्रारम्भिक शिक्षा प्रदान की। स्त्री आर्य समाज चौक, की प्रधान श्रीमती चन्दा देवी के पुत्र धर्मवीर और सालिगराम जायसवाल आदि को प्रारम्भिक शिक्षा डी.ए.वी. स्कूल में हुई। पण्डित जी ने अपने छात्रों को विद्यालय का शिक्षा के साथ-साथ देशभक्ति और धार्मिक संस्कारों से उन्हें अनुप्राणित कर दिया। कालान्तर में डॉ. सत्यप्रकाश इलाहाबाद विश्वविद्यालय में रसायन विज्ञान के विभागाध्यक्ष हुए। स्वतन्त्रता संग्राम में बढ़-चढ़कर भाग लिया और देश देशान्तर में ख्याति अर्जित की। विश्व प्रकाश, श्रीप्रकाश आदि पुत्रों ने आर्य समाज की महती सेवा। धर्मवीरजी धर्मवीर भारती नाम

www.thearyasamaj.org

से प्रख्यात हुए जिन्होंने धर्मयुग का सम्पादन दीर्घकाल तक किया और योग्यतम पत्रकार और साहित्यकार के रूप में ख्याति प्राप्त की। सालिगराम जायसवाल स्वतन्त्रता संग्राम में बढ़-चढ़कर भाग लिया और लम्बे काल तक जेल की यातना सही। देश के स्वतन्त्र होने के बाद उन्हें उत्तरप्रदेश सरकार में स्वास्थ्य मंत्री बनाया गया। ऐसे अनेक उद्योगपति और विद्वान राष्ट्रसेवी उपाध्याय जी के शिष्य हुए जिनका उल्लेख करना, इस लघु लेख में सम्भव नहीं है।

पण्डित गंगाप्रसाद उपाध्याय का प्रयाग आना प्रयाग के लिए ईश्वरीय वरदान था। उन्होंने विद्यालय के कार्यकाल में ही आर्य समाज के लिए हिन्दी अंग्रेजी, उर्दू में अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों की और समाज के सिद्धान्तों की पुष्टि के लिए लगभग दो सौ ट्रैक्ट सामयिक और सिद्धान्तों पर लिखे। आर्य समाज चौक का भव्य भवन और आर्य कन्या कॉलेज उन्हीं की तपस्या और परिश्रम का सुपरिणाम है। इन भवनों के निर्माण में चाहे वह डी.ए.वी. स्कूल हो अथवा आर्य समाज चौक हो एक व्यक्ति का नाम उल्लेखनीय है जिसने बड़ी श्रद्धा और परिश्रम से मिस्त्री के रूप में काम किया उसका नाम है अब्दुल गफूर। उसका नाम आर्य समाज चौक के संगमरमर के पत्थर पर आज भी अंकित है।

श्रद्धेय पण्डित जी उच्च कोटि के विद्वान, वक्ता, एवं दूरदर्शी थे। उसके प्रमाण हेतु कुछ घटनाओं का उल्लेख आवश्यक है। स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों में मुसलमान बच्चों की संख्या कम ही थी। अध्यापकों में गुरुकुल वृन्दावन के स्नातक पण्डित बुद्धदेव शास्त्री, उपाध्याय जी के साले विद्याभूषण विभु कवि तथा एक मौलवी साहब भी थे। एक बार एक मौलवी साहब ने कहा कि मुसलमान भाईयों ने निश्चय किया है कि इस वर्ष ईद की नमाज विद्यालय में ही पढ़ेंगे। उनको मना करना कठिन था। पण्डित जी दूरदर्शी थे और अनुमति दे दिया और कहा कि आपकी मनाज की पंक्ति में मैं भी सम्मिलित होऊंगा। मौलवी साहब बहुत खुश हुए। दूसरे दिन मौलवी साहब ने आकर कहा कि हम लोगों ने विचार बदल दिया है इसलिए विद्यालय में नमाज नहीं पढ़ेंगे। स्थान परिवर्तन का कारण यह था कि कोई भी गैर मुस्लिम नमाज की पंक्ति में नहीं सम्मिलित हो सकता है। पण्डित जी ने मौलवी साहब से कहा कि मौलवी साहब हमारा आपका प्रेम है इसलिए आपको मना नहीं किया और यदि नमाज एक बार पढ़ जाती तो यह परम्परा बन जाती और उसको रोकना असम्भव होता।

इसी प्रकार आर्य कन्या कॉलेज में आर.एस.एस. की शाखा लगा करतीं थी। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में आर.एस.एस. और आर्यवीर दल में झगड़े हुए और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने आदेश दिया कि आर्य संस्थाओं में जहां भी आर.एस.एस. की शाखा लगती हो, रोक दिया जाये। आदेशानुसार आर्य कन्या कॉलेज में भी प्रतिबन्ध लगा दिया गया। तत्पश्चात आर.एस.एस. का एक प्रतिनिधिमण्डल पण्डित जी के पास गया और कहा कि हमारी शाखाएं १५, १६ वर्षों से कॉलेज में लगा करती थीं, किन्तु वर्तमान पदाधिकारियों ने उस पर रोक लगा दी है, कृपया आप हमारी शाखा के लिए अनुमति दिला दें। पण्डित जी ने कहा कि हमारे विद्यालय में १५ साल से शाखाएं लगती थी लेकिन अब रोक दिया गया है तो आप लोग हमको धन्यवाद देने आये हैं या शिकायत करने। उन लोगों ने कहा कि हम आपको धन्यवाद देने आये हैं, नमस्ते किया और चुपचाप चले गए। यह है पण्डित जी की दूरदर्शिता का प्रत्यक्ष उदाहरण।

एक बार समीप के एक स्कूल में एक जागूदर आया। हाईस्कूल के छात्रों ने अगले दिन जादूगर का खेल देखने की अनुमति माँगी। पण्डितजी ने मना कर दिया दूसरे दिन हाईस्कूल कक्षा का एक भी छात्र नहीं आया। पण्डित जी बड़े असमंजस में पड़ गये। इतने छात्रों को दण्ड देना कठिन है और चुपचाप रहना अनुशासन का भंग होना है। तीसरे दिन स्कूल खुला।

सभी छात्र अपनी कक्षा में डट गये पण्डित जी ने उस कक्षा के अध्यापकों को वहां जाने से मना कर दिया। दूसरे घण्टे के अध्यापक को भी ऐसा ही कह दिया। तीसरा घण्टा पण्डित जी का ही था। पण्डितजी बैठे रहे तब एक छात्र आया और विनती की कि आज कोई पढ़ाने नहीं आया है। पण्डित जी ने कहा जाओ–जाओ तुम लोगों को पढ़ना नहीं है। उसके जाते ही पूरी कक्षा के छात्र दु:खी होकर कहने लगे हमने गलती की है, हमने आपकी आज्ञा का उल्लंघन किया है। हम आपसे माफी मांगते हैं हम ऐसी गलती नहीं करेंगे और रोने लगे। पण्डित जी ने पुचकार के कहा, चलो बेटो, हम तुम्हें पढ़ाएंगे।

एक बार किसी उद्दण्ड छात्र को विद्यालय से निष्कासित कर दिया। वह उद्दण्ड और नेता था उसने स्कूल में हड़ताल करा दी और गेट पर खड़े हो करके न किसी विद्यार्थी को अन्दर जाने देते थे न किसी अध्यापक को। पण्डित जी गये तो उन्हें भी रोक दिया गया। अध्यापक लोग तो घर चले गये और पण्डित जी एक बजे तक गेट पर खड़े रहे। धूप कड़ी थी एक छात्र को देखा न गया। अन्दर से एक कुर्सी उठा लाया और कहा, गुरुजी इस पर बैठ जाइए। पण्डित जी ने कहा, बेटे कोई बात नहीं, तुम अपनी ड्यूटी करो, मैं अपनी ड्यूटी कर रहा हूं। पण्डित जी दस बजे से चार बजे तक खड़े रहे। इस घटना से विद्यार्थियों में विद्रोह हो गया और कहा कि हमारे गुरुजी धूप में खड़े रहे और हम देखते रहें यह बड़े लज्जा की बात है। तीन चार दिन के बाद हड़ताल असफल हो गई और विद्यार्थी पूर्ववत् कक्षा में आने लगे। उस उद्दण्ड नेता की एक भी न चलीं। पण्डित जी का कार्य ऐसा है कि सांप मरे लेकिन लाठी न टूटे।

पण्डित जी का कार्यकाल १९१८ से १९४० ई. तक रहा है। इस बीच में विद्यालय की बहुत उन्नति हुई। उनके बाद सत्याचरण शास्त्री प्रधानाध्यापक बने। उनका प्रशासन भी बहुत अच्छा रहा है। विद्यालय की सेवा के बाद शास्त्री जी ईस्टइण्डीज के हाई कमिश्नर बनाये गये। पण्डित जी के पोते डॉ. विमलेश ने भी कई वर्षों तक प्रधानाचार्य के रूप में विद्यालय की सेवा की।●

www.thearyasamaj.org

भारतीय लोकतन्त्र में राजनैतिक दलों की भूमिका

विश्वकर्मा कुल गौरव
- डॉ. लक्ष्मीनिधि 'अधिवक्ता'
निधि विहार, १७२, न्यू बराद्वारी,
पो. साकची, जमशेदपुर (झारखण्ड)
चलभाष: ९९३४५२१९५४

राजनीति शास्त्र के विशेषज्ञ बर्क ने राजनैतिक दल की परिभाषा दी है लोगों की एक ऐसी संस्था जो किसी सिद्धान्त विशेष को, जिसे संस्था के सभी सदस्य स्वीकार करते हैं, आधार बनाकर, अपने सम्मिलित प्रयत्न से राष्ट्रीय हितों के उन्नति के लिए संगठित होती है। इसका अर्थ यह है कि निश्चित राजनैतिक सिद्धांतों और स्पष्ट योजनाओं के अभाव में कोई भी संगठन, राजनीतिक दल नहीं कहला सकता।

आधुनिक लोकतन्त्र के सफल संचालन के लिए ही राजनैतिक दलों की आवश्यकता है, जिसके अभाव में सरकार, राजतन्त्र, कुलीन, तन्त्र या तानाशाही तन्त्र के हाथों में चली जायेगी। इसीलिए लोकतन्त्र की लाख शिकायतों के बावजूद हम लोकतन्त्र के पक्षधर हैं। हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि सैद्धांतिक तौर पर लोकतन्त्र में भले ही अनेकों गुण हैं मगर व्यवहार में इसमें अनेकों बुराईयां हैं।

यह आलोचना भी मानने योग्य है कि लोकतन्त्र में गुणों के बदले संख्या को महत्व दिया जाता है। लोकतन्त्र में खोपड़ियां गिनी जाती हैं। उनके अन्दर कितनी बुद्धि है, उसकी परख नहीं की जाती। लोकतन्त्र भीड़ का शासन है। उसमें बहुमत सर्वोपरि होता है। लोकतन्त्र में प्रभावपूर्ण उत्तरदायित्व का निर्धारण नहीं हो पाता।

लोकतन्त्र में एक बात और देखने में आती है कि कई बार अल्पमत के हाथ में सरकार चली जाती है। कोई भी दल जब बहुमत प्राप्त नहीं कर पाता तो विभिन्न राजनैतिक दल अपनी नीति सिद्धांत एवं कार्यक्रमों का परित्याग कर सत्ता के लिए गठबन्धन कर सरकार का गठन करते हैं जिनका उद्देश्य राष्ट्रीय नहीं होता। ऐसी सरकार राष्ट्रीय सरकार नहीं कहलाती।

देश पर जब कोई संकट आ जाता है तभी सभी राजनीतिक दल, अपने दलों से ऊपर उठकर राष्ट्रहित में एक संविद सरकार बनाते हैं, वह सरकार राष्ट्रीय कहलाती है। अभी जो सरकार बनती है- वह विभिन्न पार्टियों की मिली जुली सरकार होती है, जिसमें क्षेत्रीयता, संकीर्णता व स्वार्थ का वर्चस्व रहता है, राष्ट्रहित गौण हो जाता है। इस प्रकार की सरकार में राष्ट्र से ऊपर कुर्सी होती है, इसीलिए मंत्रिमंडल भानुमति का पिटारा बन जाता है।

मतदाता राष्ट्रीय मुद्दों और सामाजिक समस्याओं को छोड़कर, जाति, धर्म व सम्प्रदाय के आधार पर वोट देते हैं जो लोकतन्त्र के विरूद्ध की बात है। उसके कारण वैसे लोग जनप्रतिनिधि बन जाते हैं जो चरित्रहीन, अपराधी एवं अयोग्य होते हैं।

देवभूमि यह दिव्यभूमि है

प्रथम मानव की उत्पत्ति इस धरती पर
उसी देव भूमि तिब्बत पर
यह कैसा संहार।
अपने को कहे चीन बौद्ध
और बौद्धों को मारे
देखों कैसे लगा रहा है-
विश्व शान्ति के नारे।
सत्य-अहिंसा बौद्ध धर्म के
दर्शन का आधार
आज उसी पर, चीन को देखो
करता क्रूर प्रहार।
हैरत है, दुनियावाले सब,
देखें खड़े तमाशा
लेकिन विश्व मंच पर बोले
सभी बुद्ध की भाषा।
ऐ दुनिया के लोगों जागो
लाओ नया विहान
सभी धर्म कर रहे विश्व को
शान्ति का आह्वान।
तिब्बत को आजाद करो, तब,
यही चीन से बोलो
कब तक मौन रहोगे बोलो
अपना मुंह अब तो खोलो।।

- डॉ. लक्ष्मी निधि

आज जो लोकतन्त्र की तस्वीर हमारे सामने है, उसमें लूट-खसोट, भ्रष्टाचार, अपराध, भाई-भतीजावाद, सिद्धांत हीनता, नैतिकता विहीनता आदि अभिशापों का उदय हुआ है। आज जनप्रतिनिधि जनता की इच्छाओं का प्रतिनिधित्व नहीं करता। आजकल हम देखते हैं कि सरकार के संचालन और व्यवस्था में राजस्व का बहुत बड़ा हिस्सा खर्च हो जाता है। झूठे वादे और असत्य भाषण, जनप्रतिनिधि का आचरण बन गया है। जनप्रतिनिधि कोष का वे खुल्लम-खुल्ला दुरुपयोग करते हैं। हमारे जनप्रतिनिधि तानाशाही तथा सामन्तवादी का जीवन जीते हैं। वे कल तक कौड़ी-कौड़ी के मुहताज थे, आज नेता और मंत्री बनते ही अरबों-खरबों के मालिक बन जाते हैं।

लोकतन्त्र की आलोचनाओं का कोई अन्त नहीं है। ऐसी स्थिति में जिन दलों के हाथों में सरकार चलाने का दायित्व दिया जाता है, उन्हें चाहिए कि वे सरकार का संचालन और व्यवस्था इस प्रकार करें कि लोकतन्त्र के सिद्धांतों एवं नीतियों की मर्यादा की रक्षा हो सकें। हमारे देश में संसदीय लोकतन्त्र है, उसके लिए राजनीतिक दलों की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। दलगत शासन व्यवस्था की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि कार्यपालिका और व्यवस्थापिका के बीच सौहार्दपूर्ण तालमेल हो।

व्यवस्थापिका में जो दल सत्तारूढ़ होता है, उसी से कार्यपालिका का भी निर्माण होता है। इसीलिए जो राजनैतिक दल, जितना साफ चरित्र का होगा, जिसके पास जितना अच्छा सिद्धांत होगा, जितनी अच्छी नीति होगी, जितना अच्छा कार्यक्रम होगा, जिनके प्रतिनिधि जितने अधिक सक्षम होंगे, जिसकी दृष्टि जितनी व्यापक होगी, जिसका दृष्टिकोण जितना व्यापक होगा, वह दल उतनी ही अच्छी सरकार दे पायेगा।

यह सही है कि राज्यों और देश को राजनीतिक दल, समस्याओं के समाधान में अपना योगदान देते हैं मगर आजकल राजनीतिक दल, बैण्ड-पार्टी के समान बन गये हैं। उनका नीति

www.thearyasamaj.org

और सिद्धांत से कोई वास्ता नहीं रह गया है। राजनीतिक दल, मतदाताओं के सामने अपनी वैकल्पिक योजनाओं तथा प्रतिभाओं को पेश करने में असमर्थ हैं। वे जनता को झूठे नारों तथा झूठे सपनों में भुलाकर वोट लेते हैं।

यदि हमें अपने संसदीय लोकतन्त्र की रक्षा करनी है तो हमारे राजनीतिक दलों को, अपनी कुर्सी परस्त नीतियों का परित्याग करना होगा और सबल, स्वच्छ, सक्षम और स्थायी सरकार के गठन में अपनी अहम भूमिका निभानी होगी। हमारे देश में सुदृढ़ द्विदलीय व्यवस्था नहीं है। सफल तथा समर्थ लोकतन्त्र के लिए यह आवश्यक है।

भारत के संविधान में संशोधन कर द्विदलीय व्यवस्था की स्वीकृति दी जाये। एक दल जिसे बहुमत मिलेगा, वह सुदृढ़ सरकार निर्धारित समय तक चलावे और दूसरा दल, जनहित में वैकिल्पक व्यवस्था को जनता में प्रचारित करे। अब जनता के ऊपर है कि वह किस दल के हाथ में शासन की बागडोर देती है।

फ्रांस में भी बहुदलीय व्यवस्था असफल हुई है। इसीलिए यह आवश्यक है कि देश के समान विचारधारा वाले दल एक दूसरे के साथ मिल जायें। जब सरकार बनाने तथा मंत्री बनाने के लिए वे हाथ मिला सकते हैं तो कोई कारण नहीं है कि राष्ट्रहित में देश में, द्विदलीय व्यवस्था लागू करने में अपनी भूमिका का निर्वहन न करें। इसलिए लोकसभा को चाहिए कि इस दिशा में पहल करें क्योंकि संविधान संशोधन के बिना यह द्विदलीय व्यवस्था लागू नहीं हो सकेगी और इसके बिना लोकतन्त्र सुदृढ़ नहीं हो पाएगा।

लोकतन्त्र में राजनीतिक दलों का होना आवश्यक है। इसलिए राजनीतिक दलों के संगठन, उद्देश्य, संचालन व्यवस्था, पदाधिकारियों के अधिकार, पदाधिकारियों की संख्या, कोष संग्रह, आय-व्यय के विवरण और व्यवस्था, निर्वाचन में किसी अन्य दल से तालमेल पर प्रतिबन्ध, उम्मीदवारों के चयन में उम्र शिक्षा, सामाजिक और राजनीतिक सेवाओं का प्रमाण पत्र, शैक्षणिक योग्यता का प्रमाण पत्र, पुलिस से चरित्र प्रमाण पत्र लेना ताकि राजनीति में सजा प्राप्त और मुकदमा झेल रहे लोगों को उम्मीदवार नहीं बनाना, मूक-बधिर, अंधा एवं शारीरिक और मानसिक दृष्टि से विकलांग लोगों को चुनाव में उम्मीदवार के रूप में चयन के लिए अयोग्य घोषित करना निर्वाचन के दौरान पार्टी के विरुद्ध कार्य करना या ऐसा कार्य करना जो अनैतिक हो या दण्डनीय अपराध हो तो उसकी उम्मीदवारी रद्द करना, निर्वाचित होने के बाद निर्वाचित प्रतिनिधि द्वारा किये गये कार्य अनैतिक पाया जाये, दण्ड के योग्य हो तो ऐसे निर्वाचित सदस्यों की वापसी के लिए अथवा उसकी सदस्यता रद्द करने के लिए आवश्यक कार्यवाही करना जरूरी है। जिनके लिए राजनीतिक दल पंजीकरण अधिनियम बनाना आवश्यक है।

दल बदलने के पूर्व सम्बन्धित दल को रजिस्ट्री डाक से त्यागपत्र देने सम्बन्धी कारण सहित आवेदन देना होगा तथा उसके ऊपर यदि कोई बकाया हो तो उसका भुगतान करना होगा। उस दल से अनापत्ति पत्र लेकर ही वह व्यक्ति किसी दूसरे दल में जा सकता है। इसके अभाव में यदि किसी दल ने ऐसे व्यक्ति को अपने दल में शामिल कर लेता है या निर्वाचन में उम्मीदवार बना लेता है तो वह वैध नहीं होगा। इसका प्रावधान उपरोक्त अधिनियम में होना चाहिए।

दल बनाने के लिए नियम-कानून देश में नहीं है। जो चाहता है, जब चाहता है अपना दल खड़ा कर लेता है और दल में अपने नाते-रिश्तेदारों को भर लेता है। इसको कानूनी तौर पर अवैध घोषित किया जाना चाहिए। इसीलिए राजनीतिक दल संगठन-प्रबन्धन अधिनियम बनाने की आवश्यकता है। जिसे बड़ी कड़ाई से राजनीतिक दलों पर लागू किया जाना चाहिए।

इस बात का सख्त कानूनी प्रावधान होना चाहिए कि जो व्यक्ति सरकार में मंत्री या सरकार के किसी पद पर वैतनीक या अवैतिनिक या किसी मानदेय या भत्तों पर काम करते हों तो वह किसी पार्टी के किसी पद पर नहीं रह सकता। जैसे मुख्यमंत्री के पद पर हैं तो वह अपनी पार्टी के अध्यक्ष या किसी अन्य पद पर नहीं रह सकते।

एक बात की और हिदायत रखी जाये की एम.पी. और एम.एल.ए. या विधान परिषद् के तीन बार से अधिक न चुनाव लड़ सकते हैं और न उनका मनोनयन हो सकता है और न वे मंत्री पद पर नियुक्त हो सकते हैं और न किसी बोर्ड निगम या सरकारी संस्था में किसी पद पर नियुक्त हो सकते हैं। यह सरकारी या दलीय भ्रष्टाचार राजनीति और सरकार में बन्द होना चाहिए।

चुनाव आयोग पूर्णत: दन्तहीन एवं शक्तिहीन संस्था है। जिसके कारण आयोग तथा अपराधी लोगों को यह संस्था न चुनाव में रोक सकती है और न उसके उपर कोई कार्रवाई कर सकती है और न इसको किसी अपराध की सजा के रूप में इसके ऊपर कोई कार्रवाई कर सकती है। ऐसी स्थिति में लोकतन्त्र की छबि को दैदिव्यमान नहीं बनाया जा सकता है। इसीलिए चुनाव आयोग को धारदार संस्था के रूप में बहुत सी शक्तियां प्रदान कर इसे सशक्त और कारगर संस्था बनानी होगी, ताकि कोई भी राजनीतिक दल या नेता इससे भयभीत हो सके। यदि भारतीय लोकतन्त्र को भ्रष्ट तन्त्र तथा नेता तन्त्र से बचाना है तो राजनीति दलों पर पूर्ण नियंत्रण और निगरानी रखने के लिए उपरोक्त कानून बनाना आवश्यक है। ●

तिब्बत जन क्रान्ति दिवस की ५८वीं वर्षगांठ- १० मार्च २०१७

- नेहरू की अदूरदर्शी सोच के कारण तिब्बत को चीन ने २०वीं शताब्दी में तब गुलाम बना लिया जब अन्य गुलाम देश स्वतन्त्र हो रहे थे।
- १९४७ तक तिब्बत की टेलीग्राम, टेलीफोन और डाक सेवा भारत द्वारा संचालित की जाती थी। नेहरू ने कीमत लेकर तीनों सेवाएं चीन को दे दी।
- नेहरू ने तिब्बत को चीन का स्वायत्तशासी राज्य मान लिया।
- १९५९ के प्रबल विरोध में १२ लाख तिब्बती मारे गए।
- मुस्लिम बहुल सिकियांग - बौद्ध बहुल तिब्बत और ताइवान को आपस में मिलाकर साम्यवादी-विस्तार वादी चीन का मुकाबला करते रहना चाहिए।

इन्द्रदेव गुलाटी-सावरकर वाद प्रचार सभा,
बुलन्द शहर (उ.प्र.)
चलभाष- ०८९५८७७८४४३

www.thearyasamaj.org

परीक्षाएं आने वाली हैं आओ कुछ जाने

- ताराचन्द जांगिड-
२३ बी, सुभाष नगर
पाल रोड, जोधपुर (राज.)
चलभाष - ९७७२२१३०२०

प्यारे बच्चों,

हार्दिक शुभकामनाएं एवं शुभाशीष।

दो तीन महिनों के बाद आपको वार्षिक परीक्षायें देनी हैं अत: इस समय आपका पूरा ध्यान किताबों को पढ़ने व याद करने में ही लगा हुआ है। परीक्षा के सम्बन्ध में मैं कुछ सुझाव देना चाहूंगा।

१. सबसे पहले जितना हो सके प्रश्न पत्रों को स्वयं हल करने की कोशिश करें और विश्वास पैदा करें कि परीक्षा में ये सवाल मैं आसानी से सही कर दूंगा।

२. परीक्षा के एक दिन पूर्व जो अधूरे छूट गये हों, उन प्रश्नों से ध्यान हटाकर पुराने प्रश्न जो याद हैं, उन्हें ही वापिस दोहराया जावे।

३. परीक्षा के शुरू होने के समय के पन्द्रह बीस मिनट पहले परीक्षा हॉल में पहुंचने की कोशिश करें तथा एडमिशन कार्ड वगैरह की चैकिंग के बाद सही समय हॉल में अपना स्थान ग्रहण कर लेवें।

४. प्रश्न पत्र हाथ में आते ही, सर्वप्रथम सभी प्रश्नों को पढ़ लें और सबसे पहले वहीं प्रश्न हल करें जिस पर आपको पूरा भरोसा हो।

५. कितने प्रश्नों के उत्तर आपको देने हैं उन के सामने निशान लगा लें और पूरे समय को हर सवाल केलिए बांट लें। कम याद प्रश्नों के उत्तर को बाद में वरीयता दें।

६. प्रश्नों के उत्तर लिखते समय अपने ऊपर कोई दबाव महसूस नहीं करें और आत्मविश्वास रखें कि आप जो लिख रहे हैं वह सही है।

७. परीक्षा देते समय इधर-उधर छात्रों की तरफ देखा-देखी कर समय बर्बाद न करें।

८. अंतिम दस मिनट सभी प्रश्नों के उत्तर एक बार दुबारा देखने के लिए रखें ताकि तय समय में सभी वांछित प्रश्नों के उत्तर दिये जा सकें।

९. पहली परीक्षा में कोई उत्तर गलत लिख दिया हो तो उसके लिए अफसोस न करें, बल्कि दूसरी परीक्षा में ज्यादा सतर्कता बरतें, ताकि पहली परीक्षा में की गई गलती दुबारा दूसरी परीक्षा में न हो।

१०वीं व १२वीं की परीक्षा देने के बाद आपके पास काफी समय बचता है उसे आप अपनी कमियों की तरफ झांकने की कोशिश करें और फिर उसे गर्मी की छुट्टियों में सुधारने की कोशिश करें, ताकि भविष्य में कोई परेशानी न हो। अगर इस उम्र में आपने सुधार नहीं किया तो आपको भी जिंदगीभर मुश्किलें झेलनी पड़ सकती है, जैसे मेरे अधीन कार्य कर चुके कनिष्ठ अभियन्ता को दु:खी होना पड़ा।

मैं जयपुर जिले के चौमू में विद्युत मण्डल में अधिशाषी अभियन्ता पद पर कार्यरत था, उस समय मेरे अधीन एक अग्रवाल कनिष्ठ अभियन्ता कार्यरत थे। उन्हें एक बार निमोनिया हो गया और बुखार से बुरी तरह जकड़ गये थे। मैं उन्हें देखने उनके निवास स्थान पर गया, तो उनकी पत्नी ने बताया कि इन्हें दस्त लग रहे हैं और बुखार भी तेज है, लेकिन हर बार शौच जाने के बाद ये स्नान करते हैं इन्हें आप समझावें। उस कनिष्ठ अभियन्ता ने बताया कि बचपन में मेरी माताजी हर बार शौच के बाद नहाती थी और वह आदत दसवीं, बारहवीं परीक्षायें उत्तीर्ण करने के बाद भी नहीं सुधरी। अत: यह मेरी आदत में शुमार हो गया है और इस वजह से हर बार शौच के बाद स्नान करना मेरी जिन्दगी का हिस्सा बन गया है।

इसलिए प्यारे बच्चों, यदि इसी तरह की कोई आदत आपने पाल रखी हो तो सही समय में आप इस तरह की गलत आदतों को छोड़ सकते हैं।

(परम पिता परमात्मा प्रत्येक मनुष्य के अन्तरमन में वास करता है तथा अच्छे कार्यों में सहायता करता है। प्रतिदिन प्रात:काल तथा सायंकाल गायत्री महायज्ञ का जाप करें तथा परमात्मा के निज मुख्य नाम ओ३म् को सदैव स्मृति में रखें। इससे आपके मन में एकाग्रता आवेगी तथा आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा। जो आपको सफल व्यक्ति के रूप में स्थापित करने के लिए सहायक होगा। परीक्षा के पश्चात् अपने खाली समय का उपयोग वैदिक साहित्य के अध्ययन लगावे। - सम्पादक)

दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ द्वारा वैदिक धर्म प्रचार कार्य को और ज्यादा विस्तार देने के उद्देश्य से नवीन परियोजना की प्रस्तुति

दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट की प्रथम बैठक

दिनांक ०१ अप्रैल २०१७

वैदिक योग विद्या द्वारा ईश्वर साक्षात्कार करने और करवाने वाले जिज्ञासुओं को संगठित कर कार्य को इस प्रकार विस्तारित किया जावे कि इस वैदिक योग विद्या का लाभ संसार के अधिक से अधिक लोगों को प्राप्त हो सकें। इसके लिए विविध लक्ष्यों को लेकर **दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट** का गठन किया गया। इस संगठन की प्रथम बैठक १/४/२०१७ को दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन रोजड़ पर रखी गई है। इस बैठक में ट्रस्ट के कार्यों को सुनियोजित रूप से गति एवं विस्तार देने हेतु सेवाभावी एवं समर्पित आर्यों की उनकी योग्यतानुसार विद्या परिषद्, प्रबंध परिषद तथा वैभव परिषद् नाम से परिषदों व समितियों का निर्माण किया जाना प्रस्तावित है। अत: वैदिक योग विद्या के प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित सक्षम, सेवाभावी, आर्यों से अनुरोध है कि इस महती बैठक में भाग लें अथवा सम्पर्क कर अपने योगदान से ट्रस्ट अधिकारियों को अवगत करवाए। वैदिक योग विद्या के प्रचार-प्रसार के इच्छुक समस्त आर्यजन इस बैठक हेतु सादर आमंत्रित है। **-निवेदक ट्रस्टी गण, दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट, आर्यवन- रोजड़, जिला-साबरकांठा फोन -०२७७०-२८७४१८, २८७५१८ मो. ९४०९४१५०११, ९४०९४१५०१७**

www.thearyasamaj.org

वैदिक धर्म की दशा-दिशा पर एक चिन्तन विदेशी धरा से...

रास अल खेमा, यू.ए.ई., २१ जनवरी २०१७

समादरणीय श्रीयुत, सादर नमस्ते

- **ईश्वरकृपयात्र कुशलं तत्रापि भवतु।**

ध्यान, अध्यापन, शंका समाधान आदि के रूप में वैदिक धर्म प्रचारार्थ २१ जनवरी २०१७ को दुबई पहुंचा। यह मेरी २६वीं प्रचार यात्रा है। देश-विदेश, जहां कहीं पर भी जाता हूँ, प्रायः सर्वत्र आर्य सज्जनों के द्वारा, (विशेषकर युवक) एक प्रश्न प्रमुखता से उपस्थित किया जाता है कि सत्य सनातन, ईश्वरीय-धर्म, संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा, आचार-विचार एवं आदर्श परम्पराओं का समाज राष्ट्र, विश्व में प्रचार-प्रसार क्यों नहीं हो रहा है? आज देश में हजारों की संख्या में आर्य समाज हैं, विद्यालय, गुरुकुल, आश्रम तथा अन्य संस्थान हैं, जिनमें यज्ञ-संध्या, सत्संग, स्वाध्याय, भजन, प्रवचन, कथा, शिविर, समारोह, उत्सव, संगोष्ठी आदि सम्पन्न होते हैं, इन सबसे व्यक्तिगत, पारिवारिक लाभ तो अवश्य होते हैं, किन्तु समाज, राष्ट्र के अन्य (वैदिक धर्म से अपरिचित) व्यक्तियों को इनसे लाभ नहीं होता है या अति न्यून होता है। हम आर्यों का सब कुछ श्रेष्ठ, महान, आदर्श होते हुए भी हम बढ़ नहीं पा रहे हैं। लोग वैदिक धर्म की ओर आकृष्ट नहीं हो पा रहे हैं।

वैदिक धर्म सार्वभौमिक, सर्वकालीन, सर्वजनीन होते हुए भी हम इसे फैला क्यों नहीं पा रहे हैं? शास्त्रकार, ऋषियों ने लिखा है कि "**सत्य मेव जयते नानृतम्** " किन्तु वर्तमान में तो स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है कि सत्य, असत्य से पराजित हो रहा है, श्रेष्ठ, निकृष्ट से दब रहा है, उत्तम, घटिया से पिछड़ रहा है, आदर्श; अनादर्श से अभिभूत हो रहा है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह के सिद्धान्त अब या तो पुस्तकों में ही शोभा दे रहे हैं या फिर मंच पर विद्वानों का प्रवचन का विषय रह गये हैं। सामान्य मनुष्यों की तो यह मानसिकता बन गई है कि बिना झूठ, छल, कपट, छद्म, अन्याय के तो जीवित रहना भी संभव नहीं है। समाज राष्ट्र में यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि छली, कपटी, अन्यायी,, शोषक, धूर्त-चालाक, छद्मी व्यक्ति बड़े ठाठ से, सुख सुविधा वाले साधनों के साथ गर्व के साथ जी रहे हैं और सत्यावादी, आदर्श, धर्म परायण सज्जन लोगों को अनेक प्रकार के अभावों, अन्यायों, अत्याचारों, बाधाओं, कष्टों के कारण दुःखमय जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है। इस स्थिति के कारण भी जन सामान्य में सत्य, धर्म, आदर्शों के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न हो गई है।

इस प्रश्न का उत्तर यह है कि हमारे पास ईश्वर, ज्ञान, सिद्धान्त, कर्म, उपासना, शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता, आचार-विचार आदि समस्त विषय का विज्ञान श्रेष्ठ होते हुए भी इसके प्रचार-प्रसार में जिन साधनों, सुविधाओं, बुद्धि, साहस, बल, पराक्रम, त्याग, तप, लगन, सहनशक्ति, धैर्य, निष्कामता की नितान्त अपेक्षा है। उनका अभाव है, न्यूनता है। मात्र धनैश्वर्य-सुख-सुविधाओं के विपुल तथा उत्कृष्ट हो जाने से कोई धनिक नहीं बन जाता, जब तक समाज राष्ट्र के विपन्न जन समुदाय के लिए उनका त्याग पूर्वक सदुपयोग न करे। बलिष्ठ, वीर्यवान की संज्ञा, वही प्राप्त करने का अधिकारी है जो मात्र शक्ति, सौष्ठव, वृहदाकार का आधिक्य ही न रखता हो, बल्कि अपने बल, साहस, पराक्रम, उत्साह, प्रगल्भता का प्रयोग निर्बल, प्रताड़ित, शोषित, अन्याय से ग्रस्त दुःखित व्यक्तियों की रक्षा के लिए करे। सच्चा विद्वान वही है जो समाज राष्ट्र में प्रचलित अज्ञान, असत्य पाखण्ड, अन्धविश्वास को नष्ट करने के लिए साहस, निर्भिकता के साथ परम पुरुषार्थ करे, इस कार्य के करते हुए मृत्यु भी आ जावे तो घबरायें नहीं।

- हमें यह बात अच्छी प्रकार से मन में रखनी चाहिए कि स्वामी दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना केवल वहां जाकर व्यक्तिगत व पारिवारिक जीवन के श्रेष्ठ, उन्नत बनाने के लिए नहीं की है, बल्कि इसके माध्यम से न केवल राष्ट्र बल्कि समस्त विश्व को भी श्रेष्ठ बनाने के लिए की है। साप्ताहिक सत्संग के कार्य तो हम घर पर भी करते हैं, करने चाहिए। समाजों में तो आर्य सभासदों को समाज, राष्ट्र में से मांसाहार, मद्यपान, द्यूत, व्याभिचार, नास्तिकता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, रिश्वत, झूठ, छल, कपट, अन्याय, अत्याचार, जैसी बुराइयों को कैसे निर्मूल किया जाए और इसके लिए कौन, कितना, किस प्रकार का तन-मन-धन-समय-बुद्धि का पूर्ण निष्ठा, श्रद्धा, विश्वास, निष्कामतापूर्वक सहयोग करेगा यह सब मिल बैठकर सुनिश्चित करना चाहिए। स्मरण रहे कि सत्य की धर्म की, आदर्श की जीत स्वतः नहीं होती, बल्कि उसे पूर्ण संगठित होकर, योजनाबद्ध रूप से पूर्ण-पुरुषार्थ-घोर-तपस्या- आत्मविश्वास तथा ईश्वर की सहायता से जीताया जाता है।

-हे देवाधिदेव महादेव! हम वेदानुयायी, ऋषिभक्त, याज्ञिक, ध्यानी, स्वाध्यायशील, आचार्य, प्रचारक, अधिकारी, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी संन्यासी सभी आर्यों के समक्ष ये अधर्मी, विधर्मी, कुधर्मी, दैत्य, पिशाच, असुर, नास्तिक, अपने आतंक से समाज- राष्ट्र-विश्व को नरकमय बनाये जा रहे हैं और हम हाथ पर हाथ रखे, मूक बन कर, मात्र मन मसोसकर इनको निहार रहे हैं। कुछ भी नहीं कर पा रहे हैं। हे अन्तर्यामिन दयानिधान। वेद ज्ञान को समग्र विश्व में प्रसारित-प्रचरित करने हेतु हमें विपुल शक्ति, अदम्य साहस, अटूट-विश्वास, अचल पराक्रम, उत्कृष्ट उत्साह प्रदान करो। जिससे हम मात्र घर या समाज मंदिर में यज्ञ, संध्या-स्वाध्याय-सत्संग-भजन तक ही सन्तुष्ट न रहें, बल्कि अत्यन्त साहसिक, विशिष्ट क्रान्तिकारी कार्यों का सुसम्पादन करें, यह उद्योग आपके सहाय के बिना असंभव है। हमें पूर्ण विश्वास व आशा है कि आप शीघ्र, अवश्य ही हमारे में वीर्य-ओज-बल प्रदान करके, कार्यों के सम्पादन करने में हमें समर्थ बनाएंगे।

सबका शुभेच्छु-**ज्ञानेश्वरार्यः**
वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन्, रोजड़
जनपद- साबरकांठा, गुजरात

www.thearyasamaj.org

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर अप्रैल २०१७

आवेदन पत्र

सेवा में,

व्यवस्थापक जी,
क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर,
वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़

मान्यवर,

सादर नमस्ते!

नम्र निवेदन है कि मैं आर्य वन, रोजड़ में ०२ अप्रैल से ०९ अप्रैल २०१७ तक आयोजित क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर में भाग लेना चाहता/चाहती हूं। मैं शिविर सम्बन्धी नियमों तथा अनुशासन का पूर्णरूप से पालन करूंगा/करूंगी। कृपया मुझे शिविरार्थी के रूप में भाग लेने की अनुमति प्रदान करें। मेरा विवरण निम्नलिखित है।

१. नाम		
२. पिता/पति का नाम		
३. जन्मतिथि/आयु		
४. शिक्षा		
५. व्यवसाय		
६. घर का पता		
७. सम्पर्क फोन नं.	मो. नं.	ईमेल
८. यहां शिविर में पहले कितनी बार और कब भाग ले चुके हैं?		
९ इस शिविर में आने की प्रेरणा किससे मिली? (प्रेरक का नाम)		

स्थान :-

दिनांक :-

शिविरार्थी के हस्ताक्षर

उपरोक्त आवेदन पत्र की फोटोकॉपी भी उपयोग की जा सकती है।

पत्र व्यवहार का पता

वानप्रस्थ साधक आश्रम

आर्यवन, रोजड़, पत्रा.-सागपुर, जि.- साबरकांठा (गुजरात) ३८३३०७
दूरभाष :- (०२७७०) २८७४१७, २९१५५५, ९४२७०५९५५०
Email.-vaanaprastharojad@gmail.com, Web: wwwvaanaprastharojad.org

आवश्यक सूचना एवं नियम पृष्ठ ३८ पर देखें

www.thearyasamaj.org

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर अप्रैल २०१७

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्य वन, रोजड़, गुजरात

आवश्यक सूचनाएँ तथा नियमावली

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में चैत्र शु. ६ से चैत्र शु. १३वि.सं. २०७४ तद्नुसार ०२ अप्रैल से -०९ अप्रैल २०१७ तक ८ दिन के क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसमें आपका स्वागत है तथा आपके कल्याण की कामना करते हैं। शिविरार्थी ०२ अप्रैल को सायंकाल ४ बजे तक शिविर स्थल पर पहुंच जावें। शिविर समापन ०९ अप्रैल को मध्याह्न लगभग १ बजे होगा।

शिविर में क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ-साथ योग दर्शन के सूत्रों का अध्यापन यम-नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक, वैराग्य, अभ्यास, जप-विधि, ईश्वर समर्पण, स्वस्वामी सम्बन्ध तथा ममत्व को हटाने जैसे अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया जाएगा। शिविर की दिनचर्या प्रातः ४ बजे से रात्रि ९.३० बजे तक रहेगी। शिविर में भाग लेने वाले व्यक्ति के लिए आवश्यक नियम-

(१) विशेष कक्षाओं को छोड़ करके शिविरार्थियों को दिनभर मौन का पालन करना होगा।

(२) पंजीकरण की स्वीकृति होने पर आपको भेजा जाने वाला शिविर प्रवेश पत्र साथ में लायें। अन्यथा शिविर में स्थान आरक्षित नहीं माना जाएगा। २० मार्च तक पंजीकरण करवाने वाले शिविरार्थियों के लिए शिविर शुल्क १५०० रुपए है। १ अप्रैल तक पंजीकरण करवाने वालों को २००० रु. देना होगा तथा इसके पश्चात् पंजीकरण कराने वालों को ३००० रु. देना होगा।

(३) रोगी, अशक्त, वृद्ध, धूम्रपान आदि व्यसनों वाले व्यक्ति कृपया शिविर में भाग लेने के लिए आवेदन न करें।

(४) स्थानाभाव, अयोग्यता अथवा अन्य किसी कारण से प्रवेश न देने की स्थिति में शिविर शुल्क १५०० रुपए लौटा दिया जाएगा। स्वीकृति प्राप्त शिविरार्थियों के न आने पर शुल्क लौटाया नहीं जाएगा।

(५) कम से कम १० (दसवीं) कक्षा तक की योग्यता हो तथा पूर्ण अनुशासन में चलने वाला तथा तपस्वी हो।

(६) १५ से ५०वर्ष आयु वाले पठित और नए व्यक्तियों को शिविर में भाग लेने के लिए प्राथमिकता दी जाएगी।

(७) दूर से आने वाले शिविरार्थी अपना वापसी का रेल आरक्षण पूर्व ही करा लेवें।

(८) शिविरार्थियों को शिविर काल में चलभाष (मोबाइल) करने की अनुमति नहीं मिलेगी, चलभाष कार्यालय में जमा करवाना पड़ेगा, यदि किसी को बहुत आवश्यक होगा तो कार्यालय से फोन कर सकेंगे।

(९) आवास व्यवस्था की कमी आदि अनेक कारणों से शिविरार्थी सीमित संख्या में लिए जाएंगे तथा प्रथम आवेदकों को प्राथमिकता दी जाएगी। पुरुष और महिलाओं की पृथक एवं सामूहिक आवास व्यवस्था होगी।

(१०) जो शिविरार्थी आर्थिक कठिनाई के कारण शुल्क देने में असमर्थ होंगे उनके आवेदन करने पर योग्य जानकर शुल्क में आंशिक या पूर्ण छूट दी जा सकती है।

(११) शिविरार्थी ०२ अप्रैल को प्रातः ९ बजे से सायंकाल ४ बजे तक शिविर स्थल पर पहुंच जावें। कृपया इससे पूर्व व पश्चात् न पहुंचे। ऐसा करने से व्यवस्था में बाधा उत्पन्न होती है। अनुशासन को दृष्टिगत रखते हुए शिविर में अन्तिम दिन तक उपस्थित रहना होगा।

(१२) शिविरार्थी अपने साथ करदीपक (टॉर्च), पेन, नोटबुक आदि लावें। शिविर में प्रयोग हेतु सादे वस्त्र (सफेद अथवा पीले) लावें। छोटे बच्चे, कीमती सामान, रेडियो आदि अपने साथ न लावें।

(१३) शिविर काल में आश्रम परिसर से बाहर जाने का निषेध रहेगा, यदि आपको अपने घर पर अथवा परिजनों को रोजड़ पहुंचने की सूचना देनी हो तो प्रवेश से पहले ही दे देवें।

शिविर शुल्क १५०० रु. कृपया निम्न बैंक खाते में जमा करावें।

नाम: क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर, खाता क्र. १७९०१०००१८०५२

शाखा: बैंक ऑफ बड़ौदा, धनसुरा (जिला-अरवल्ली) IFSC No. BARBODHANSU

अहमदाबाद एस.टी. बस स्टैंड से धनसुरा, मोड़ासा की ओर जाने वाली बस में बैठकर रोजड़ गाँव उतरें। यहां से पुंसरी रोड पर लगभग डेढ़ किलो मीटर दूर आर्यवन है। अहमदाबाद से आर्यवन (रोजड़) लगभग ७० कि.मी. दूर है।

www.thearyasamaj.org

वैदिक सत्संग का भव्य आयोजन

दिनांक २८ से ३० मार्च २०१७ तक

नववर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर आर्य समाज बरखेड़ा पन्थ, तह.- मल्हारगढ़, जिला- मन्दसौर (म.प्र.) के द्वारा वैदिक सत्संग का भव्य आयोजन किया जा रहा है। उक्त आयोजन में गरिमामयी उपस्थिति हेतु आर्यजन सादर आमंत्रित हैं।

आमंत्रित विद्वान-कु. अंजलि आर्या- करनाल (हरियाणा)
पं. उपेन्द्र जी आर्य- चण्डीगढ़ (हरियाणा)
सम्पर्क- समरथमल पाटीदार (प्रधान) ९९०७८७३५७७
दिनेश कारपेण्टर (मन्त्री) ९४२५४४१५०७

आर्य समाज खेड़ा अफगान का ११९वां वार्षिकोत्सव एवं व्यक्तित्व विकास शिविर

दिनांक १-२ अप्रैल २०१७

आमंत्रित विद्वान-आचार्य सामदेव जी शास्त्री, अजमेर
श्री सुमित जी आर्य, भजनोपदेशक, लूढ़ी

आईये इस जीवन का लक्ष्य क्या है? हम अपने व्यक्तित्व का विकास कैसे करें? हमारी गौरवमयी संस्कृति क्या है? क्या ईश्वर है? इस ईश्वर की सच्ची आराधना कैसे करें? जीवन को अन्धविश्वासों से कैसे दूर रखें? क्या हमारे जीवन में आने वाले सुख-दुःख हमारे कर्मों के फल हैं? तनाव व क्रोधमुक्त, जीवन कैसे जीएं? आदि विषयों पर विद्वानों के सारगर्भित प्रवचनों एवं भजनों द्वारा मार्गदर्शन प्रदान किया जावेगा। अतः समस्त धर्मनिष्ठ जिज्ञासुजन इस पुनित अवसर पर सादर आमंत्रित हैं।

निवेदक - आर्य समाज खेड़ा अफगान
सम्पर्क - आदित्य प्रकाश गुप्त (प्रधान) ८४४५०४४९२२
अमित कुमार आर्य (मन्त्री) ९७५८१२५७७७

वैदिक यज्ञ एवं सत्संग

दिनांक ५ से ९ अप्रैल २०१७ तक

आर्य समाज खाटसूर, जिला-शाजापुर (म.प्र.) के वार्षिकोत्सव पर आयोजित आयोजन में समस्त धर्मनिष्ठजन सादर आमंत्रित हैं।

आमंत्रित विद्वान-पं. नरेशदत्त जी आर्य, बिजनौर (उ.प्र.)
पं. काशीरामजी अनल, कानड़ (म.प्र.)
निवेदक- आर्य समाज, खाटसूर
सम्पर्क- सीताराम आर्य (प्रधान) ९९२६०८६३८७

योग-ध्यान, साधना शिविर

दिनांक ९ से १६ अप्रैल-२०१७ तक

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी की अध्यक्षता एवं पूज्य मां सत्यप्रियायतिजी के सान्निध्य में दिनांक ९ से १६ अप्रैल-२०१७ तक निःशुल्क योग-ध्यान, साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जाएंगे। तथा उपनिषद्-पठन-पाठन की भी व्यवस्था है। शिविर में रोजड़, गुजरात से शिक्षित ब्र. सत्यप्रकाश नैष्ठिक जी, वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। इस अवसर पर पूज्य महात्माजी के ब्रह्मत्व में प्रतिवर्ष की भान्ति सामवेद पारायण-यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम में पूज्य महात्माजी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है अतः इच्छुक साधक अपना स्थान शीघ्र आरक्षित करें।

सम्पर्क-०९४१९१०७७८८ व ०९४१९१९८४५१ पर तुरन्त सम्पर्क करें।

आर्य समाज रेवाड़ी का वार्षिकोत्सव

दिनांक ८-९ अप्रैल २०१७

लगभग शतायु अवस्था को पूर्ण करने की ओर अग्रसर आर्य समाज रेवाड़ी (हरियाणा) का वार्षिकोत्सव दिनांक ८-९ अप्रैल २०१७ को हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। समस्त आर्यजन सादर आमंत्रित हैं।

आमंत्रित विद्वान- आ. विजयपालजी झज्जर
युवा संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, गुरुकुल झज्जर
प्रो. ओमकुमार जी.आर्य, रोहतक

सुश्री अंजलि आर्या करनाल तथा आर्य प्रतिनिधि सभा (दयानन्द मठ)। रोहतक के गणमान्य पदाधिकारी भी उपस्थित होंगे।

निवेदक-आर्य समाज रेवाड़ी, **सम्पर्क** देशराज आर्य-चलभाष ९४१६३३७६०९

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा सहारनपुर का निर्वाचन सम्पन्न

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, सहारनपुर का संगठनात्मक चुनाव सर्व सम्मति से सम्पन्न हुआ। आर्य समाज मन्दिर, जनक नगर में चुनाव अधिकारी डॉ. पूर्णचन्द शास्त्री की देखरेख में आयोजित चुनाव कार्यक्रम में आर्य विद्वान वीरेन्द्र शास्त्री जी को जिला प्रधान, अवनीश आर्य को जिला मन्त्री, विकास आर्य को जिला कोषाध्यक्ष, अभय सिंह एडवोकेट को ओडिटर, विपिन आर्य को पुस्तकालय अध्यक्ष तथा देवेन्द्र सैनी को वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं अनिल आर्य को कनिष्ठ उपाध्यक्ष बनाया गया है। इसके अलावा बेहट तहसील में विजय सैनी पत्रकार को प्रधान एवं सुशील सैनी को मंत्री तथा नकुड़ तहसील में संजीव राणा को प्रधान, भूपेन्द्र को मन्त्री एवं रामपुर मनिहारान में मा. श्याम सिंह को मन्त्री तथा देवबन्द तहसील में ईश्वरचन्द आर्य को प्रधान, वैद्य रामकृष्ण को मन्त्री बनाया गया है। इसके साथ ही जनपद की सभी समाजों के प्रधान अंतरंग सभा के सदस्य रहेंगे। तथा डॉ. पूर्णचंद शास्त्री, डॉ. ओ.पी. शर्मा अनुराग आर्य, अजब सिंह आर्य को संरक्षक बनाया गया है। मीडिया प्रभारी विजय सैनी व नसीब सिंह वर्मा को मनोनीत किया गया।

इस अवसर पर डॉ. हरिसिंह आर्य, सुनील शास्त्री, मा. जयपाल काम्बोज, शिवकुमार शास्त्री, धर्म सिंह आर्य भजनोपदेशक, राजेश आर्य नीरज आर्य, कोमल सिंह आर्य, भुल्लन सिंह आर्य, डॉ. सोमदत्त सैनी, डॉ. बीरसिंह भावुक, भोपाल काम्बोज, कंवरपाल सैनी, राजवीर एडवोकेट सहित अनेक आर्य प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

www.thearyasamaj.org

मकर संक्रान्ति पर्व सम्पन्न

मकर संक्रान्ति पर्व पर आर्य समाज खेड़ा अफगान सहारनपुर में सर्व प्रथम राकेशकुमार यज्ञमान द्वारा यज्ञ किया गया। इस अवसर पर आदित्य प्रकाश गुप्त प्रधान आर्य समाज ने कहा कि यह पर्व आदिकाल से मनाया जाता है। जितने काल में पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा पूरी करती है उसे एक सौर वर्ष कहते हैं। वर्तुलाकार पृथ्वी में बारह भाग अर्थात् बारह राशियां ज्योतिषियों द्वारा कल्पित की हुई है। उनके अलग-अलग बारह नाम हैं। जब पृथ्वी एक राशि से दूसरी राशि में जाती है उसे संक्रांति कहते हैं। सूर्य के उत्तर होने की अवधि को उत्तरायण कहते हैं। सूर्य के मकर राशि में प्रवेश से (संक्रान्ति) से उत्तरायण का आरम्भ होता है। उत्तरायण के आरम्भ दिवस को विशेष महत्व माना जाता है। मकर संक्रान्ति के अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है। ज्ञानी लोग अपने शरीर का त्याग अभिलाषा उत्तरायण में करते हैं। आजन्म ब्रह्मचारी भीष्म पितामह ने उसी उत्तरायण के आगमन पर शरशय्या पर इसके आगमन की प्रतीक्षा की थी। इस दिन तिल आदि पदार्थों का दान और तिल का लड्डू आदि पदार्थों का प्रयोग दरिद्रों को दान कर अन्य पदार्थों का दान करते हैं और इसे उत्तम मानते हैं। इस पर्व को विभिन्न नामों से लगभग पूरे देश में मनाया जाता है। रेवड़ी और खिचड़ी प्रसाद में बांटी गई। इस अवसर पर अमित आर्य ने भजन सुनाये, वीरेन्द्र कुमार, शशिकान्त, जुगमेन्द्र कुमार, विशाल सन्नी, राजेश कुमार आर्य, चरण सिंह, वैभव, सन्नी कुमार, कुंवर पाल सिंह, रामकुमार, गजब सिंह, सुमित कुमार, संजय कुमार, वेदभूषण गुप्त, सन्दीप कुमार, ब्रह्मसिंह, दीपेश कुमार, कर्मसिंह, अश्विनी कुमार आदि बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं रामकथा व वेदोपदेश सम्पन्न

आर्य समाज कुन्हाड़ी कोटा द्वारा ७ दिवसीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं संगीतमयी वाल्मीकि रामायण पर रामकथा व वेदोपदेश का आयोजन दिनांक ९ से १५ जनवरी २०१७ तक सम्पन्न हुआ।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य शिवदत्त जी पाण्डे गुरुकुल धनपतगंज सुल्तानपुर (उ.प्र.) व गुरुकुल के वेदपाठियों के द्वारा यज्ञ तथा ईश्वर की पूजा उपासना की वैदिक पद्धति, पंच महायज्ञ, दु:खों से मुक्ति के उपाय, मानव की उन्नति में सदाचार का महत्व, समाज में व्याप्त कुरुतियां एवं अन्धविश्वास, मानव के जीवन में संस्कारों का महत्व, महर्षि दयानन्द और आर्य समाज आदि विषयों पर वेदोपदेश सम्पन्न किया गया। वाल्मीकि रामायण पर संगीतमयी रामकथा आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. दिनेशदत्त आर्य (दिल्ली) व उनकी संगीत मण्डली द्वारा सम्पन्न की गई।

वेद के निम्न ७ विषयों पर आचार्य शिवदत्त पाण्डे ने बहुत ही अच्छे तरीके से वेदोपदेश देकर वेदरुपी ज्ञानगंगा का प्रवाह लोगों के दिलों में प्रवाहित किया। आर्य समाज के नियम सुनाने की प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें श्री मूलचन्द आर्य, कु. ऋचा गोस्वामी द्वारा ठीक प्रकार से आर्य समाज के नियमों को सुनाया गया, उन्हें पुरस्कृत किया गया।

पं. मदनमोहन जी आर्य गंगापुर सिटी वालों के बहुत ही खोजपूर्ण ओजस्वी व्याख्यान हुए जिसे सभी ने बहुत सराहा।

१५ जनवरी को दोप. २ बजे कार्यक्रम का समापन हुआ। समापन पर ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कोटा की सभी ७ आर्य समाजों के सदस्यों ने भाग लिया। श्रेष्ठ कार्यकर्ता श्री राजेन्द्र जी सक्सेना को २५ वर्षों से नियमित पूर्णिमा सत्संग का संयोजक रहने हेतु, रानी बहिनजी को वर्षों से नियमित यज्ञ करने हेतु, श्री उदय प्रकाश अस्थाना भीमगंजमण्डी आर्य समाज, श्री राधावल्लभ राठौर तलवण्डी आर्य समाज, श्री प्रेम सिंह परिहार रेलवे कॉलोनी आर्य समाज, श्री रामनारायण जी कुशवाह खेड़ा रसूलपुर आर्य समाज, श्री जी.सी. गुप्ता, श्री देवीशंकर शर्मा, श्री सत्यप्रकाश गुप्ता, श्री रामजीलाल बैरवा सभी तथा वार्ड पार्षद अनिल सुवालका एवं आयोजन की गरिमा को बढ़ाने वाले गणमान्य महानुभाव पं. मदन मोहन आर्य, आचार्य शिवदत्त पाण्डे, पं. दिनेशदत्त आर्य (भजनोपदेशक), नेत्रपाल (ढोलक वादक), प्रदीप जी (पियानो वाले), गुरुकुल के तीनों वेदपाठी, पं. वृद्धिचंद गोस्वामी, स्वामी विशेषानन्द जी, सोममुनि वानप्रस्थी आदि का यथा योग्य सम्मान किया गया।

पी.सी. मित्तल (प्रधान), डी.एल. आर्य (मन्त्री), नन्दकिशोर राठौर (उप प्रधान), राजेन्द्र सक्सेना, डी.पी. मिश्रा, जगदीश अध्यापक, सूरत सिंह, श्रीमती सरोज मित्तल, श्रीमती पुष्पा मिश्रा, श्रीमती सुनिता आर्य, श्रीमती ललिता राठौर, इन्द्रकुमार सक्सेना, मदनमोहन चतुर्वेदी, भीमराज महावर, अभिषेक मिश्रा, यतीन्द्र आर्य, स्वाती आर्य, पूजा आर्य आदि का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

स्वामी चेतनानन्द जी की २१वीं पुण्यतिथि समारोह पूर्वक सम्पन्न

शिवगंज। आर्ष जगत् के प्रख्यात संन्यासी स्वामी चेतनानन्द की २१वीं पुण्यतिथि यहां आर्य समाज परिसर में समारोह पूर्वक मनाते हुए उनके विचारों को मानव समाज के लिए पथ प्रदर्शक बताते हुए प्रचार-प्रसार का निर्णय किया गया। समारोह पंचायत समिति प्रधान जीवाराम आर्य के मुख्य आतिथ्य व स्वामी चेतनानन्द ट्रस्ट के ट्रस्टी कपूरचंद सुथार की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। सेवानिवृत्त व्याख्याता छोगाराम भाटी एवं राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री बतौर अतिथि उपस्थित थे।

समारोह में उपस्थित प्रबुद्ध लोगों को सम्बोधित करते हुए प्रधान आर्य ने कहा कि महापुरुषों व विद्वानों की पुण्यतिथि तथा जयंती बनाने का उद्देश्य ही केवल यह होता है कि उनके द्वारा मानव समाज को दिए गए संस्कार व मार्गदर्शन को उत्तरोत्तर पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया जाये। स्वामी चेतनानन्द जिनका जन्म नागौर कि धरती पर हुआ एवं कार्यक्षेत्र अहमदाबाद व शिवगंज, सुमेरपुर को बनाकर सन्यासी जीवन पर खरा उतर कर जो मनुष्यों को शिक्षा, स्वाध्याय, संस्कार, संस्कृति का ज्ञान दिया उसके लिए क्षेत्र उनका ऋणी रहेगा। आर्य ने कहा कि वैदिक संस्कृति भारत, भारतीयता व राष्ट्रवाद की द्योतक रही है तथा एकेश्वरवाद को सार्थक करने के लिए हमेशा सक्रिय रहा है।

समारोह में छोगाराम भाटी ने कहा कि आज वैदिक संस्कृति अगर इस क्षेत्र में पनप रही है तो उसके पीछे पुज्य संत स्वामी चेतनानन्द जी के कार्यों का परिणाम है। आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री हरदेव आर्य ने कहा कि वर्तमान समय में मनुष्य को वैदिक संस्कारों कि आवश्यकता है उसके लिए आर्य समाज व आर्य वीर दल को संयुक्त रूप से प्रयास करना चाहिए।

उन्होंने १९८० के बाद से चल रहे आर्य वीर दल व्यायामशाला से निकले युवाओं ने अपने कार्य क्षेत्र में उल्लेखनिय कार्य करते हुए विशिष्ट स्थान बनाए हैं। जो नयी पीढ़ी के लिए इस पाश्चात्य चकाचौंध में मार्गदर्शक

www.thearyasamaj.org

बन सकते हैं। उन्होंने व्यायामशाला से निकले राजनीतिक, शैक्षिक, बैंकिंग, चिकित्सा एवं सेना में चयनित व्यक्तियों की भी जानकारी दी।

समारोह में अतिथियों ने एम.बी.बी.एस. में चयनित आर्य वीर हितेष आर्य (कुमावत), उच्च न्यायालय में वकालात कर रहे एडवोकेट संजय पालीवाल व भारतीय जीवन बीमा निगम में चयनित विकास अधिकारी अशोक मीणा का अभिनन्दन कर महर्षि दयानन्द रचित सत्यार्थ प्रकाश प्रदान की गयी। इसी तरह स्वामी चेतनानन्द के जीवन पर तथा वैदिक रश्मि बौद्धिक प्रतियोगिता में प्रथम रही संतोष व द्वितीय स्थान पर रहे छात्र ओमप्रकाश तथा तृतीय पर संयुक्त रूप से विशाल छीपा व शारदा गहलोत को नकद पारितोषिक देकर सम्मानित किया गया। हाल ही में सांभर (जयपुर) में आयोजित प्रदेश के आर्यवीर दल शिविर में भाग लेकर उत्साहजनक स्थान प्राप्त करने वाले सुरेश सुथार, ओमप्रकाश आर्य व प्रदीप कुमार को प्रशस्ति पत्र वितरीत किए गये।

समारोह में आर्यवीर दल के जिला संचालक नरेश कुमावत, आर्य वीर दल प्रभारी पुरुषोत्तम आर्य, अरुण आर्य, गुणवन्त आर्य, आर्य समाज प्रधान मदन आर्य, श्री जितेन्द्र सिंह, मोहनलाल टेलर, आर्य बाल विद्या मंदिर प्रधानाचार्य रेणु मुद्गल, श्री कमलेश शर्मा, श्री देवीलाल, सैन, श्री बसन्त परमार, सुश्री रुबीना छीपा, श्री रणजीत कुमार, सचिन शास्त्री, शालिनी त्रिवेदी आदि गणमान्य उपस्थित रहे। अंत में वयोवृद्ध कपूरचंद जी सुथार ने सबका आभार प्रकट किया व कार्यक्रम समापन की घोषणा की।

दयानन्द कन्या विद्यालय में गणतन्त्र दिवस पर हुई रंगारंग प्रस्तुतियाँ

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय में मनाया गया। गणतन्त्र दिवस पर प्रो. (डॉ.) पुष्पा गुप्ता ने ध्वजारोहण किया, समारोह में श्री रामचन्द्र सोनी, श्रीमती (डॉ.) कोकिला गोयल, लायन्स क्लब, मेवाड़ गौरव की लायनेस अध्यक्षा श्रीमती चौधरी, श्री के.पी.सिंह, प्रो. वी.के. राजवंशी एवं प्रो. (डॉ.) योगेन्द्र कुमार गुप्ता विशिष्ट अतिथियों के रूप में उपस्थित हुए। इस अवसर पर विद्यालय की छात्राओं ने देशभक्ति से सराबोर लोकगीत, लोक नृत्य, नृत्य वाटिका, बुलबुल, शारीरिक प्रदर्शन एवं भारतीय गणतंत्र पर हिन्दी एवं अंग्रेजी में भाषण, आर्य समाज के नियम आदि प्रस्तुतियां दी।

राष्ट्रीय वैदिक वीरागंना दल द्वारा समृद्धि यज्ञ एवं संगोष्ठी सम्पन्न

जयपुर । परिवारों में समृद्धि मेधा बुद्धि से आती है। मनुष्य को मेधा बुद्धि की प्रप्ति यज्ञ से होती है। उक्त विचार वैदिक वीरांगना दल की राष्ट्रीय अध्यक्ष अनामिका शर्मा ने समृद्धि यज्ञ व संगोष्ठी में व्यक्त किए। वैदिक वीरांगना दल द्वारा आयोजित समारोह में संस्थान की संरक्षक श्रीमती दुर्गा शर्मा ने बताया कि नियमित यज्ञ करने से कई रोगों से मुक्ति मिलती है। यज्ञ से स्वयं के साथ-साथ आसपास रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को लाभ मिलता है। समारोह कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुकुट बिहारी और विशेष अतिथि कौशलाधीश मिश्र थे। इस अवसर पर कमलेश शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रमोद गांधी ने की। समारोह में समाजसेवी श्रीमती शालिनी माथुर तथा श्रीमती विद्या विजयवर्गीय उपस्थित रही। कार्यक्रम के दोरान पांच आदर्श परिवारों को सत्यार्थ प्रकाश व अन्य वैदिक साहित्य देकर सम्मानित किया गया।

आर्य समाज रावतभाटा का स्वर्ण जयंती समारोह सम्पन्न

आर्य समाज रावतभाटा का ५० वा वार्षिक उत्सव, दिनाक ११ व १२ फरवरी-२०१७ (शनिवार व रविवार) को स्वर्णजयंती समारोह के रूप में मनाया गया। इस दो दिवसीय कार्यक्रम में प्रात:काल डॉ.सुदर्शन सिंह ने योग शिविर व डॉ. एम. एल. परिहार ने वैकल्पिक चिकित्सा शिविर का संचाल न किया। आचार्य यशवीर के ब्रह्मत्व में गुरुकुल भुसावर की ब्रह्मचारिणियों एवं गुरुकुल मलारना के ब्रह्मचारियों ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। यज्ञोपरांत डॉ. हरीश चतुर्वेदी (चिकित्सा अधीक्षक) ने ध्वजारोहण किया। ध्वजगान के बाद बच्चों ने मंत्र पाठ व शंख ध्वनि से वातावरण गुंजायमान कर दिया। सभी विद्वानों, अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक मोहित कुमार शास्त्री (बिजनोर-उ.प्र.) ने इस कार्यक्रम में अमृतोपदेश देकर आर्य जनों को विमुग्ध कर दिया। भजनों व वेदमंत्रों के माध्यम से बताया कि परमात्मा को जाने बिना दुखों से नहीं छूट सकते। उपासना से जीवन में पवित्रता आती है, आयु विद्या, यश और बल बढ़ता है और व्यक्ति पहाड़ जैसे दु:ख को भी सहजता से झेल लेता है। भगवान कोई न कोई गुण हर व्यक्ति को देता है। किया कर्म निष्फल नहीं जाता व जीवन का कल्याण धर्म, यज्ञ और दान से होता है।

आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान आचार्य यशवीर (गुरुग्राम, हरियाणा) ने अपने उपदेश में यथा योग्य उपकार लेने को सही पूजा बताया और कहा की विद्या ग्रहण करने के लिये श्रवण, मनन, निदिध्यासन और साक्षात्कार आवश्यक है। इन्होंने बताया की यम-नियमों का पालन करने से उपासना का बीज अंकुरित होता है। स्वाध्याय कल्पवृक्ष है। मुमुक्षु बनना जीवन का प्रमुख लक्ष्य है। ब्रह्म विद्या का अभ्यास करना-करवाना सबसे बड़ा तप है। प्रत्याहार के प्रयोग से मन को जाना जा सकता है। सांसारिक सुखों में दु:ख मिला हुआ है लेकिन परमात्मा के आनन्द में दु:ख नहीं होता इसलिये मोक्ष में जीवात्मा शत-प्रतिशत सुख कि अनुभूति करता है। आचार्य जी ने बताया कि वानप्रस्थ की अवस्था के बाद भी मोहवश धर नहीं छोड़ना मानव के दु:खों का कारण है। वानप्रस्थि ही ज्ञानार्जन कर संन्यासी बन समाज में ज्ञान का प्रकाश करता है। आश्रम व्यवस्था का पालन न होना आर्यों की दुर्दशा व कमी का कारण है।

अयोध्या, फैजाबाद से आये आर्य समाज रावतभाटा के सबसे पुराने सदस्य श्री राममूर्ति शास्त्री ने आर्य समाज रावतभाटा के शैशवावस्था के संघषी का स्मरण किया। कोटा से पधारे अग्निमित्र शास्त्री ने बताया कि विश्व वेदज्ञान से दूर होता जा रहा है और पाखण्ड फैलता जा रहा है। स्वर्णजयंती वानप्रस्थ कि अवस्था है जिसे स्वाध्याय व मानव के उपकार में बितानी चाहिये। कार्यक्रम में राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री डा. सुधीर शर्मा, आर्य वीर दल के राष्ट्रीय संयोजक सत्यवीर जी, देवेन्द्र शास्त्री, आर्य मुनि (शाजापुर, म.प्र.), कमल आर्य (दिल्ली), आचार्य दिलखुश (मलारना, राज.), स्वामी शान्तानन्द (गुरुकुल सासनी) ने अपने संबोधन से आर्यजनों को उत्साह के साथ वैदिक ज्ञान के प्रचार में लग जाने का आग्रह किया। कार्यक्रम में जड़ी-बूटी प्रदर्शनी, विशाल वैदिक साहित्य प्रदर्शनी, विशाल शोभायात्रा, बाल सम्मेलन में विभिन्न विद्यालयों के छात्र/छात्राओं द्वारा वैदिक विचारों पर आधारित एकांकी नाट्य-वैतरिणी कि गाय, समूहगान, एकल भजन गायन व महिला सम्मलेन में छात्राओं ने वैदिक काल में नारी का सम्मान बताने वाली लघु नाटिका "**नारी सम्मान**" प्रस्तुत की।

www.thearyasamaj.org

इस अवसर पर कोटा, खेड़ा रसूलपुर, बेगूं, निम्बाहेडा, चित्तोड़गढ़ के आर्यों ने कार्यकर्म की शोभा बढ़ाई। परिचय सम्मेलन में विभिन्न आर्यसमाजों से पधारे आर्यों का आपस में परिचय करवाया गया व सभी को सम्मान पत्रक व स्मृति चिन्ह भेंट किया। इस अवसर पर ५० वर्षों कि उपलब्धि दर्शाने वाली भव्य स्मारिका का विमोचन किया गया। इस स्मारिका में स्वाध्यायप्रेमी आर्यों के लिये वेद, दर्शन, विज्ञान, स्वास्थ्य व पर्यावरण से सम्बंधित विभिन्न विषयों पर संग्रहणीय लेखों को प्रकाशित किया गया है। जो भी आर्यजन स्मारिका प्राप्त करना चाहते है वे मंत्री आर्य समाज रावतभाटा को पत्र लि खकर या फोन (०९४६२३१३७९७) द्वारा पता बताकर मँगा सकते है। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने मेहमानों के लिये भोजन, रहने कि व्यवस्था , व आर्य समाज कि साज सज्जा को सराहा। अथक परिश्रम व पूर्ण सर्मपण से इस स्वर्ण जयंती समारोह को सफल बनाने वाले मंत्री ओमप्रकाश आर्य व प्रधान नरदेव आर्य को पगड़ी व स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

श्री राधेमोहन जी गुप्त, इलाहाबाद नहीं रहे

आर्य जगत् के सेवाभावी, कर्मठ, समर्पित व्यक्तित्व के धनी पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के शिष्य तथा पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार समिति के संस्थापक श्री राधेमोहन जी गुप्त निवासी इलाहाबाद का ८८ वर्ष की आयु में अचानक दिनांक १८/२/२०१७ को निधन हो गया। आप आर्य समाज के समर्पित व्यक्तित्व थे। आपके मन में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के प्रति विशेष तड़प थी। आप लगभग १९५० में श्री विष्णुप्रसाद जी शर्मा (पांचाल) के सम्पर्क आने के बाद वैदिक धर्म सिद्धान्तों से जुड़े आपकी इलाहाबाद में मनोरम टेलरिंग के नाम से कपड़ों की सिलाई की दुकान थी। आपकी प्रेरणा से आपके छोटे भाई मदनमोहन दिव्य भी आर्य समाज को समर्पित हो गए। पिछले कुछ दिनों से आपका वैदिक संसार के प्रतिं विशेष स्नेह हो गया था। मृत्यु दिवस से मात्र तीन-चार दिन पूर्व वैदिक संसार के प्रकाशक श्री सुखदेव शर्मा से चलभाष पर वार्ताकर श्री उमाशंकर जी जायसवाल तथा श्री चन्द्रमोहन की शर्मा को वैदिक संसार का सदस्य बनाने की सूचना दी थी। आपके असामयिक निधन से आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति हुई है। आप अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती रामलली देवी व सुपुत्र श्री सत्यकाम गुप्त तथा श्री सत्यदेव की शास्त्री व सुपुत्री श्रीमती सुनीतादेवी तथा श्री विनीता देवी का भरा-पुरा परिवार छोड़ गए हैं।

श्री लालशंकर जी भारद्वाज, उदयपुर का निधन

अत्यन्त दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि वयोवृद्ध श्री भंवरलालजी भारद्वाज के पुत्र **श्री लालशंकरजी भारद्वाज** का दि. २५/११/२०१६ को दु:खद निधन हो गया है।

श्री लालशंकरजी भारद्वाज आगुचा माइन्स में माइनिंग इंजीनियर पद पर नियुक्त थे। आप समाज के कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में हसमुख सेवाभावी मिलनसार कर्त्तव्यनिष्ठ एवं धर्मपरायण व्यक्तित्व के धनि व्यक्ति थे। अस्वस्थ्यता के कारण ४९ वर्ष की अल्पायु में आपके दु:खद् निधन से जांगिड़ ब्राह्मण समाज ने एक सेवाभावी योग्य इजीनियर को सदैव के लिए खो दिया है। जिसकी पूर्ति असम्भव है। श्रद्धांजलि सभा में समाज के गणमान्य व्यक्तियों ने उपस्थित होकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

आप अपने पीछे वृद्ध पिता, चाचा-चाची, श्रीमती सारिका, चि. निखिल एवं श्रीमती प्रियंका पुत्र एवं पुत्रवधु चिं. विनय पुत्र भतीजा-भतीजी का भरापुरा भारद्वाज परिवार छोड़ गये। आपके तीये की बैठक से पूर्व एवं **शुद्धि दिवस पर आर्य समाज के पुरोहित पं. अनन्त देव शर्मा बरवाड़िया द्वारा शान्ति यज्ञ सम्पन्न किया गया।** परिजनों द्वारा वैदिक संसार को २०० रुपए दान स्वरूप भेंट किये गए।

डॉ. नितिन शर्मा, उदयपुर का दु:खद निधन

अत्यन्त दु:ख के साथ सूचि किया जाता है कि अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा प्रदेश सभा राजस्थान के उदयपुर जिलाध्यक्ष एवं उदयपुर विश्वकर्मा जांगिड़ विकास संस्था के संगठन सचिव एवं समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री रमेशचन्द्र शर्मा (बुड़ेनिया) के कनिष्ठ पुत्र **डॉ. नितिन शर्मा** का जीवन के लिए संघर्ष करते हुए दि. ८ दिसम्बर २०१६ को दु:खद निधन हो गया। बुड़ेनिया परिवार पिछले चार वर्षों से इस होनहार युवक के चिकित्सा उपक्रमों के लिये सदैव प्रयास रत रहा।

श्री नितिन शर्मा, हंसमुख, मृदुभाषी, सेवाभावी, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं धर्मपरायण व्यक्तित्व के नवयुवक थे। आपके अल्पायु में दु:खद निधन से जांगिड़ ब्राह्मण सभा में एक होनहार व शिक्षाविद् व्यक्ति को सदैव के लिये खो दिया है। जिसकी पूर्ति असम्भव है। आप अपने पीछे माता, पिता, पत्नी, एवं पुत्री एवं तीन भाइयों का भरापूरा बुड़ेनिया परिवार छोड़ गए। श्रद्धांजलि सभा में समाज के गणमान्य व्यक्तियों में उपस्थित होकर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। **अस्थि संचयन से शुद्धि दिवस तक प्रतिदिन पं. अनन्त देवशर्मा द्वारा यज्ञ सम्पन्न किया गया।**

श्री रामकृष्ण जी बजाज का निधन

झाबुआ व रतलाम के आदिवासी अंचल में आदिवासियों में फैले अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध समाज लोगों में जागृति फैलाने हेतु अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित करने वाले श्रद्धेय रामकृष्ण जी बजाज का ९७ वर्ष में देहांत दिनांक ३ फरवरी को हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक पद्धति से किया गया। अंत्येष्टि में बांसवाड़ा, सैलाना, कुशलगढ़, सरवन, बामनिया, पेटलावद, रतलाम से बड़ी संख्या में आर्य समाज के लोगों ने भाग लिया। आदिवासियों के बच्चों की शिक्षा तथा धर्मान्तरण से बचाने के लिए दयानन्द सेवाश्रम की स्थापना सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से थांदला में की तत्पश्चात उनके परिश्रम से क्षेत्र के अन्य स्थानों पर आश्रम स्थापित किये। पंजाब से आने पर रेलवे में स्टेशन मास्टर के पद पर नियुक्ति हुई। ड्यूटी पश्चात पैदल चलकर फलियों-फलियों में प्रचार कर शराब व मांस छोड़ने के लिए प्रेरित करते थे। इसके पश्चात् कभी भी ड्यूटी संबंधी कोई शिकायत अधिकारियों को नहीं रही। ड्यूटी पर इतने सजग रहे कि उनके सेवा काल में कोई रेल दुर्घटना नहीं हुई। रेलवे द्वारा इसके लिए उन्हें सम्मानित किया गया। आर्य समाज नगर एवं रेलवे कालोनी इन्दिरा नगर द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित कर दिवगंत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना प्रभु से की।

www.thearyasamaj.org

याज्ञिक परिवार सम्मेलन

आर्य जगत् के इतिहास में प्रथम बार दैनिक अथवा साप्ताहिक यज्ञ करने वाले याज्ञिक परिवारों का

सम्मेलन गुजरात तथा मुम्बई में किया जा चुका है। सम्मेलन में भाग लेने वाले दैनिक/साप्ताहिक याज्ञिक परिवारों को अनेक प्रकार की प्रेरणा प्रदान की गई तथा उन्हें प्रमाण पत्र, आकर्षक स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए। याज्ञिक परिवारों के द्वारा यज्ञ के विषय में अन्य लोगों को जानकारी देकर १० हजार से भी अधिक याज्ञिक परिवार बनाने का संकल्प किया गया तथा सैकड़ों की संख्या में यज्ञ कुण्ड, समीधा तथा हवन सामग्री व पुस्तकें आदि यज्ञ से सम्बन्धित सामान को अपने साथ ले जा चुके हैं।

श्रेष्ठता और सफलता शिविर

महाविद्यालयीन युवकों के लिए आयोजित तीन दिवसीय शिविर में ३१५ से अधिक शिविरार्थियों ने भाग लिया। उन्हें सफलता प्राप्ति के हेतु उपाय- बुद्धि, स्मृति, एकाग्रता की वृद्धि के दार्शनिक व आध्यात्मिक उपाय, शारीरिक व्यायाम, आसान, खेलकूद अनेक सामाजिक व धार्मिक विषयों में शंका समाधान, वेद परिचय, सात्विक मनोरंजन आदि विषयों का प्रशिक्षण दिया गया।
समाज, राष्ट्र और समग्र विश्व के विषयों में युवकों को बोध कराया गया। पढ़ाए गए विषयों की लिखित परीक्षा ली गई। सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्र को पांच हजार रुपए तद्न्तर दो हजार रुपए तथा एक हजार रुपए के पुरस्कार, प्रमाणपत्र व अन्य बीस छात्रों को पांच-पांच सौ के पुरस्कार दिये गए।

सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास शिविर

१६ से २५ वर्ष की महाविद्यालयीन छात्राओं हेतु सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास शिविर ग्रीष्म अवकाश में आयोजित किया गया। जिसमें सफलता की प्राप्ति हेतु उपाय- बुद्धि, स्मृति, एकाग्रता की वृद्धि के दार्शनिक व आध्यात्मिक उपाय, आसन, खेलकूल अनेक सामाजिक व धार्मिक विषयों में शंका समाधान, वेद परिचय, सात्विक मनोरंजन आदि विषयों के साथ पारिवारिक जीवन को सुखी-समृद्ध बनाने में वैदिक उपाय तथा स्वरक्षा के उपाय (कराटे) आदि का भी प्रशिक्षण दिया गया। लगभग ४०० कन्याओं ने शिविरार्थी के रूप में आयोजन का लाभ प्राप्त किया।

ओम्कार उपासक सम्मेलन

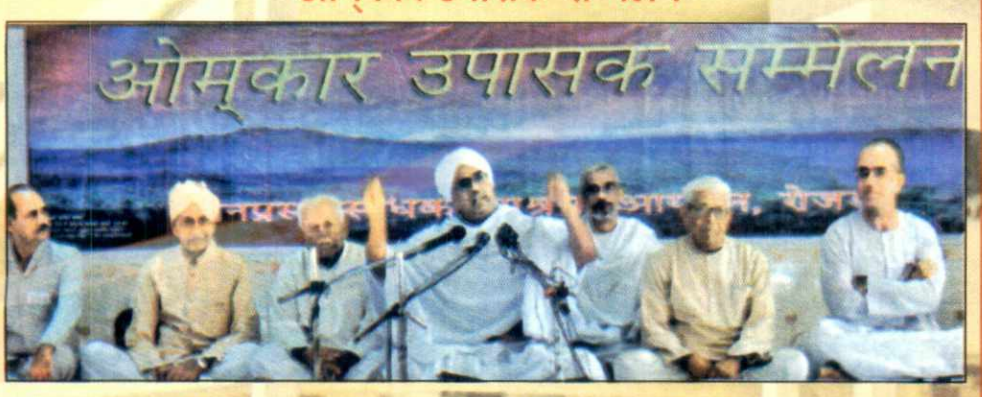

वृहद गुजरात के वैदिक पद्धति से निराकार ईश्वर की उपासना करने वाले, उपासक महानुभावों के एक दिवसीय उपासक सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमे लगभग १२०० व्यक्तियों ने भाग लिया। सम्मेलन में भाग लेने वाले सज्जनों को उपासना में उत्कृष्टता लाने हेतु मार्गदर्शन दिया गया तथा आकर्षक स्मृति चिन्ह के साथ वैदिक साहित्य प्रदान किया गया।

- विश्व के विभिन्न देशों में वैज्ञानिकों, रसायनविदों और बुद्धिजीवियों के द्वारा अग्निहोत्र के विषय में किए गए परीक्षण, परिणामों तथा प्रभावों की जानकारी दी जाती है।
- अग्निहोत्र करने हेतु प्रयोग में आने वाले विभिन्न आकार-प्रकार के यज्ञ कुण्डों, समीधाओं, सामग्रियों, घृत आदि समस्त वस्तुओं को अल्प मूल्य में उपलब्ध कराया जाता है।
- क्रियारूप में अग्निहोत्र करने हेतु सी.डी. डी.वी.डी. तथा यज्ञ से सम्बन्धित उत्पन्न होने वाली शंकाओं, जिज्ञासाओं से सम्बन्धित पुस्तक-पुस्तिकाएं उपलब्ध करायी जाती है।
प्रतिदिन क्रियात्मक अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र में नौ यज्ञ वेदियों पर ३६ परिवारों का एक साथ यज्ञ प्रशिक्षण किया जा सकेगा। एक दिन में तीन-तीन सत्रों का भी आयोजन किया जायेगा। इस प्रकार एक मास में सैकड़ों तथा एक वर्ष में हजारों की संख्या में याज्ञिक परिवारों का निर्माण किया जा सकेगा।
- इस केन्द्र के माध्यम से समय-समय पर यज्ञ परम्परा के प्रचार-प्रसार एवं विकास हेतु याज्ञिक परिवारों के सम्मेलनों का आयोजन किया जायेगा। साथ ही क्रियात्मक यज्ञ प्रशिक्षण की जानकारी दे करके यज्ञ प्रशिक्षकों को भी तैयार किया जाएगा।
- प्रशिक्षणार्थियों के लिए अग्निहोत्र केन्द्र में शुद्ध सात्विक अल्पाहार व्यवस्था होगी।
- केन्द्र का उद्घाटन विधिवत् सार्वजनिक रूप में विशाल स्तर पर सुसम्पन्न हो गया है।

वानप्रस्थ साधक आश्रम

आर्यवन, रोजड़, पोस्ट-सागपुर,
तालुका-तलोद, जिला- साबरकांठा,
गुजरात-३८३३०७
दूरभाष- ०२७७०-२८७४१७, २९१५५५,
चलभाष : ९४२७०-५९५५०

-Email-
vaanaprastharojad@gmail.com

-Web-
www.vaanaprastharojad.org

www.thearyasamaj.org

गो-आदि मूक प्राणियों के पालन-पोषण हेतु कार्य तथा सहयोग

आश्रम में मूक पक्षियों हेतु पक्षी घर का निर्माण किया जाकर उनके दाना पानी का समुचित प्रबन्ध किया गया है तथा अनेक गो-शालाओं को आश्रम की स्थापना से अब तक लाखों रुपयों का सहयोग किया गया तथा नवीन गो-शालाओं के प्रारम्भ करने हेतु प्रेरणा के साथ-साथ सहयोग भी प्रदान किया जा रहा है।

वृक्षारोपण

आश्रम के विस्तृत भू-भाग पर आम, पपीता, चिकू, सीताफल, आंवला, जामुन, नीम, पीपल आदि वृक्ष हजारों की संख्या में लगाए गए हैं। जिस कारण आश्रम का वातावरण रमणीय होकर पर्यावरण की रक्षा के साथ-साथ आश्रम पधारने वाले अतिथियों को वृक्षों के संरक्षण, संवर्धन की प्रेरणा प्राप्त होती है तथा यज्ञ आदि कार्यों हेतु समिधाओं की भी पूर्ति होती है। पूरा आश्रम एक प्राकृतिक प्राणीघर अर्थात् मूक प्राणियों के लिए पक्षी घर तथा मनुष्यों का वन प्रस्थ आश्रम है। जहां समस्त प्राणियों का शारीरिक-आत्मिक पालन-पोषण होता है।

विदेश में वैदिक धर्म प्रचार

मॉरिशस तथा नेपाल में आयोजित आर्य महासम्मेलनों में स्वामी सत्यपति जी के शिष्य वानप्रस्थ साधक आश्रम के प्रमुख न्यासी आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जी द्वारा उपस्थित होकर मार्गदर्शन दिया गया तथा अभी तक लगभग २६ विदेश यात्राओं के माध्यम से विश्व के अनेक देशों में आपने वैदिक धर्मप्रचार की दुदुम्भी बजाई है।

अन्य जनहितकारी सामाजिक कार्य

आश्रम द्वारा इन प्रकल्पों के अतिरिक्त अनेक सार्वजनिक कल्याणकारी कार्य भी समय-समय पर किये जाते रहे हैं तथा किये जा रहें हैं, जिनमें निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सालय, आर्ष प्रणाली से पढ़ने वाले

ब्रह्मचारियों को छात्रवृत्तियां, वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करने वाले विद्वानों का सत्कार, आर्थिक दृष्टि से विपन्न व्यक्तियों को अन्न, वस्त्र तथा अन्य साधनों से सहायता करना, अंत्येष्टि संस्कार हेतु घी, सामग्री, लकड़ी की निःशुल्क सहायता आदि अनेक सामाजिक कार्य हैं, जिनके लिये आश्रम सदैव तत्पर रहता है।

आश्रम द्वारा संचालित गतिविधियों को पूर्णतया शब्दों में समेटा जाना सम्भव नहीं है। इसके लिए प्रत्यक्ष आश्रम में उपस्थित होकर अवलोकन किया जाना आवश्यक है अतः समस्त धर्मनिष्ठ जिज्ञासुजन आश्रम में सपरिवार, मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं। कृपया पूर्व सूचना देकर आश्रम में अवश्य पधारें। अतिथियों के स्वागत हेतु आश्रम सदैव तत्पर है।

वैदिक आध्यात्मिक न्यास स्नेह सम्मेलन

महिला योग जागृति शिविर-जुलाई २०१६

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज कुन्हाड़ी (कोटा) में यजुर्वेद परायण यज्ञ व सत्संग सम्पन्न।

आर्य समाज खेड़ा अफगान पर मकर संक्रान्ति पर्व मनाया गया।

वैदिक वीरांगना दल जयपुर द्वारा समृद्धि यज्ञ व संगोष्ठी सम्पन्न।

दयानन्द कन्या विद्यालय हिरण मगरी द्वारा गणतन्त्र दिवस मनाया गया।

आर्य समाज रावतभाठा के स्वर्ण जयन्ती समारोह की चित्रावली

www.thearyasamaj.org

निगमनीडम् - वेदगुरुकुलम् द्वादश (12वां) वार्षिकोत्सव

आर्य समाज के इतिहास में प्रथम

अलौकिक दिव्य महायाग

श्रौतदर्शपूर्णमासेष्टि (शुष्केष्टि)

माघ कृष्ण ३०, रविवार, २६/०२/२०१७ प्रातः ८ से सायं ५ बजे तक

आयोजन स्थलः निगमनीडम्, दयानन्द मार्ग, पिडिचेड़, गज्वेल, सिद्धिपेट तेलंगाणा-५०२२७८

इदं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः (अथर्व. १९.५८.५)

इस यज्ञ को सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने वेदों द्वारा विस्तृत किया है। इस यज्ञ में सौमनस्य (सात्विक मनोभावों) को चाहने वाले एवं दिव्यता के इच्छुक सभी लोग आवे, हम आपका स्वागत करते हैं

निवेदक न्यासीगण

मुरली ब्रह्मचारी (संरक्षक), उदयनाचार्य (संस्थापक एवं अध्यक्ष), मड्डि रमणय्या (कोषाध्यक्ष), एम.मल्लय्या आर्य राविकण्टि रामदेव, मूलाराम चौधरी, आकुला विश्वेन्द्र आर्य, विश्वरूपम्, वेदायन, वीरभद्रय्या, सञ्जीव कुमार शर्मा, बुच्चन्नार्य, श्री हरि

सम्पर्क

७६६००२४, ७६६००६०७४९, ७०३६२६७८४४, ७०३६२६७५४५, ९९४९८१०९७५

Email: nigamaneedam@gmail.com, Website: www.nigama-needam.org.in

facebook: nigamaneedamvedagurukulam, Achara Udayana

प्रेषक

वैदिक संसार

12/3 संविद नगर-इन्दौर-452018 (म.प्र.)

सेवा में...